

दश 2021



संपादकीय बोर्ड



नाम बाएं से दाएं: डॉ. मुनीष कुमार (पंजाबी), प्रो. ललित मोहन (हिंदी), डॉ. छोटू राम मीणा (संपादक), प्रो. राजीव अग्रवाल (प्राचार्य), डॉ. नीलम बोरवांकर (सिंधी) डॉ. आशीष कुमार (संस्कृत), श्री शाश्वत भट्टाचार्य (अंग्रेजी), डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा (संस्कृत), डॉ. अंतरा चौधुरी (बांग्ला)

देश 2020-2021 संयुक्तांक

। j {kd
çkQd j jktho vxoky

। i knd
M,- NkVwjke eh.kk

mi &। i knd

प्रोफेसर ललित मोहन

श्री शाश्वत भट्टाचार्य

डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

डॉ. मुनीश कुमार

डॉ. अंतरा चौधुरी

डॉ. नीलम बोरवांकर

foHkkx

हिंदी

अंग्रेजी

संस्कृत

पंजाबी

बांग्ला

सिंधी

Nk=&। i knd

मधुवन प्रताप सिंह

शान कुमार

प्रजापतिज्ञा

शाज़िया तौफीक

रानु चटर्जी

रिया खुशलानी

of'od egkekjh dkjksuk ok; j। &19 ij dfaer

^nsk* if=dk vi us yskdk ds fopkjka dk vknj djrh gA
t: jh ugè fd og mul s l ger gkA

doj fMtkbu %vfod fclnw

Statement Under Cause 19-D

Place of Publication : Deshbandhu College, Kalkaji, New Delhi-110019.

Periodicity of Publication 01, Annual No. of Issue : 50-51

Printers Name : Parnasus Printers & Publishers

Nationality : Indian

Address : HS-30, Kailash Colony Market, New Delhi- 110048.

Publishers Name : Prof. Rajiv Aggarwal

Nationality : Indian

Address : Deshbandhu College, Kalkaji, New Delhi- 110019.

प्राचार्य की ओर से...



मानव सभ्यता पर संकट आता है तो जीवन की सभी गतिविधियाँ एक पल के लिए रुक जाती हैं, लेकिन मानव का स्वभाव रुकना नहीं है। वह फिर से चलने के लिए कुछ नये तरीके ईजाद भी कर लेता है। यह नया तरीका हमें कोरोना के वैश्विक प्रकोप में दिखाई दिया। सभी ने अपने लिये एक नये आभासी दुनिया का निर्माण करके अपने अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध बनाये रखा। हमारे महाविद्यालय की 'देश' पत्रिका भी इस प्रकोप से अछुती नहीं रही। फिर भी हमारे संपादक व संपादकीय टीम के लगातार प्रयास से हम इसे अपने पाठकों के बीच लाने में सफल हुए हैं।

पत्रिका का संपादन सामुहिक सहयोग की मांग करता है। इस सयुक्तांक के संपादक डॉ. छोटू राम मीणा के नेतृत्व में 'देश' पत्रिका का सफल एवं सार्थक संपादन संभव हुआ है। उन्होंने बहुत कम समय में देश की स्तरीय प्रस्तुति को संभव बनाया है, जो वाकई काबिलेतारीफ है। इसके लिए मैं उन्हें और उनकी पूरी टीम को तथा सहयोगी रचनाकारों को दिल से धन्यवाद देता हूँ।

'देश' बहुभाषी पत्रिका है। यह सयुक्त रूप से हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी, संस्कृत, बांग्ला और सिंधी भाषाओं में निकलती रही है। यह सभी भाषाओं के प्रति हमारे समान सम्मान के भाव के दर्शाती है, जिस पर हमें गर्व है।

'देश' के इस अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

सुनहरे भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ।

çkQd j jktho vxoky
प्राचार्य, देशबंधु महाविद्यालय

विदाई

, d yæsl e; rd dk; Zdjusdsi 'pkr~dN I kFkh egkfo | ky;
ifjokj | s | okeçà gq g&

1. डॉ. मातादीन गुप्ता (राजनीति विज्ञान विभाग)
2. डॉ. पार्था गोस्वामी (भौतिक विभाग)
3. डॉ. ब्रजेश कुमार (रसायन विभाग)
4. श्री आफताब मोहम्मद शहरियार (राजनीति विज्ञान विभाग)
5. डॉ. बिक्रम सिंह (हिंदी विभाग)
6. सुश्री नीलम मल्होत्रा (इतिहास विभाग)
7. श्रीधर प्रसाद नवानी (प्रयोगशाला परिचर)
8. श्री रामकिशोर (माली)
9. श्री रमेश चंद सुदेरा (वर्कशॉप मैकेनिक, भौतिक विभाग)
10. श्री रमेश चंद्रा (प्रशासनिक अधिकारी)
11. श्री शीशपाल (चौकीदार)
12. श्री अमरजीत सिंह लांबा (अर्थशास्त्र विभाग)
13. प्रोफेसर रंजना सेठ (प्राणीविज्ञान विभाग)
14. डॉ. चित्रा अत्रे (वाणिज्य विभाग)
15. डॉ. माधुरी गोयल (रसायन विभाग)
16. श्रीमती उषा अरोड़ा (गणित विभाग)
17. श्री रमेश सिंह (प्रयोगशाला सहायक, भौतिक विभाग)
18. श्रीमती मंजु पाटील (दफ्तरी)

महाविद्यालय परिवार इनके सफल, सुखद, स्वस्थ व सक्रिय जीवन की कामना करता है।

संपादकीय



मानव जीवन पर आने वाली महामारी की त्रासदियाँ कुछ नयी सिखवन देकर जाती है। विज्ञान यदि वरदान है, तो वह अभिशाप भी है। इस बात की ऐतिहासिक पड़ताल करें तो इसके दोनों पक्ष हमारे सामने आ खड़े होते हैं। साहित्य विज्ञान के इन दोनों पक्षों की बात करने के साथ वैज्ञानिक आविष्कारों पर संदेह भी व्यक्त करता है। मानवीय इच्छा-महत्वाकांक्षाओं का कोई अंत नहीं है। इन्हीं महत्वाकांक्षाओं के कारण कोरोना वायरस जैसी महामारी से आज मानव जीवन संकटग्रस्त हो गया है। एक तरफ प्रकृति यदि खुलकर सांस ले रही थी, तो मानव जीवन में सांसों अकाल पड़ा हुआ था। इस वायरस के कारण देशव्यापी तालाबंदी में एक एक पल बहुत भारी हो गया था। पलों का यह भारीपन पैदल ही सैकड़ों मील दूर घर की राह पर निकले पड़े मजदूर और सुरक्षित घरों में बंद व्यक्ति दोनों पर था। कोरोना वायरस के कारण असंख्य लोगों को असामयिक ही काल के गाल में जाना पड़ा। इसकी दूसरी लहर में पल पल जीवित इंसान को अपनों के बिछुड़ने की खबरें दी है। उस समय को याद करने पर आज भी भयावह डर लगने लगता है। इसी लहर ने अनाथ होने वाले माता-पिता व बच्चों को जीवित छोड़कर भी मरे हुए से बदतर बना दिया है।

कोरोना वैश्विक महामारी के कारण प्रकृति व मानव के रिश्ते को फिर से सोचने समझने की जरूरत है। कोरोना के कारण शिक्षण व्यवस्था आभासी माध्यम में चलती रही। आभासी माध्यम के कारण ही अनेक नये नये टूल्स का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बने। दूसरी तरफ सामाजिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक व आर्थिक पक्षों के दुरगामी परिणाम भी पड़े। इन्हीं कारणों से महाविद्यालय की 'देश' पत्रिका का संयुक्तांक कोरोना वायरस पर केंद्रित करने की वजह बना है।

'देश' पत्रिका की रचनाएँ हमारे विद्यार्थियों और सहयोगियों की अपने समय व समाज के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। यह विभिन्न विषयों पर उनकी पकड़ व मौलिक चिंतन को भी प्रदर्शित करती है। सच्चे अर्थों में यह विभिन्न विषयों में फैली उनकी रचनात्मकता देशबंधु महाविद्यालय की सांस्कृतिक धरोहर है।

इस अंक का प्रकाशन प्रधान संपादक प्रोफेसर राजीव अग्रवाल के दृढ़ निश्चय व हरसंभव सहयोग के कारण संभव हो पाया है। इस अंक को साकार करने वाले सहयोगी उपसंपादकों प्रोफेसर ललित मोहन (हिंदी), श्री शाश्वत भट्टाचार्य (अंग्रेजी), डॉ. मुनीष कुमार (पंजाबी), डॉ. आशीष कुमार/डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा (संस्कृत), डॉ. अंतरा चौधुरी (बांग्ला), डॉ. नीलम बोरवांकर (सिंधी) और अपने-अपने खंड के विद्यार्थी संपादकों तथा रचनात्मक सहयोग देने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों व कर्मचारियों के साथ पारनासुस प्रिंटर्स का आभारी हूँ।

आशा करता हूँ कि आप सबको यह अंक पसंद आयेगा और आगे भी हम सब रचनात्मक रूप से जुड़े रहेंगे।

M,- Nk/wjke eh.kk
संपादक 'देश' पत्रिका

शोक – संदेश

महाविद्यालय में लंबे समय से कार्यरत रहे हमारे साथियों का असामयिक निधन होने पर महाविद्यालय परिवार दुःख प्रकट करता है—

1. डॉ. मंजू रानी चौधरी (रसायन विभाग)

कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने हमारे तीन युवा साथियों को छीन लिया है जिससे महाविद्यालय परिवार शोक की लहर में डूब गया—

1. श्री चंद्रशेखर (गणित विभाग)

2. डॉ. धर्मेन्द्र कुमार मलिक (वनस्पति विभाग)

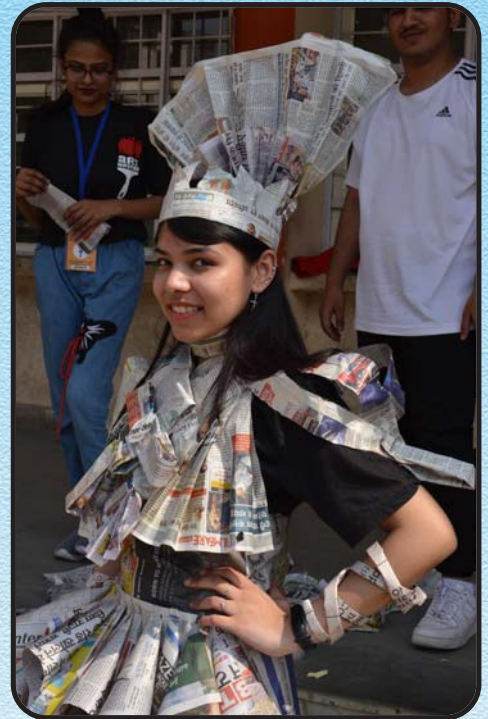
3. श्री विजय कुमार माझी (लाइब्रेरी परिचायक)

इन साथियों के शोक संतप्त परिवार के साथ महाविद्यालय अपनी संवेदना प्रकट करता है।

SABRANG 2020



SABRANG 2020



SABRANG 2020



SABRANG 2020



VC's VISIT TO COLLEGE



*VC Prof. P.C. Joshi
Dean of Colleges Prof. Balram Pani
Director South Campus Prof. Suman Kundu*

NCC



NSS ACTIVITY



देश 2020—21

हिंदी विभाग

संपादक : प्रो. ललित मोहन
छात्र संपादक : मधुवन प्रताप सिंह

विषय सूची

- | | | |
|---------------------------------|------------------------------|---|
| 1. संपादकीय | मधुवन प्रताप सिंह | |
| 2. भाषा की पहली परंपरा | प्रोफेसर ललित मोहन | 2 |
| 3. दलित स्त्री आत्मकथा के मायने | प्रोफेसर बजरंग बिहारी तिवारी | |
| 4. व्यक्तिगत नैतिकता और राजनीति | प्रोफेसर मनोज कुमार सिंह | |
| 5. | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 6. जीने—मरने का तांडवी खेल | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 7. एक ही तूफान में घिरे | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 8. जी लेंगे इस 'डर' से डर कर | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 9. मिली आपको वक्त की सौगात | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 10. क्यों जिएं जिंदगी डरी—डरी | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 11. चारों ओर सुख—शांति होगी सदा | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 12. खिलंदड़ हैं हम | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 13. नई दुनिया | डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी | |
| 14. नदी | डॉ. रानी कुमारी | |
| 15. मृत्यु | डॉ. रानी कुमारी | |
| 16. क्या मधुवन जीवित रह पाएगा? | मधुवन प्रताप सिंह | |
| 17. यामा रानी और सुबह | मधुवन प्रताप सिंह | |
| 18. मत करो बहाना | शशांक त्रिपाठी | |
| 19. कविता | मो. सिराज | |

संपादकीय

‘देश’ के लिए संपादकीय लिखना मेरे लिए बड़े हर्ष और गौरव की बात है। ‘देश’ हमारे महाविद्यालय की सिर्फ साहित्यिक पत्रिका ही नहीं, बल्कि हमारी मेहनत और लगन का परिणाम भी है। इस बार का हमारा अंक कोरोना महामारी पर केंद्रित है। आशा है आपको हमारा ये अंक भी पसंद आएगा।

बहरहाल, इस समय मुझे हरिवंश राय बच्चन जी की कुछ पंक्तियां याद आ रही हैं:

“जीवन में वह था एक कुसुम
थे उस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखीं कितनी इसकी कलियाँ
मुरझाईं कितनी वल्लरियाँ
जो मुरझाईं फिर कहाँ खिलीं
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुबन शोर मचाता है”

कोरोना काल में ये पंक्तियां सत्य सिद्ध होती दिख रही हैं। हमारे ना जाने कितनों के अपने मृत्यु को प्राप्त हो गए और कलियों तथा वल्लारियों की भांति मुरझा गए।

पर क्या हमें शोक मनाना चाहिए? यदि नहीं, तो क्यों नहीं। और यदि हां तो किसका, जो कोरोना काल में मृत्यु को प्राप्त हुए उनका, या फिर उस ‘सिस्टम’ का जो पहले से ही मरणासन्न था।

खैर, इस सबके बीच अच्छी बात ये है कि हमारी पत्रिका ‘देश’ आ रही है। इस महामारी और नकारात्मकता के बीच आप जब इसे पढ़ेंगे तब आप ऊर्जा और उम्मीद का रसास्वादन करेंगे।

पत्रिका में प्रो. ललित मोहन का लेख पढ़ने योग्य है। ये आपको समाज को देखने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करेगा। इसमें उन्होंने संस्कृत की कृत्रिमता पर बात की है और बताया है कि दलितों की भी अपनी एक भाषा है।

समीक्षा: दलित स्त्री आत्मकथा के मायने में प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी ने 2021 में प्रकाशित हुई सुमित्रा महरोल की आत्मकथा ‘टूटे पंखों से परवाज़ तक’ की समीक्षा की है।

उन्हीं के शब्दों में बयां करें तो “एक पुरुषवादी समाज में महिला होना, एक जातिवादी समाज में दलित होना और एक निष्ठुर समाज में विकलांग होना ये हाशियाकरण के तीन मुख्य आधार हैं जिनसे लेखिका जूझती हुई आगे बढ़ी है।”

प्रो. मनोज कुमार सिंह ने उनके लेख व्यक्तिगत नैतिकता और राजनीति में नीति, गुण और विधि को परिभाषित कर उनका स्वरूप स्पष्ट किया है। उन्होंने व्यक्तिगत नैतिकता और राजनीतिक नेतृत्व के बीच संबंध स्पष्ट किया है। निश्चित ही पढ़ने योग्य लेख है।

प्रो. प्रदीप मुखर्जी (सेवानिवृत्त) की कोरोना विषयक कविताएं—एक ही तूफान में घिरे, जीने मरने का तांडवी खेल, मिली आपको वक्त की सौगात आदि आपको महामारी के बीच सकारात्मकता से जीने का पाठ पढ़ाएंगी।

डॉ. रानी कुमार की कविता मृत्यु एक बेहद संवेदनशील विषय पर बात करती है — मानसिक स्वास्थ्य। इस विषय पर बात करना अति आवश्यक है, और डॉ. रानी कुमारी इसे समझाने में सफल रही हैं।

रचनाएं और भी हैं, एक से बढ़कर एक उम्दा रचनाएं। परंतु शब्द सीमा भी है इसलिए सबका परिचय नहीं दे पाऊंगा। आशा करता हूँ आप स्वयं जाकर सभी रचनाओं को पढ़ेंगे और उनका मर्म समझेंगे। बिना मर्म समझे रचना पढ़ने से अच्छा है पत्रिका पलट कर अभी बंद कर दीजिए। पर आशा है आप पढ़ेंगे और साथ ही मर्म भी समझेंगे।

धन्यवाद!

मधुवन प्रताप सिंह
छात्र संपादक

भाषा की पहली परंपरा

‘दलित भाषा’ शीर्षक देखने के पश्चात् मैंने अपने मित्रों एवं विद्वानों से इस विषय पर चर्चा शुरू कर दी। विषय को देखने/सुनने के पश्चात् कुछ लोगों ने तो सीधे-सीधे नाक-भौं सिकोड़ कर कह दिया कि क्या बकवास विषय है। अरे भई दलित भाषा जैसी कोई भाषा नहीं होती, जैसी भाषा गैर दलित बोलते हैं वैसी ही या वही भाषा दलित भी बोलते हैं। अतः यह कोरी कल्पना है बकवास है। अरे भई किसी क्षेत्र की भाषा होती है, बोली होती है जिसको किसी क्षेत्र के सभी लोग बोलते हैं, सुनते हैं, लिखते हैं, पढ़ते हैं। पर साथ कुछ लोगों ने कहा कि अगर दलित है तो दलितों की कोई भाषा भी होगी। तब मैं उनसे दलित भाषा पर थोड़ा प्रकाश डालने के लिए कहता तो वे अक्सर एक ही बात कहते – देखना पड़ेगा, सोचूंगा, देखूंगा आदि।

तभी मेरा ध्यान भारत के प्राचीन भाषा-विश्लेषण पर गया जिस पर अधिकतर विद्वान लोग अपना ध्यान आकर्षित करते रहे हैं। यहां प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. रामशरण शर्मा का वक्तव्य देना ठीक रहेगा, वे कहते हैं—“सामंती विचारधारा के पोषकों ने सामाजिक भेदभाव को दर्शाने के लिए भाषा का उपयोग शुरू किया। प्राक्-सामंती काल में स्त्रियों तथा शूद्रों की भाषा प्राकृत है। जबकि उच्च वर्ण तथा उच्च पद प्रतिष्ठा वाले पुरुष संस्कृत बोलते हैं।” अपनी इस बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए रामशरण शर्मा जी आगे कहते हैं—“भारतीय भाषाओं में (संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश) संबोधन की पद्धतियों से सामान्यतः त्रिस्तरीय समाज का संकेत मिलता है। बुनियादी तौर पर उसका मूल सामंती

मानस में समाया हुआ है। भाषा की यही स्थिति बाद में अंग्रेजों ने भी पैदा की। अंग्रेजों के राज में गाँवों की पुरानी व्यवस्था तो टूटी लेकिन उन्होंने सामंतवाद और सामंती संस्कृति को और भी मजबूत किया साथ ही भाषा की त्रि-स्तरीय स्थिति भी बनी रही।

भारत में भाषा के स्वरूप को और अधिक स्पष्ट करते हुए इतिहासकार डी.डी. कौसाम्बी का वक्तव्य यहाँ रखना उचित रहेगा। उनका कहना है कि भाषा की सामाजिक भूमिका को उसके सामाजिक संदर्भों से जोड़कर देखा जा सकता है, न कि उसके व्याकरणिक और कोशगत रूपों से। भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण भी इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता कि आजीविका की दशा का भाषा पर क्या प्रभाव पड़ता है।

इस विमर्श से एक बात तो यहाँ स्पष्ट हो गई कि विषय पर विचार नया नहीं है। भारत में प्राचीन काल से ही शूद्र (दलित) की भाषा को उच्च वर्ण की भाषा से अलगाया गया/देखा गया है। अब भले ही यह विवाद का विषय हो सकता है कि वे प्राकृत बोलते थे, अपभ्रंश बोलते थे या देशी भाषाएं बोलते थे। या फिर दलित स्त्री जिस भाषा का प्रयोग करती थी क्या उच्च वर्ण की स्त्री भी उसी भाषा का प्रयोग करती थी। क्या सारे भारत में शूद्र एवं स्त्री एक जैसी ही प्राकृत, अपभ्रंश भाषाएं (जैसा कि प्राचीन साहित्यकारों ने उनके लिए प्रयोग की है) बोलते थे, वो भी अपने क्षेत्रीय प्रभावों को हटाकर। अतः यह सभी बातें विवाद का पहलू होते हुए भी एक

बात को स्पष्ट रूप से हमारे सामने लाते हैं। वो है शूद्रों (दलितों) की अलग भाषा का विचार।

ऐसा क्यों? हुआ ये कि भारत में उस प्राचीन युग में भी किसी साहित्यकार को अपनी रचना में दो अलग-अलग भाषाओं को इस्तेमाल करना पड़ा। यहां मैं अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए विश्व प्रसिद्ध चिंतक न्गुगी वां ध्योगों का वक्तव्य रखता हूँ। उनका कहना है—'भाषा चाहे कोई भी हो उसका हमेशा एक दुहरा चरित्र होता है। यह सम्प्रेषण का माध्यम होने के साथ-साथ संस्कृति की वाहक भी होती है। इस प्रकार देखे तो पाएंगे कि सम्प्रेषणीयता और संस्कृति के रूप में भाषा एक दूसरे का उत्पाद है। सम्प्रेषणीयता से संस्कृति का निर्माण होता है। भाषा संस्कृति की वाहक है और संस्कृति अपने मौखिक और लिखित साहित्य के जरिये मूल्यों के उस समूचे पुंज को लेकर चलती है। जिसके जरिये हम स्वयं से साक्षात्कार करते हैं। यह बात इस तथ्य से प्रभावित होती है कि लोग किस दृष्टि से अपनी संस्कृति, अपनी राजनीति और प्रकृति तथा अन्य चीजों के साथ अपने समूचे सम्बंध को देखते हैं। इस प्रकार मानव समुदाय के ऐसे समूह के रूप में जिसका एक खास स्वरूप, खास इतिहास और विश्व के साथ सम्बंध है, इसलिए हमारे साथ भाषा का अविभाज्य संबंध है। चूँकि संस्कृति का काम महज विश्व को बिम्ब में अभिव्यक्त करना ही नहीं है। बल्कि उन बिम्बों के जरिये विश्व को एक नई दृष्टि से देखने का तरीका भी विकसित करना है।'

भारत में भाषा के इस दोहरे चरित्र को समझने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि भारत में संस्कृति के इस पहलू पर भी विचार किया जाए।

जिसके कारण शूद्र और स्त्री की भाषा उच्च वर्ण तथा उच्च पद प्रतिष्ठा वाले पुरुष से अलग थी।

भारत में वर्णव्यवस्था जिसमें समाज मोटे तौर पर चार वर्णों में बंटा हुआ मिलता है। इस चातुर्वर्ण्य के उद्भव के पीछे सामाजिक-आर्थिक आधार नहीं था किंतु अंतिम विश्लेषण में वर्ण व्यवस्था सामाजिक-आर्थिक वर्गों के रूप में ही विभक्त थी। समाज चातुर्वर्ण्य-विभाजन एक वर्ग-विभाजन था क्योंकि यह उत्पादन, वितरण और उपयोग की एक व्यवस्था थी। परन्तु एक निश्चित क्रम में यह वर्ग विभाजन पुश्तैनी और सजातीय विभाजन हो गया, जिसने स्पष्ट तौर पर 'वर्ग-चेतना' और 'वर्ग-सम्बंधों' को विकृत एवं रूपांतरित कर दिया। इसके साथ ही धार्मिक अधिकार और कर्तव्य भी जाति के अनुसार अलग-अलग हो गये और उसे समाज में 'ब्राह्मण-अधिकार' और कर्तव्य बना दिया गया कि ब्राह्मण शारीरिक श्रम नहीं करे। इसी के समान शूद्र का 'धार्मिक कर्तव्य' था कि वह किसी तरह के बौद्धिक कर्म में संलग्न न हो। शारीरिक श्रम करना ही उसका एक मात्र कर्तव्य था। इससे वर्णव्यवस्था का बुनियादी वर्ग चरित्र और जटिल हो गया। इस श्रम विभाजन की स्थिति के परिणाम पर भी एस. बी. सरदेसाई लिखते हैं—'समाज के भीतर शोषक और शोषित के वर्ग-भेद ने मानसिक और शारीरिक श्रम को अलग-अलग कर दिया। इस अलगाव ने मेहनतकश वर्ग को सोचने-विचारने के काम से वंचित कर दिया और सोचने विचारने तथा सिद्धांत निर्माताओं को हल को स्पर्श करने तक के लिए निषिद्ध कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जो वर्ग सोचने-विचारने का काम करने लगा, उसी के नियंत्रण और अधिकार में काम करने वाला वर्ग आ गया और मानसिक काम करने वाले वर्ग ने

शारीरिक श्रम करने वाले वर्ग को अपना दास बना लिया।

इस प्रकार इस अलगाव ने जहां मानसिक और शारीरिक श्रम का विभाजन किया वहीं दूसरी ओर दो अलग-अलग संस्कृतियों की नींव डाली। जिसे मोटे तौर पर ब्राह्मणीय संस्कृति और श्रमिक संस्कृति या फिर इसे अनुत्पादक (ब्राह्मणों तथा शासकों) और उत्पादक (श्रमिकों/बहुजनों) लोगों की संस्कृति भी कह सकते हैं। इस प्रकार दोनों का इतिहास, दोनों की संस्कृति, दोनों की भाषा और दोनों का विश्वदृष्टि-कोण भी धीरे-धीरे अलग होता चला गया।

मलयालम भाषा के विद्वान आलोचक कवियूर मुरली दलितों की भाषा के सम्बंध में कहते हैं कि 'दलित की भाषा जो ब्राह्मणीय भाषा एवं अन्य सामंती भाषाओं से प्राचीन काल से अलग थी लेकिन दलित ही दलितों की भाषा को नहीं मानता था। केरल में 1935 से दलितों में नवोत्थान हुआ। उस समय से दलित की भाषा की चर्चा होना प्रारम्भ हुई। 1956 से केरल को स्थायी राज्य बनाया फिर भी दलितों को दलित नहीं मानता है। दलितों की भाषा और साहित्य के सम्बंध में अपनी पुस्तक में आगे कहते हैं कि दलितों को प्राचीन व्यवस्था में ब्राह्मणों, सामंतों द्वारा जो मिला था वो उन्होंने बिल्कुल नये रूप से प्रकट किया। मिथक, कहानियां, मौखिक साहित्य में दलित अस्मिता को दोबारा वापस लाकर भाषा का उत्थान करना शुरू किया। अगर दलितों की भाषा का उत्थान नहीं तो दलितों का उत्थान नहीं।

दलितों की यादें उनके बहुत सारे समुदायों से लुप्त हो रही है उनका शहर, उनकी जाति, वृक्ष,

असुर-देवता, पेड़-पौधे प्रकृति। क्यों दलितों की स्मृति ब्राह्मणीय स्मृति से अलग है। क्योंकि हजारों सालों से ब्राह्मणीय समाज दमित कर रहा था अतः दलित यादों का अलगाव होना चाहिए। दलित : प्रदेश, स्थिति एवं संस्कृति, यह सब दूसरे लोगों (वर्चस्ववादियों) की संस्कृति के अंदर से दिखाई नहीं दे रहा था।'

दलितों की भाषा : स्वरूप एवं बदलाव

किसी भी भाषा का चयन करने और उस भाषा का इस्तेमाल करने का निर्णय लेते समय महत्वपूर्ण बात यह है कि वह व्यक्ति अपने देश की जनता को अपनी प्राकृतिक और सामाजिक संदर्भ में अथवा यूं कहें कि वे समूचे विश्व के संदर्भ में किस तरह परिभाषित करता है। भाषा और उसके स्वरूप का चयन हमेशा दो परस्पर संघर्षरत सामाजिक शक्तियों के संदर्भ में किया जाता रहा है।

सामंती और साम्राज्यवादी भाषा और साहित्य जो लगातार हमें हमारे अपने स्व से दूर ले जाते रहे हैं। वे हमारी अपनी दुनिया से दूसरी दुनिया में पहुँचाते रहे हैं लेकिन हमारी अपनी भाषाओं को जिन्हें ये उत्पादक वर्ग, श्रमिक जन, बहुजन, दलित जनता हमेशा इस्तेमाल करती रही है उसे वे कृत्रिम करने की कोशिश कर रहे हैं। सामंती और साम्राज्यवादी मानसिकता का प्रभाव भी इस कृत्रिमता में दिख रहा है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए यहां तेलुगू के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कंचा ऐलयूया का तेलुगू भाषा का विवेचन यहां रख रहा हूँ। उनका कहना है—'तेलुगू क्षेत्र में ब्राह्मणीय तेलुगूपन निश्चित रूप से तेलुगू स्वभाव से संबंधित नहीं है। उदाहरण के लिए तेलुगू क्षेत्र में ब्राह्मणीय

तेलुगू के रचनाकारों ने संस्कृत को ही तेलुगू लिपि में लिखकर उसे ही तेलुगू भाषा कहा है। ... यहां तक कि उन्होंने तेलुगू में इनका अर्थ भी नहीं लिखा है बस केवल संस्कृत शब्दों को तेलुगू की लिपि में लिख दिया। उनकी दृष्टि में तेलुगू माने शूद्रों की भाषा। वे मूलतः तेलुगू विरोधी थे। इन लेखकों ने (कंचा जी ने जिन लेखकों का नाम उदाहरण स्वरूप दिया है टंगटूरि प्रकाशम, पट्टाभि सीतारमय्या, बुर्गल रामकृष्ण राव, नन्नय्या, तिक्कन्ना, एरप्रिगडा, पोतना, श्रीनाथ) तेलुगू के व्यक्तिकरण से संबंधित दु, मु, वु, चु, जैसे शब्दों के साथ जोड़ कर उन्हें ही तेलुगू शब्दों के रूप में घोषित किया। इसलिए इन ग्रंथों में प्रयुक्त तेलुगू को सामान्य उत्पादक जातियों से संबंधित तेलुगू की जनता समझ नहीं सकती। आज भी यह ग्रंथ तेलुगू साहित्य के पाठ्य ग्रंथों के रूप में रखने के कारण वे छात्र, जिनकी मातृभाषा असली तेलुगू है, ये ग्रंथ पढ़ नहीं पाते।”

यह लेखक ऐसा क्यों करते हैं इसके पीछे इनकी मंशा क्या होती है? इसे स्पष्ट करते हुए आगे डॉ. कंचा ऐलय्या जी कहते हैं—“ब्राह्मण लेखकों ने तेलुगू की जनता और तेलुगू भाषा को शूद्र भाषा एवं शूद्रों की संस्कृति के रूप में घृणित समझा है।”

जो हो, कंचा ऐलय्या द्वारा दिया गया तेलुगू भाषा का यह विवेचन भारत में केवल तेलुगू भाषा पर ही लागू नहीं होता बल्कि भारत की संस्कृत/अंग्रेजी को छोड़कर सभी भाषाओं पर होता है। उन्होंने संस्कृत को छोड़कर अन्य सभी भाषाओं को हेय दृष्टि से देखा है। अगर संपर्क के कारण इन भाषाओं को स्वीकारा भी है तो उसे संस्कृत भाषा के द्वारा कृत्रिम करने के प्रयास भी अधिक किये हैं।

सरकारी स्कूलों में इन देशी भाषाओं के विकास के लिए लगाई गई पाठ्य पुस्तकों की भाषा को संस्कृत के शब्दों की भरभार करके इन्होंने सभी भाषाओं को यांत्रिक भाषा के रूप में बदल दिया, उसका रूप स्वरूप कृत्रिम कर दिया। जिससे दलित बहुजन उसे समझ न पाये। नई शिक्षा के आलोक से वंचित रह जाए। ब्राह्मणवादी और सामंती अपने परिवारों में संस्कृत का वर्चस्व खत्म होने के पश्चात अंग्रेजी भाषा को अपनाकर अपने स्वभाव एवं प्रकृति में अंग्रेजों की मानसिकता का आरोपण कर अपने संस्कृति को अंग्रेजी संस्कृति के रूप में ही देख रहा है। भारत की देशी भाषा को गुलामी की संस्कृति की भाषा के रूप में देख रहा है।

चूँकि थोपी हुई भाषाएं कभी भी बोलचाल में देशी भाषाओं को पूरी तरह स्थान नहीं दे सकीं, अतः उनके प्रभुत्व का सबसे प्रभावशाली क्षेत्र संचार के रूप में भाषा के लिखित स्वरूप में ही रह गया है। या अंग्रेजी सत्ता के हस्तांतरण के पश्चात् सत्ता तंत्र की भाषा के रूप में वो भी अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए क्योंकि उसकी सामंती मानसिकता, साम्राज्यवादी मानसिक के मेल से संतुष्ट होने लगी है। अतः उनके लिए अंग्रेजी भाषा का देशी भाषाओं पर वर्चस्व अब राजनीतिक सांस्कृतिक वर्चस्व हो गया है। भारत की देशी भाषाओं पर अंग्रेजी का वर्चस्व दलितों की संस्कृति एवं भाषा पर गैर दलितों का वर्चस्व। जिसे इतिहास में उन्होंने कृत्रिम संस्कृत भाषा के रूप में गढ़ा था।

ललित मोहन

प्रोफेसर

हिंदी विभाग

समीक्षा : दलित स्त्री आत्मकथा के मायने

हिंदी में पहली दलित स्त्री आत्मकथा कौशल्या बैसन्त्री लिखित 'दोहरा अभिशाप' 1999 में छपी थी। इस खतरे को भांप यथास्थितिवादियों और अस्मितावादी पुरुषवादियों ने ऐसा प्रतिकूल माहौल बनाया कि अगले 11 वर्षों तक कोई दलित स्त्री आत्मकथा नहीं छपी। सुशीला टाकभौरे ने 2011 में इस ठहराव को 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा लिखकर तोड़ा। उसके बाद तो इस विधा में गति आई और एक-एककर तीन दलित स्त्री आत्मकथाएं प्रकाशित हुईं। इस वर्ष (2021 में) दो और आत्मकथाएं प्रकाशित हुईं जिनमें सुमित्रा महरोल की आत्मकथा 'टूटे पंखों से परवाज तक' (द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन, पांडव नगर, दिल्ली) कई कारणों से महत्त्वपूर्ण है।

जैसा शीर्षक से स्पष्ट है, आत्मकथा में लेखिका का दृढ़ व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। दलित स्त्री विमर्श को ऐसे मजबूत व्यक्तित्वों की बहुत जरूरत है। एक पुरुषवादी समाज में महिला होना, एक जातिवादी समाज में दलित होना और एक निष्ठुर समाज में विकलांग होना ये हाशियाकरण के तीन मुख्य आधार हैं जिनसे लेखिका जूझती हुई आगे बढ़ी है। पहली 'निर्योग्यता' दूसरी को और दूसरी तीसरी को मजबूती देती हुई उसका आगे बढ़ना दुश्वार करती रही है। विषाद के छोटे-बड़े अंतरालों के बावजूद सुमित्रा ने निरंतर संघर्ष किया, कभी हार नहीं मानी और कभी इनसे उपजी तिकता या उदासी को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया है।

सुमित्रा साल भर की भी नहीं हुई थीं जब उनके पाँव पोलियोग्रस्त हुए। पिता बिजली विभाग में क्लर्क थे और मां घर संभालती थीं। दो बड़े और एक छोटे भाइयों के बीच स्नेह व उपेक्षा के विषम अनुपात में

सुमित्रा पली-बढ़ीं। कई ऐसी चोटें हैं, टीसों हैं जो बचपन में सुमित्रा को मिलीं और याद रह गईं। छोटे भाई को माता-पिता फिल्म दिखाने ले गए और लंगड़ाते-घिसटते पीछे लगी बिलखती बच्ची को सड़क पर छोड़ दिया।

कुछ इसी तरह के अनुभव स्कूल में भी हुए और कॉलेज में भी। परिस्थितियों से तालमेल बिठाती, ग्लानि और गुस्से को भरसक जज्ब करती सुमित्रा एम.ए. करने विश्वविद्यालय पहुँचीं। विकलांगता के कड़वे अनुभव जातिजनित भेदभाव पर भारी रहे।

'टूटे पंखों से परवाज तक' की भाषा सादगीपूर्ण है, अकृत्रिम है। पढ़ते हुए कहीं ऐसा नहीं लगता कि कुछ छुपाया जा रहा है। प्रायः आत्मकथाओं में 'आत्म' या स्व का गोपन होता है। आत्म को छोड़कर शेष जगत दीप्त हुआ करता है। बहुत हुआ तो उस स्व पर नीमरोशनी डाल दी जाती है। सुमित्रा ने ऐसा नहीं किया है। उनकी आत्मकथा को इसीलिए पारदर्शी और अकुंठ कहा जाना चाहिए। व्यक्तित्व की पारदर्शिता भाषा में उतर आयी है। हाँ, व्याकरणिक दिक्कतें एकाध जगहों पर देखी जा सकती हैं।

दलित स्त्रीवाद को मजबूत व्यक्तित्वों की आवश्यकता है तो उसे साफ और गहरी राजनीतिक समझ की भी जरूरत है। कहना चाहिए कि शक्ति और सत्ता की समझ के बगैर आक्रोश व सदिच्छाएं भटक सकती हैं। 'टूटे पंखों से परवाज तक' में राजनीतिक संदर्भ लगभग नहीं हैं। यह अनुमान करना कठिन है कि विभिन्न राजनीतिक दलों, विचारधाराओं और शासन प्रणालियों पर लेखिका क्या सोचती हैं। उनका कोई 'पॉलिटिकल स्टैंड' है

या नहीं। इस 'विजन' का भान न हो तो लगेगा कि लेखिका की (स्कूल—कॉलेज—यूनिवर्सिटी में) पढ़ाई, बैंक में नौकरी और फिर प्रोफेसर पद पर नियुक्ति मात्र उनकी अपनी मेहनत और मेधा का परिणाम है। तसव्वुर कीजिए कि अगर बैंकों का राष्ट्रीयकरण न किया गया होता तो क्या उसमें वंचित जातियों की इस पैमाने पर नियुक्तियां हो पातीं! सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए विकलांगों हेतु विशेष भर्ती अभियान चलते? अब जबकि संवैधानिक मूल्यों के उलट धारा बह चली है, बैंकों का विलय करके उनका निजीकरण किया जा रहा है, उच्च शिक्षा संस्थानों में स्थायी नियुक्तियों पर स्थायी विराम लग रहा है तब क्या सुमित्रा जैसी युवतियां 'अपनी प्रतिभा और श्रम' के बल पर वांछित मुकाम तक पहुँच सकेंगी? अब क्या न्यायपूर्ण सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया ठहर नहीं जाएगी? लेखिका के अनचाहे उनकी आत्मकथा हमें इस विकट प्रश्न के सम्मुख ला खड़ा करती है और मानवाधिकार के सवाल पर अपना 'स्टैंड' तय करने को प्रेरित करती है।

प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी
हिंदी विभाग

व्यक्तिगत नैतिकता और राजनीति

व्यक्तिगत गुण ही समय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और यहाँ तक की धार्मिक गुण बन जाते हैं। व्यक्ति के गुणों की पहचान करना, उनका अनुमोदन तथा अनुकरण करना सहज होता है। जिस प्रकार व्यक्ति का गुण पारदर्शी होता है उसी प्रकार उसका अवगुण भी हमारे सामने स्पष्ट होता है। समाज इन्हीं व्यक्तिगत गुणों और अवगुणों के आधार पर अच्छे-बुरे की पहचान करता है। व्यक्ति की तुलना में समाज या समूह के गुण दोष को समझना आम जन के लिए अपेक्षाकृत कठिन होता है। यही कारण है कि सामान्य लोग व्यक्ति के गुण-दोष के आधार पर उसके बारे में अपनी राय कायम करते हैं न कि उसकी जाति, परिवार या उसके धर्म और समाज के आधार पर। पाप और पुण्य, अपराध और क्षमा, लोग और घृणा आदि भाव और कर्म व्यक्तिगत ही होते हैं। यही कारण है कि समाज अपना नायक और खलनायक व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर ही चुनता है जो व्यक्ति दूसरे के दुख में दुखी और सुख में सुखी होता है वही जनप्रिय और अच्छा व्यक्ति कहलाता है। अपने सुख की स्थिति का त्याग कर दूसरों के दुख में खड़ा होने वाला व्यक्ति ही मनुष्य के उच्च भाव-भूमि का प्रतिनिधि माना गया है। करुणा-पूरित नेत्रों से संसार को देखने वाला ही करुणाकर कहलाता है। इसी भाव का वाहक व्यक्ति सभ्यता, संस्कृति धर्म और समाज का नायक माना गया है। व्यक्तिगत गुण ही सभी धर्मों में मिथक रूप धारण करते रहे हैं। मानवीय सद्गुणों का संघनित रूप ही मिथक है। मानवीय गुण ही सभी धर्म और सांस्कृतिक की आत्मा है।

इन्हीं मानवीय गुणों का दूसरा नाम नीति और नैतिकता है। यही गुण जब व्यवस्थित और

संस्थानिक बन जाते हैं तब हम उन्हें विधि या विधान कहने लगते हैं। मानवीय इतिहास का कोई भी दौर नीति-विहीन नहीं रहा है। यही नीतियाँ व्यक्ति और समाज को निकर्ष प्रदान करती हैं। न्याय की पूरी व्यवस्था इन्हीं नीतियों पर टिकी हुई है। व्यक्ति की नैतिकता विधि-विधान को न्याय और सद्भाव का प्रतीक बना देता है। वही विधियाँ व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण अवनति को भी प्राप्त होती है। इन्हीं मानवीय मूल्यों के रक्षार्थ कभी राम-कृष्ण महावीर बुद्ध, ईसा-पैगम्बर, कबीर-नानक, विवेकानन्द-गाँधी हमारे सम्मुख आते रहे हैं। मानवीय गुणों की उदात्ता का प्रतिनिधि व्यक्ति ही है। व्यक्ति-व्यक्ति को प्रभावित करता है और इसी क्रम में मानवीय गुणों का प्रचार-प्रसार होता रहता है। इन्हीं भावों के वाहक अगुआ, झंडाबरदार वीर, नायक या नेता कहलाते हैं।

करुणा, दया, प्रेम, अनुराग के प्रति निष्ठावान हुए बिना न तो धर्म चला है न समाज। मानवीय गुण, नीति और धर्म के समन्वित रूप का ही एक नाम राजधर्म या राजनीति भी है। जो राजनैतिक नेतृत्व समाज को उनकी परंपरा, उनके धर्म और व्यक्तिगत विकास के अवसर प्रदान करता है वही राजधर्म है, वही राजनीति है। मानवीय सद्गुणों की परंपरा से भिन्न कोई विधान दीर्घजीवी और कल्याणकारी नहीं हो सकता। कई बार तात्कालिक राजनीति और सामाजिक स्थितियों में व्यक्तिगत नेतृत्व जन भावनाओं का भावादोहन करके हृदयहीन व्यवस्थाएँ बनाने में कामयाब रहा है लेकिन इतिहास गवाह है वे व्यवस्थाएँ मिट गई हैं। प्रजा हितैषी संस्थाएँ ही इतिहास में अपना स्थान बना पाई हैं। मानवीय गुणों से युक्त हुए बिना कोई नेतृत्व व्यक्ति और समाज

को उत्थान और उदात्त स्थिति तक नहीं पहुँचा सकता। मनुष्यता के दीर्घकालिक इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि करोड़ों वर्षों के मानवीय इतिहास यात्रा में सौ-दो सौ साल तक चलने वाली व्यवस्थाएँ समुद्र में बूँद की मानिद हैं। राजा पिता है तो प्रजा उसकी संतानें। यह रूपक बहुत पुराना लग सकता है लेकिन प्रेम, करुणा, दया, ममता क्या आज के पद हैं। यह सच हैं और सनातन भी। सच अविरोधी होता है। पक्षधरता से व्यवस्थाएँ विभेद पैदा करती हैं, न्याय और प्रेम से भेद मिट जाता है। मनुष्य का उदात्त स्वरूप, उनसे निःसृत गुण और उनसे निर्मित नीतियों ही राजनीति को सही दिशा दे सकती है, देती आयी है, देती रहेगी। मानवीयता और राजनीति अन्योन्याश्रित है, अविच्छिन्न हैं। व्यक्तिगत नैतिकता के बिना राजनीतिक नेतृत्व प्रदान करना संभव नहीं। येन केन प्रकारेण सत्ता पर काबिज हो जाना और बात है और जनता का हृदय हार होना और बात।

प्रो. मनोज कुमार सिंह
हिंदी विभाग

नाम.....

चारों ओर अंधेरा क्यों है छाया
क्यों खेलते हुए बच्चे घर में बंद है आज,
क्यों सड़को में छाया है सन्नाटा सा।
क्यों घर-घर के बंद है दरवाजे
यह कैसा नया डर है आया,
कोरोना का प्रकोप क्यों है छाया।।

मानव जाति पर यह फैला संकट है आया,
चारों ओर क्यों है मौत का साया।
पृथ्वी का कोना-कोना भयभीत है आज इससे,
न जाने कब हटेगा मृत्यु का यह कोहरा
कोरोना का यह कैसा प्रकोप है आया।।

जीने-मरने का तांडवी खेल

घर से है निकलना मना
 क्योंकि बाहर है कोरोना
 और घर के अंदर हम यह पाते
 कि बैड, तस्वीरें और पंखें जोर-जोर से हिलते जाते
 कैसी अद्भुत है विडंबना
 है मना निकलना घर से बाहर
 और गहराया है संकट गहरा अंदर
 भला करें तो क्या करें ऐसे में!
 जाएं तो आखिर जाएं कहां
 कुआं आगे है तो है पीछे खाई
 कितनी जान आफत में सबकी आई
 और मातम है कितनी चहुं ओर छाई
 ऊपरवाला भी खेल रहा है खेल
 और देख रहा इस करतब को बड़े कौतुक से
 जाने भरेगा कब मन उसका इस खेल से
 पहले किया घर की चौहद्दी में कैद, हमें यह निर्देश
 देकर
 कि निकलो न भूलकर भी घर से बाहर
 और अब किया सावधान, झटके भूकंप के भेजकर
 कि भागो निकल तुरंत घर से बाहर
 बनेगा क्या आखिर हम सबका इस रेलमपेल में
 जीने-मरने के इस तांडवी खेल में।

डॉ. प्रदीप मुखर्जी

एक ही तूफान में घिरे

हम सब घिरे हैं एक ही तूफान में
 पर नहीं हैं सब एक ही किशती में सवार
 जीवन की नैया सब खे रहे हैं अलग-अलग
 पर घिरे हैं सब एक ही तूफान में
 सबकी कट रही जिंदगानी दीगर ढंग से
 कोई कर रहा लेखन तो कोई कर रहा गुनगुन
 कोई हस्त कला सीख रहा तो कोई हो रहा पाक
 कला में निपुण
 पर बीच-बीच में हाथ अपना धोते-धोते
 कभी अनायास हाथ भी अपना मलने लगते
 सोचते, यह फंस गए किस तूफान में
 कि फुसफुसा भी नहीं सकते कान में
 क्योंकि दूरी एक दूजे से रखनी है बरकरार
 ऊपर से झेलनी पड़ रही है आर्थिक मार
 लेकिन, कुछ हैं ऐसे जो कहीं के भी नहीं
 रोजगार नहीं और कुछ खाने को भी नहीं
 पर कभी-कभी लोगों के दिलों में जब उमड़ती
 दया
 तब मिल जाता उन्हें कुछ खाने को
 अड़चनें हैं खड़ी अपना गांव-खेड़ा जाने को
 लटकी है तलवार सभी के ऊपर
 घिरे हैं सभी एक ही तूफान में
 कोरोना के तूफान का ही है चारों ओर रोना
 पर सब अलग-अलग किशती में हैं सवार
 यह किशती है सबका अलग जीवन
 सबका अलग भाग्य।

डॉ. प्रदीप मुखर्जी

जी लेंगे इस 'डर' से डर कर

मुश्किल की इस कठिन घड़ी में
लें भला कहां शरण हम
दिशाएं सभी जाम हैं
मचा चारों ओर घोर कोहराम है
नभ-धरा, सागर पाताल
है चहुं ओर बिछा विकट जाल
नभ में टिड्डियों का आतंक
तो धरा पर कोरोना का डंक
सागर में तूफान का होना
तो पाताल में भूकंप का रोना
चहुं ओर बिछा विपत्ति का महाजाल
हैं भयानक रूप धरे बैठे—
अकाल और महाकाल
ऐसे में जब चारों ओर है मरण
तो केवल घर में मिल सकती है शरण
वहां बाल-गोपाल हैं अपने
और है अर्द्धांगिनी
अपनी जीवन संगिनी
भला उससे डर कैसा!
भली इतनी कि कभी नहीं कुछ कहती
बस जरा भंगिमा अपनी दिखाती
सम्मान उसे हम देते
तो लोग डर का नाम उसे देते
जी लेंगे चलो इस 'डर' से भी डर कर
खुदा न खास्ता जिंदा बचेंगे अगर।

डॉ. प्रदीप मुखर्जी

मिली आपको वक्त की सौगात

कुछ ना करने का मौका भी
लीजिए कभी आप
यह सुनहरी मौका दिया है आपको कोविड ने
उठाइए फायदा इस मौके का
और बिताइए खूब बढ़िया समय
अपनी पत्नी और बाल-बच्चों के साथ
दो घड़ी सुध ले लीजिए अपने बूढ़े मां-बाप की भी
उनके साथ बैठकर कर लीजिए सुख-दुख की दो
बातें
बड़ा आशीर्वाद मिलेगा
शौक है गायन और कविता लेखन का
तो सुर साधिए और कर डालिए रचना कविताओं
की
साथ ही थोड़ी रुचि लीजिए साहित्य में भी
सीखिए व्यंजन नए-नए बनाना
और अपने प्रिय जनों को खिलाकर
उनका मन मोहना
चित्रकारी का हो शौक
तो बनाइए कैनवास पर रोज नए-नए चित्र
डालेंगे सोशल मीडिया पर
तो लाइक करेंगे आपके मित्र
इतने वक्त की सौगात दे दी
कोविड ने आपको
कि कल्पना में भी
कल्पना नहीं कर सकते थे आप
जहां एक ओर दी कोविड ने त्रासदी
वहीं दूसरी ओर उसने मानव को दिया वक्त
जिसका रोना रोता रहता था वह हर वक्त।

डॉ. प्रदीप मुखर्जी

क्यों जिएं जिंदगी डरी-डरी

बचिएगा कैसे गम से
गम तो है एक आदमखोर तेंदुआ
जो ताक में है दबोचने की आपको
लेकिन, डरिए नहीं आप
डर का बैठना मन में
मनोवैज्ञानिक रूप से नहीं अच्छा
जैसे, आजकल फैले कोविड का डर
मन में कर जाता जब यह घर
तो मन पर व्यक्ति के बड़ा असर डालता
जिसको चलता भी नहीं इसका पता
बदल देता यह व्यक्ति की मनोदशा
अंदर ही अंदर वह कसमसाता
इसलिए डरना नहीं
ना तो कोविड से और ना ही गम से
जिंदादिली का नाम ही है जिन्दगी
फिर क्यों जिएं जिंदगी डरी-डरी।

डॉ. प्रदीप मुखर्जी

चारों और सुख-शांति होगी सदा

बागों में बहार है
निखार है फूलों में
मुस्कुरा रही हैं कलियां
भंवें भी गुनगुना रहे हैं
है इतना कुछ बाग-बगीचों में
लेकिन शहरों, नगरों, कस्बों और गावों से
है रौनक नदारद
है सभी जगह वीराना पसरा पड़ा
क्या जमाना है आया!
कोविड चारों ओर है छाया
सब प्रकृति की है माया
लेकिन, एक सवाल क्या अब भी
हमारी समझ में है आया?
बाग-बगीचों, हवा-पानी और हरियाली
सबको रखना है हमें बचाकर
और खूब संभाल कर
हवा-पानी न हो जाए संदूषित
और पर्यावरण न हो प्रदूषित
यही सदा ध्यान में रखना हमें
वनों को नष्ट करना नहीं
तथा जंगली जानवरों का
भूले से भी भक्षण करना नहीं
मानेंगे इन्हें
तो आगे भी बच सकेंगे
कोविड जैसी और भी न जाने
कितनी महमारियों से
सीख यही हमें याद रखनी है सदा
तभी चारों ओर सुख-शांति होगी सदा।

डॉ. प्रदीप मुखर्जी

खिलंदड़ है हम

कोविड का वैक्सीन आने वाला है
थोड़े समय बाद यह लगने भी लगेगा
सचमुच यह बहुत अच्छा समय है
लेकिन कोरोनावायरस के नए स्ट्रेन के
होने का भी मिला है संकेत
इसलिए यह सबसे बुरा वक्त है
लेकिन सबसे अच्छा समय
भला कैसे हो एकता है सबसे बुरा समय?
दरअसल, चार्ल्स डिकेन्स द्वारा
'टेल ऑफ टू सिटीज' में प्रयुक्त प्रसिद्ध मुहावरे को
नए सिरे से लिखने जैसा ही है यह
आजकल सर्दी भी पड़ रही है भीषण
ऐसे में वैक्सीन आने से बंधी है नई उम्मीद
कह सकते हैं कि यह सर्दी है उम्मीदों की
लेकिन कोविड के नए स्ट्रेन के कारण
अनिश्चितता है चारों ओर
ऊपर से सुनाई पड़ रही है
बर्ड फ्लू की भी आहट
इसलिए यह निराशा भरी सर्दी है
यह वक्त अच्छा है और बुरा भी
यह सर्दी उम्मीदों भरी है
तो नाउम्मीदों भरी भी
अच्छे-बुरे और उम्मीद-नाउम्मीद
के हिंडोले में
झूल रहे हैं हम
पर नहीं है हमें कोई गम
क्योंकि खिलंदड़ हैं हम।

डॉ. प्रदीप मुखर्जी

नई दुनिया

लॉकडाउन नहीं, एक नया आयाम खुलेगा
जहाँ सब देखेंगे,
हस्त कमलों का मधुर मिलाप।
सबके मुँह पर खुशी होगी,
मोबाइल फोबिया से लिखालने की।
रोग से ठीक होकर
फिर से मुस्कुराएगी प्रकृति।।

फिर से पैदा होगा एक नया गालिब,
शेरों की सौगात लिए।
फिर से पैदा होगा एक नया वारिस शाह
एक अमर प्रेम कहानी लिये।।

स्टेटसो की होड़
नहीं होगी कुछ दिनों के लिए,
गाड़ियों के शोरूम की चकाचौंध।
नहीं होगी कुछ दिनों के लिए
फास्ट फूड की ठेले।
नहीं होगी कुछ दिनों के लिए।।

कुछ दिनों के लिए ही सही
हथियार से ध्यान हटाएंगे।
कुछ दिनों के लिए ही सही
लोगों की जानें बचाएंगे।
कुछ दिनों के लिए ही सही
भारतीयता में लौटती आएंगे।।

नदी

नदी अपने आप में
 संपूर्ण सार्थक थी...
 वह बहती थी,
 अपनी ही रौ में...
 हवा संग खेलती थी
 बादलों के साथ,
 चुहलबाजी करती थी
 वो खुश थी...
 धाराप्रवाह में बही जा रही थी
 शीतल, शांत, सलिल रंग
 मीठा पानी
 दिलाती राहगीरों को
 जैसे शरबत का एहसास,
 पर एक दिन जैसे
 सब बदल गया
 नदी ने राहगीरों की बात सुनी
 नदी को सागर में ही,
 मिलना होगा...
 तो ही पूर्ण होगी!
 नदी सोच में पड़ गई...
 उनकी और भी बातें सुनकर
 नदी अब बेचैन थी,
 सागर से मिलने के लिए
 नदी का वेग बढ़ता ही जा रहा था
 धीरे-धीरे
 मिलन की व्याकुलता इतनी...
 कि अब नदी,
 क्रोधित होने लगी थी
 इतना उफान कभी नहीं देखा था
 इस नदी में
 पुरी शक्ति के साथ उफान पर थी...
 शायद सागर से
 न मिल पाने के कारण
 और अब नदी
 सागर की चाहत छोड़
 अपनी ही दिशा में मुड़ गई...
 आप चाहे तो समझ सकते हैं
 कि नदी ने
 अलग ही रास्ता चुन लिया...

डॉ. रानी कुमारी
 हिंदी विभाग

मत करो बहाना

अभी समय है हो जाओ कोरनटाईन
 बोलो सबको मैं हूं फाइन,
 अब खूब रहो तुम ऑनलाइन,
 बाहर निकलोगे तो लगेगा फाइन।

जब तुझे हो गया कोरोना,
 फिर क्यों करता रोना-धोना,
 पहले बोला था मत करो बहाना,
 लेकिन तुमको था तो बाहर जाना।।

अभी कुछ दिन सावधानी बरतो भाई,
 कोरोना की वैक्सीन में अभी होगी ढिलाई,
 दो गज दूरी और करो मास्क की पहनाई,
 यही दो काम जरूरी है भाई।

जब मिल गयी वैक्सीन तो हो गए बेखबर,
 कोरोना गया लेकिन अभी रखनी होगी खबर,
 कब तक ताक पर रखोगे अपनी प्रकृति को?
 अभी समय है संभालो अपने आप को, नए विषाणु
 की जल्दी लगेगी खबर।

शशांक त्रिपाठी
 बीए प्रोग्राम

मृत्यु

इस दौर की मौत को
डिप्रेशन की मौत भी
कहा जा सकता है...
लोग अब
अपनी पूरी जिंदगी को
पुनः देख रहे हैं
सजीव रूप से..
अकेलापन, अवसाद, तनाव
भारी पड़ता है
पूरे जीवन पर...

हम भुक्तभोगी हैं
और इस समय को
बेहतर समझ पा रहे हैं..
हां! जिंदगी का एक कोना
खाली रह जाता है
और वह कोना
सबसे ज्यादा जरूरी होता है!
अन्दर ही अन्दर घटना
अंगों का शिथिल पड़ जाना,
अपनी ही सिसकियों को
बंद कमरे में सुनना...
तगड़े अंधेरे में
गहरी नींद सोने का
मन करना बार-बार!

मन करता है
कि मर जाएं...
नए-नए तरीके
सोचते खोजते रहते हैं..
खाली घर में,
दीवारों से बात करते
पर वे बोलती कहां है
आवाज वापस लौट आती
अपने ही कानों में...

बस यही सोचते
कुछ उनमें से
कि मेरे परिवार पर
क्या गुजरेगी
उनका कोई कसूर नहीं
मेरी मृत्यु ,
सब को अंधेरे में ले जाएगी !
कुछ ऐसा ना कर पाए
और
कुछ अपनों में लौट आए
एक लंबे वक्त के बाद...

डॉ. रानी कुमारी
हिंदी विभाग

क्या मधुवन जीवित रह पाएगा?

प्रियतमा का मधुवन प्यारा,
प्रियतमा का मधुवन न्यारा।
मधुवन की प्रेयसी मृगनयनी,
जिसने पग पग प्रेम पसारा।

जेठ मास में, गीले तन में,
बैठी थी अपने मधुवन में।
एक सर्प ने विष का कांटा,
उतार दिया उसके मृदु तन में।

प्रेम भाव में, प्यार, तमस में,
जीवन के उन्माद कलश में।
निशा ने भर भर प्रेम धकेला,
मधुवन में फूटी उर की बेला।

हाय!ये मधुवन की मृगनैनी,
जीवन की जो अभाज्य श्रेणी।
जलावृष्टी के थमते ही,
हाय,चली गई मृगनयनी।

भोर भई तो बेला खेली,
उस ठौर पे,जहां थी फैली।
प्रेयसी की केश – लताएं,
शीतल इतनी, उच्च चमेली।

मधुवन नित दिन यही है गाता,
चारों पहर अब यही सुनाता।
“हे खग ,मृग !हे मधुकर श्रेणी!
तुम देखी मेरी मृगनैनी?”

भोर होते ही मधुवन जाती,
मधुवन को निज बात बताती।
राग – प्रेम व गीत सुनाकर,
मधुवन में दिन भर रह जाती।

विषाद में डूबे मधुवन का,
दर्द ना कोई बतलाएगा।
न बच्चन, न पंत,न दिनकर,
कोई ना इसको कह पाएगा।

तरह – तरह के तोहफे लाती,
तरह – तरह का बोध बताती।
गोधूलि के बाद वो पगली,
मजबूरन घर वापस जाती।

मृत शांत इकमात्र गगन में,
उजड़े से अवसाद चमन में।
क्या मधुवन फिर से लहराएगा?
क्या मधुवन जीवित रह पाएगा?

प्रेम है सुंदर,प्रेम है शक्ति,
प्रेम है प्यारी वारिद मला।
जैसे पीनेवाले को लगती,
प्यारी उसकी ‘ मधुशाला’।

मधुवन प्रताप सिंह
हिंदी (ऑनर्स)

नितान्त अकेलापन

ऐ मेरे प्यारे पन्ने!
कैसा है?
आज तेरी याद आयी,
तो चला आया
दवात लेके
क्या?
हां,हां, सच में
तेरी याद आ रही थी!
अच्छा ठीक है
नहीं करता बहाने,
सीधे बात पे आता हूं।
दरअसल,
मैं अकेला महसूस कर रहा हूं।
बहुत ज्यादा अकेला।
वैसे कमरे में दो लोग और भी हैं
पर पता नहीं क्यों
एक अजीब शांत—सा
खालीपन है
मेरे अंदर।
जैसे एक खाली दुर्ग में कबूतर,
एक तोता विशाल बरगद के ऊपर,
और यहां मैं।
लोग तो कई हैं
पर कोई भी नहीं है।
तू सोच रहा होगा कि मैं
पागल तो नहीं हूं
इतने लोगों के बीच भी अकेला?
पर मैं हूं
एकदम अकेला।
बिल्कुल उस बैल की भांति
जो अपने साथी के मरणोपरांत
माची का अकेला वाहक है
जो आंखों से धार बहाता

और अकेले भुस चबाता।
नितान्त अकेला,
उदास,
और गमगीन।
ऐसा ही कुछ हाल मेरा है इस समय
अकेलेपन में डूबकर,
मैं निकल जाता हूं भ्रमण पर
और खुद को पाता हूं
एक दार्शनिक,
और सोचता हूं
अरस्तू तो मैं ही हूं
मैं ही सुकरात,
मैं ही हूं विक्रम
और मैं ही बेताल।
और करने लगता हूं कल्पनाएं
समयों की
कई बीते समय,
कई अनंत समय,
कई शांत समय,
कई ज्वलंत समय।
हर समय में अनंत समय
और हर समय में
लोग कई
शोर शराबा बड़ा विशाल
बातें उनमें कई कई
हर शोर में बात छिपी है
और हरेक बात सही
आंखें खोली जो मैंने
तो देखा कोई नहीं!
बस तू मैं और
नितान्त अकेलापन।

मधुवन प्रताप सिंह

दीवार - ए - भगवा

अब रंग ओढ़ लिए हैं हमने
दीवारों के
और पहन ली हैं मालाएं
कत्थई, गोल रुद्राक्षों वाली
और हाथों में भी
दो चार बार घुमाकर
गोल - गोल।

लुंगी की जरूरत नहीं है यहां पे,
न ही धोती की
जीन्स पैट में भी काम चलता है।
बस एक - दो चीजें याद रखनी है
जैसे कि,
ओम शांति! हरि ओम!
“गऊ माता की जय!”
और हां!
“जय श्री राम!” - ये तो
बस अधरों की कोर पे
रखे रहें,
किसी भी वक्त
जरूरत पड़ सकती है।
और जब ऐसा कहें
तो मुस्काते हुए दोनों हाथ जोड़ें,
और यदि आप
मस्ती में
चिल्लाते हुए
हाथ उठाकर हवा को चीरते हैं
तो आप ‘भक्त’ की उपाधि
प्राप्त करेंगे।

चलो! दाढ़ी तो काट ही ली हमने
और मूछें भी
अब आने लगी हैं।
तो कोई दिक्कत नहीं होगी बाहर
और अगर जनेऊ बाहर लटकता
नजर आ जाए,
तो तो फिर
सोने पे सुहागा।

पर एक मिनट,
“ये जनेऊ की विशेषता क्या है?”
“क्यों डाला जाता है ये?”
ऐसे ख्यालों को भी ना आने दें,
और यदि आते हैं तो
कलावा और भगवा टीके की
मूसल के तले धरके
कुचल दें!
अब तो आराम है सब
क्योंकि हमारी दीवारों का रंग
‘भगवा’ है।

मधुवन प्रताप सिंह

यामा रानी और सुबह

लाल सुआ की देह – सरीखी,
संग बुलबुल की मीठी बानी ।
भोर के नभ में कभी पधारो,
तुम भी ओ यामा रानी!

रात को नभ में खूब गुजारी,
हैं तुमने अपनी रातें ।
दिन धरा पर कभी गुजारो,
उषा से करके बातें ।

लाल भोर पे इतने गाने,
कविता, नज़्में और कहानी ।
लाल स्लेट – सी लगे भोर ये,
तुम भी देखो यामा रानी ।

लाल भोर ना कभी है देखी,
तुमने ओ यामा रानी!
ऐसा क्या ही बैर रहा है,
जो ऐसी मन में ठानी?

डगमग – डगमग भाग रही हो,
जान छुड़के सुबह से अपनी ।
लगता जैसे कोई भारी,
आई तुम पे आगजनी ।

शायद कोई बैर रहा हो,
नीले नभ की लाल भोर से ।
उस छोर से फैल रही हो,
सिमट रही हो इस छोर से ।

लाल आसमां, लाल ही बादल;
लाल से ही तुम चलती हो ।
यामा रानी सत्य बताना,
क्या लाल रंग से डरती हो?

मधुवन प्रताप सिंह
हिंदी (ऑनर्स)

.....ट.....

हवस के दरिंदो ने आज फिर एक बेटी को मारा है
दोषी बेखौफ़ घूम रहे है ये कैसा कानून हमारा है

आसिफ़ा से मनीषा तक सबके साथ यही होता है
इंसाफ़ की गुहार लगाकर सबका परिवार रोता है
काट दी जुबां बोल न पाए, तोढ़ दी हड्डी चल न पाए
मिलता नहीं इंसाफ़ कभी, दोषी चैन से सोता है

चीखती हुई आवाज़ों ने हमको, इंसाफ़ के लिए पुकारा है
दोषी बेखौफ़ घूम रहे है ये कैसा कानून हमारा है

आज फिर लोग स्टेटस लगाएँगे
आज फिर मोमबत्ती जलाएँगे
दो-चार दिन इसकी बात होगी
लोग फिर से भूल जाएँगे

कुछ ऐसे है लोग यहाँ के कुछ ऐसा ही व्यवहार हमारा है
दोषी बेखौफ़ घूम रहे है ये कैसा कानून हमारा है

बेटी दिवस मनाने वालों अपनी बेटी कैसे बचाओगे
आवाज़ उठाओ अभी मौका है वरना बाद में पछताओगे

फाँसी दो ऐसे हैवानों को यही हम सबका नारा है
दोषी बेखौफ़ घूम रहे है ये कैसा कानून हमारा है

मो. सिराज

Desh 2020-21

English Section

Editor : Sh. Saswat Bhattacharya
Student Editor : Shan Kumar

CONTENTS

1. Covid-19-20-21: Counting the Lessons Learnt Dr. Ajanta Dutt
2. Doctor-Patient Relationship: A Challenge During Covid-19 Dr Subasini Barik
3. Lockdown
4. Coronavirus Glossary – Explosion of New Words Mahak Meena
5. Covid- 19: A Time to Reciprocate Lois Hanna Markose
6. Pandemic, A Review Kishika Chopra
7. Our Enlightened Buds: An Inspiring Memory Dr. Subasini Barik
8. Virus too does have a 'heart' Dr. P. K. Mukherjee
9. Musings Preeti Dewan

In Lieu of an Editorial

Rabindranath Tagore (1861-1941) in his long essay, "The Meaning of Art", wanted to emphasize on the presence and necessity of "excess" as the sign of all positive human creative expressions, invoking a verse from the Atharva Veda. Tagore received, as believed, the nature of God as a personal one as He is compelled to create, often in superfluity. The "incessant explosion" of life continues on a daily basis, almost unobserved, to carry on with the rhythm and the ritual of the perpetual creation of the infinite, of which we are a part. By the way, this is not just a philosophical idea. As we pause and look back at the recent past, it is inevitable that an unimaginable "excess" of ruthless march of unstoppable suffering pushed us to the corner of survival.

The overwhelming dark shadow of the pandemic worldwide reminded us of the vulnerability of our robust, well-guarded life and left an irreparable dent on the image of our collective achievement as the most intelligent being on the surface of the earth. It has forced us to rethink the expansion and the limits of our acts.

Literature is that art of human self-expression that creates apparently a narration of an imaginative reality to shadow-represent the truths. The truths change as the perspective to imagination alters. But when the excess of an experience grasps the

entire humanity, literature becomes a natural tool to record it for the sake of one truly universal human tragedy. The dark hours are far from being over and we are still fighting with our machinery of intelligence and a sense of human consideration to win the battle. The experts warn us now and then that these half-baked days could well be our permanent mode of being from now on.

But are we really afraid?

The answer is no, we are not. Instead, we are prepared. We wish to be better equipped to comfort and prosper.

For what end?

To recall and continue with the spirit of boundless expression of life and creativity.

Will we be able to forget and overcome our loss?

The answer is both "yes" and "no".

How?

Because of the passage of time we are left with here. As humanity, we have come past great calamities, plagues, earth shaking wars. We have come past the intensity of our past grieves, the loss of our near and dear ones. We are still alive with the hope of nurturing the day for a better tomorrow. That is why we are creating memories to live by, surpassing the ones that stopped us for a while.

In the long run then, what remains?
"Words, words, words."

Our experiences of life ultimately condense themselves into a narration, the stuff that literature is made of. We survive a moment and then the moment survives in narration/literature for ever. In the end, we recall, recollect with care all that had been, but settle down, like the afternoon dust, with the air of their narrativized memories.

We decide to move on. As the night matures younger, we engage in creativity and soak ourselves in the profusion of life and self-realisation. Come what may, we are meant to assume happiness and joy as the Upanishads reminds us,

"Anandyadhyeva khalvimani bhutani
yayante."

(Translation: The universe has come out
of joy)

After all, "the poetry of earth is never dead" as the English poet rightly understood even when confronted with a premature death. This poetry, the finest of human imagination and expression of life, is alive to all those who can sense, feel and appreciate the presence of the Creator in every inch of this great manifestation. The pulse of life lies in its ceaseless daily participation in the creation of evermore beautiful, enduring narrations. We would continue to live and thrive, even if our bodies do not.

Saswata Bhattacharya

Associate Professor, Department of English
Deshbandhu College, University of Delhi

Covid-19-20-21: Counting the Lessons Learnt

The first week of March, 2020 was the last normal week that we had before a totally unforgiving virus went on rampage across the globe. The last fun-filled day in college was celebrated with a gorgeous Staff lunch for the coming Holi festival. This was followed by a relaxed sing-song of old Bollywood favourites with everyone joining in. Students who peeped through the door to not hand in assignments that were due were merrily told to return after the Semester Break. There was a nostalgia hanging in the air which didn't merely come from the music or the chatter. People deliberately postponed going home for some more laughter, some more Hindi movie hits. Did we know somewhere in our subconscious minds that this was an afternoon that would not come back for a long while?

A year has passed since the outbreak of the virus during which we have indeed become older and considerably wiser as stories both tragic and hopeful have filled the news on a daily basis. The more optimistic ones have sometimes been downright funny such as a news item in those early days which claimed that a couple in Western India had been blessed with girl-boy twins. They had named them Corona and Covid. I remember thinking that the babies would probably grow up quite resentful of the parents' choice, and make a beeline to the courts for a name change as soon as ever they could. Perhaps

they would call themselves Karuna after the much needed sentiment of compassion, and Kovind, after the Indian President.

In those early days of the lockdown, we could not have imagined the dramatic intensity and complete halt of all travel plans. As the last Air India flights took off to rescue the stranded Indian students from Wuhan, other international flights brought back friends and relatives from distant zones. It was repeatedly discussed on phones and WhatsApp messages-how did the virus spread so fast? Was it through academic travel, business travel or simply the mindless travel of an international, restless community for whom the world had become an oyster that had to be sampled as frequently as possible. Who cared if plane trips and resort holidays at incessant speed made for carbon foot-printing which was going to bear ill for future generations. Whoever could do it, did it-moving from place to place, discovering country after country with its untold treasures of people, sights and food. In the latter part of 2020, when travel limped back again after the closure, there was an underlying message that it must be for necessities only. It was now accompanied with tests and documents, masks and headgear, social distancing and fear.

In those early days of the lockdown, two interesting incidents near my home are etched clearly in my mind. People were of course getting quite claustrophobic as they

were confined in their houses 24/7, and one young lady found a good reason to go out every evening. An amusing poster of several dogs holding a conference on "where have all the humans gone" was doing the rounds on social media. Thus, this young lady decided that indeed the dogs in our neighbourhood were starving, and she launched a WhatsApp campaign to feed them. Everyone, up and down the various lanes, was asked to give her their extra chapattis for the street pets, and she would go out on a long walk to collect these in order to feed her canine friends. This idea was appreciated for a while, and then people stopped talking about it as is the usual way for any news item to fizzle out.

Another lady with connections in a hospital suddenly put out a table in her garden and dispensed sanitizers and oxymeters for a price all day long. She had plenty of company and she probably was able to carry out her little commercial enterprise for quite a while until the sun smiled down too brilliantly, compelling her to retreat into the air-conditioned comfort of her home.

A tragi-ironic incident also started on the same WhatsApp group a few days later. This time another young lady posted the picture of a beautiful, American girl lying propped up in a hospital bed, supported with tubes and bottles. The caption read that her sister-in-law was in New York, pregnant-and "intubated." We felt quite devastated at the thought of the mother struggling for her

unborn child, and many a prayer was said for her that day. The RWA group filled up with more and more messages of sympathy every hour. Finally our friend appeared online late at night and said, "Oh that's not my Bhabi. I found the picture on the 'net. It's a true story." We were very relieved—and immediately felt guilty about being so. A life was ebbing away, but we could breathe because we did not have even a nebulous connection to the hospitalized girl. Indeed, such is the irony of life.

When classes went online and we began to see our students again, we discovered the joys and sorrows of remote teaching. Only a handful of students would un-mute themselves and answer questions in class. I soon learnt that the others may not be there at all, however prominently their profile pictures were displayed on my screen. My real students could be sleeping while I was talking myself hoarse to a set of batman, superman, fairy tale princess images who could become animated any moment. The human counterparts were perhaps playing games like PUB-G or having lunch while watching a movie. My virtual (or should I say virtuous) students reminded me of T.S. Eliot's poem, "Macavity the Mystery Cat"-when I was looking for them, they were just "not there!"

We were learning all the time and 2020 gave us our first Open Book Exams (OBE, online mode). We learnt how to mark papers online and check our dashboards for the lilac-coloured

spreadsheets from the University. Indeed what a pleasure it was to see the horizontal columns slowly turning green. Sometimes I was unsure whether my click of a button had sent the papers to the CEC officers or not. Then one day, whoosh...they were all gone and my dashboard was empty of lilac or green. That indeed was a major relief. On the flip side, it was a great deal of fun selecting and presenting poetry readings and film clips to the students on-screen. More recently, it was a very pleasant experience to watch student presentations after each lecture on Homer's great epic. It felt like switching on consistent episodes of a newly made serial of the Iliad in 2021.

One unfortunate incident was when an intruder entered the virtual classroom. It was a name I did not recognize and initially thought the person was just trying to participate in my class discussion, telling me he could not understand what I was saying. But soon he started playing his own music very loudly—and I did not know how to get rid of him. It was mercifully the students who came to my rescue as so many of them are certainly much more tech-savvy that I am. They got rid of the intruder and told me how to delete such unruly elements in the future. They devised a pattern for how they would check on their incoming classmates by name and roll number that appeared on the screen. Subsequently, similar incidents have not been so nerve-wracking.

It has been long months of learning how to deal with the Covid-19 situation,

especially as it is heightened by a plethora of news articles, scientific data, conflicting opinions and quite a bit of fake reports all the time. The challenge is not just to fathom what the virus is doing and how to contend with it, but also how to manage life in the supra-normal. When '19 sank into the grave troubles of '20, we thought we had had entered the most abnormal phase of our lives; but we learnt how to cope and live with... perhaps even enjoy the new normal. Now with the vaccines rolling out, there is a lot more learning we need to do. We must accept that the virus is here to stay and we are living in the zone of the supra-normal—combating the attacks of an enemy that must be conquered ultimately.

All this was before 2021 began... and 2021 began well. It seemed that we had defeated the virus. We had started going out, meeting friends and relatives, and trying to be cheerfully normal with two days a week at work. And then, suddenly it all began again. A terrible April turned into a torturous May when the Second Wave left not a family in Delhi unaffected by losses, sorrows and suffering. We do not know what more this year will bring...What it can bring. We are still reeling in the shock wave of the last months, the panicked anxiety and wakeful nightmares of sleepless nights. Yet we hope as we fold our hands in collective prayer—for the city and the nation, and the world.

Dr. Ajanta Dutt

English Dept., Deshbandhu College

Doctor-Patient Relationship: A Challenge During Covid-19

Covid-19 pandemic 2020 was an eye-opener for the entire world. It made us learn a phenomenal experience, which may not be expressed by mere words, but can be felt and realized in many different ways. When the whole world was completely engrossed with their self-centric activities, suddenly this unexpected corona forced everyone to lead a deserted life. What an irony! A manual environment suddenly converted to a virtual platform, as if the over-burdened life took a pause for a while for its own sustenance. This crisis was man-made but beyond any human control. During this process of lockdown and physical distancing, we realized the importance of our surrounding and learnt the beauty and relevance of values in our life. Corona helped us connect globally on virtual platform and also made us realize our limitations of life. Covid-19 left a significant scar in almost everyone's mind due to its impact in all sections of the society. One of the most affected areas of this pandemic was the medical sector which is not only the most essential one due to its own nature that serves the society, but also been worshipped by the public as holy messengers for saving the lives of people during this unprecedented period. In between these two major scenarios of medical sector, many problematic zones are there to be resolved and to be analyzed from multiple angles.

Let us revisit those days for a while.

On 31st December 2019 WHO was informed about the cases of pneumonia of unknown cause in Wuhan city of China. A novel corona virus was identified as the cause by Chinese authorities on 7th January 2020 and was named as Covid-19 virus. On 30th January 2020, Director General WHO declared the novel corona virus outbreak to public health emergency. By mid-March 2020, 40% of globally confirmed cases and 63% of global mortality from the virus was reported. Because of the highly contagious nature of the disease WHO declared few restrictions like maintaining physical distancing, wearing mask and constant sanitizing as a precautionary measure. This disease made the whole world suffer due to many reasons.

1. Because of the highly contagious and infectious nature of the disease, the healthcare unit got overburdened and compelled to introduce new modalities for patient care like telemedicine that guaranteed the possibility of remote assistance, but made the skin-to-skin contact impossible.
2. Because of the basic infectious nature of the disease and implementation of social/physical distancing as a remedial measure, doctors/health care personals were expected to act more humanly and responsibly in addition to their basic duty as health worker. Hence Doctor-Patient relationship became the

center of focus during the period particularly for this deadly pandemic.

3. Hospitals and ICUs are always complex units of health care system where all kind of patients enter on everyday basis. Due to the outbreak of the pandemic a division is made amongst all such health care units for various reasons. The units that served pandemic patients and the units serving all others were kept separated strictly, again keeping in mind the safety of both the public as well as the concerned persons. Pressure of work was exceptionally enhanced due to the increasing number of patients and simultaneously the mental pressure got multiplied due to both personal as well as professional demands.

Such aspects not only created hindrances for medical care but also opened doors for skeptical zones in public mind. Reasons are not one but many and illustrations are innumerable based on individual case histories.

All the medical ethics codes, going back to ancient "Hippocratic Oath" and *Charaka Samhita's* "Oath of Initiation", stress that the first and foremost consideration of the health care professional must always be the best interest and welfare of the patient. During the serious health disorder, both the patient and the family always go through a major endangered fear factor which is not only stressful but also dangerous. Trust

between the two could reduce the fear factor as well as risk of any further health disorder. This trust between the patient and the medical person can either be justified or betrayed. How things are moving these days is not unknown to public. It is equally essential to mention here that mutual respect and maintenance of dignity during the treatment is equally expected from each other for retaining both mental and physical health. That means any kind of breaching of trust between the doctor-patient relations is always unhealthy for both the parties.

Doctor-patient relationship has always been very challenging inside Intensive Care Units with its restrictions and type of care. Other than the ICU unit there always happens to be an 'information gap' between the patient/ his attendants and the health care persons. The responsibility of the health professional is to communicate the essential information to the patient in such a language that the person can easily understand and follow. The task in this context is challenging, responsibility covers life risk and the relation needs to nurture a holistic approach due to its own nature in normal health disorder factors. Outbreak of Pandemic made this issue even worse to its effect. Earlier inside ICU the attendants of the patients were available outside the ICU for any kind of assistance/emergency in addition to the normal care aspects. But covid patients were completely left to the mercy of doctors and other health care persons without having any one around

whom he/she can express her concern or pain. Hence the responsibility of health care professional including the doctor became extremely challenging including their duty and work force. At this stage they are not only a mere professional like doctor, nurse or attendant having their own typical designated duties, rather they work as multitasking units in addition to their task of health care units. They normally are expected to take care of:-

- Treatment as well as one to one care of the patient.
- The expectations of Health and Welfare department as and when assigned to them.
- The expectation of the family of the patient who left isolated at hospital without having any familial attendant of his/her own.
- The expectation of the Government Policy makers being an employee.
- The mental/psychic concerns and issues of the patient including the fear factor that arises due to the unknown and unpredictable/unprecedented episodes arise during this treatment.

Expectations are endless and challenges are innumerable, but pros-n-cons analysis is really miniscule at this situation. In case of Doctor-Patient Relationship (DPR) we debate over the issue normally when there is no compatibility in what we expect from a doctor and what

we get in reality. We get information about the inner layers of hospital during the treatment only from the patient out of danger zone. But in case of patient who lost life during treatment, the health care professional is a major part of blame game most of the time. Their efforts/care/concerns along with their duty are not recognized normally at these circumstances. It is because the normal human beings do not have an access to this health care unit due to the basic nature of the disease, due to the law-order system during this high-risk zone and also due to the personal safety of the individual which is equally essential. Let me focus on three aspects of DPR.

How was the relation between doctor/health care personal with their patients earlier? How is it now during this high-risk zone? And finally, how is it expected to be?

As per the code of conduct of Medical Ethics, *'the health of my patient will be my first priority.'* Patient should be the priority for a doctor and all other aspects of personal profit, reputation, Government policy, Departmental requirement or any other related issues should be secondary. The deciding factor for treatment should always be for the best interest of the patient. In DPR a compatible zone of trust, confidentiality, truthfulness and honesty need to be maintained. Medical paternalism is another key factor in this relation. Irrespective of any caste/creed/religion/name/fame/power/position/livelihood/financial condition, any and every patient

should be treated with similar sensitivity and seriousness. Even World Health Organization defines health as a state of complete physical, social and mental wellbeing and not simply absence of illness and disease. Bond between Doctor-Patient is mostly a bond of empathy which is based on their oath to save life. But today this relation is under question mark due to many factors. The major among them is the gradual disorder in health care system. For example: even the access of ICU is not decided as per the intensity of the need of the patient, but on many other secondary factors. Power-game as well as self-centric attitudes are of major concern. Even though we observe a consistent decline in health care unit, I am sure empathy along with trust, communication, understanding and mutual respect collaboration will definitely create wonder in DPR irrespective of all odds.

Earlier the DPR was confined to the treatment of a patient along with his/her psycho-physical related issues. Friends and family were around the patient for personal care and concerns. Health care unit along with doctor were accountable for treatment related issues. Hence the doctor-patient relationship for any other disease as compared to Corona are visibly different. In Corona the Personal Protective Equipment (PPE), telemedicine and fear factor of patients created maximum disaster. We normally expect empathy from doctors and trust from patients. But when both are

sufferers at a particular time then the decision-making grounds get disturbed. Due to contagious nature of this disease patients are left alone with doctors/health care personals and the family expects all type of care from the hospital persons. Due to the nature of this disease, number of patients were increasing with a fix number of medical care unit. Overnight increase in medical care unit or number of doctors was next to impossibility. Hence pressure was multiplied along with the risk factor even with the health personals. Even patients these days complained as if they are being treated as an object while being examined, tested, diagnosed and medicated. They were not being treated as persons with respect and consideration. Such complaints are also not baseless due to several other factors. But the additional pressor with the increasing number of covid patient created many unprecedented physical as well as psychological problems. Media and press also created havoc with each case of deceased person.

In addition to the various expectations of the public for their own patients, there need to have similar or more respect and empathy for the health care workers by the public and the press, which would work as a motivational force. Normally, we expect humanity and quality treatment from the doctors/health workers for the patients and expect them to work day and night as machines which is neither justified, nor appreciable. The stretched staff and resources

can certainly not always deliver high quality care and treatment. Sanctity of life should be understood and applied uniformly to both. Both the lives are equally precious for the family and the society. But during this corona period the risk factors are exceptionally high in case of these health care units who work as the frontline warrior directly with the patient when no family member even comes forward to take the personal care of their own patient. A sensible patient can have an idea that how seriously these health care units work in and around the hospital. Challenges are many but the question is how to address them. In DPR during Covid both are equally in high-risk zones. Whom to address and give priority? A highly challenging question. Ethically both need to be addressed with equal importance. Even in between doctor and patient when the Govt intervenes with various policies, the priority factor gets imbalanced. In such crucial situation we need to think about some uniform norms to safeguard their interest, so that the fear factor develops in both sides will be minimized and trust and confidence on each other would develop to protect each other's interest. This is how we can address even the hidden challenges of any such diseases.

Dr Subasini Barik

Associate Professor
Department of Philosophy
Deshbandhu College,
University of Delhi

LOCKDOWN

Reading, kabhi writing,
Eating, kabhi dieting,
Fighting, kabhi pining,
Talking, kabhi singing,
Staring, kabhi watching,
Guiding, kabhi hoping,
Whining, kabhi praying,
Handwashing kabhi sanitizing,

Naye tajurbe karte karte
Lockdown nikal hi jayega parivar mein,
Kuch din to guzaro chardiwar mein

Kabhi bedroom, kabhi living room mein,
Kabhi kitchen, kabhi dining room mein,
Kabhi balcony, kabhi terrace mein,
Bachte bachate corona-mukt reh jaoge
parivar mein
Kuch din to guzaro chardiwar mein

Kabhi online, kabhi offline,
Kabhi TV, kabhi dialling
Kabhi PM, kabhi CM,
Kabhi ghanti, kabhi tali,
Kabhi masking, kabhi warning
Kabhi chiding, kabhi advising

Social distancing karte, rakhte,
Guzar jayega waqt sansar mein
Kuch din to guzaro chardiwaro mein

Kuch din to guzaro chardiwaro mein

Coronavirus Glossary – Explosion of New Words

As the world comes to grips with the "New Normal" coronavirus has wrought on our towns, cities and communities hence society face the challenges of figuring out how to talk about the impact this virus is having on our everyday lives.

Coronavirus has led to the explosion of new words and phrases in English as well as in different languages. This new vocabulary helps us make sense of the changes that have suddenly become part of daily routine.

New terms include - "Self-Isolation", "Pandemic", "Quarantine", "Lockdown", "Social Distancing", "Keyworkers" and "Asymptomatic" have increased in use , while Coronavirus/Covid-19 neologisms are being coined quicker than ever.

These include - "Covidot" means someone ignoring public health advice, "Covideo party" means online parties via social networking sites like zoom or skype and "Covexit" means the strategy for exiting lockdown, while coronavirus has acquired new descriptors including "the rona" and "miley cirus".

Other terms deals with the material changes in our everyday lives, from "Blursday" means an unspecified day because of lockdown disorientating effects on time, to "Zoom bombing" means hijacking a zoom video call, "Work from Home(WFH)" means employee is working

from their house and "Quaranteams" means online teams created during lockdown - it helps people deal with changing work circumstances.

Other terms such as "Social distancing" means maintaining greater space between on self and others, "Novel Coronavirus" means a new strain of coronavirus, "Pandemic" means a worldwide spread of an infectious disease, "Personal protective equipment (PPE)" means an equipment worn to minimize exposure to hazards that cause serious workplace injuries and illnesses, "Remdesivir" means an investigational antiviral drugs, "Screening" means the act of verifying the symptoms, "Self quarantine" means act of refraining from any contact with other individuals for a period of time, "Vaccine" means a biological preparations of organism that provides immunity to a particular infectious disease, "Ventilator" means a machine designed to move air in and out of lungs for a patient, "Symptomatic" means individual showing symptoms of covid-19, "Super-Spreader" means a highly contagious individual who can spread an infectious disease to large number, "National Emergency" means a state of emergency resulting from global threat of the pandemic, "Intensivist" means a physician who specialise in treating patients who are in intensive care, "Index Case" means first documented case of an infectious disease,

"Index patient" means first patient infected with a disease in an epidemic, now these terms becomes common in our everyday times.

Covid-19 has not only changed our vocabulary but also made us use of language more carefully.

**GREAT SOCIAL CHANGES DOES
BRING GREAT LINGUISTIC
CHANGES**

This pandemic made us realise, how inextricably linked they are- the world, language, each imprinting on each. We are changed by the world,by language, and all at once they too are changed by us.

Mahak Meena
BSc (Hons) Botany

Covid- 19: A Time to Reciprocate

There is an interesting story in the Bible. It narrates the fight that took place between the mighty warrior Goliath and a shepherd, David. Goliath was a giant, and nobody ever went up against him. David on the other hand did not even know how to hold a sword. However, the legend has it that David went on to defeat Goliath with just a catapult and five hand-picked stones.

If we ponder over this and try to apply it to our present situation, we will be able to understand what the story actually means. The past one year was full of realisations. The most important one of them was understanding how small and insignificant human beings are in this entire universe. It is ironical how humans, with the Goliath-like strength and confidence can be shattered by something as small as a virus. It is invisible to the naked eye but mighty enough to take the lives of thousands of humans. It is indeed interesting how humans view themselves as the most superior of all beings on the evolutionary ladder when in reality they are nothing but a grain of sand in an enormous desert.

Talking about realisations, the fact that a virus managed to teach humans lessons that no one else could, is commendable. Lessons such as these were repeatedly heard before, but were always ignored. The pandemic in a hugely critical manner made the world understand how unimportant man-made structures really are.

We can take the example of religion. Something that could drive people to killing each other in rivalries and riots, did at one point come to an absolute halt. Nobody even cared to go to the temples, mosques or churches. This reflects the kind of supreme importance that had been given to these institutions. Thus it was clear that religion in its present form is far from the true meaning of God and spirituality.

Another point to focus upon was the pace at which the social and economical differences were starting to fade with the coming of the pandemic. It reiterated the idea that a major force like this would hit humanity as a composite whole. It will not show any bias towards the rich or poor, the privileged or unprivileged. Hence one's materialistic assets would help only to a certain level. While discussing about the lessons learnt, the topic of environment cannot be missed out. What came as a disaster for humans, took the form of a blessing for nature. Once the daily mayhem came to a stop, nature started healing itself. This suggests that even if concrete steps are not taken for the rejuvenation of the environment, one should always try to at least not cause any physical harm to it.

Along with nature, one other aspect which needed much attention was the importance of a healthy lifestyle. Before the pandemic broke out, the people who carried sanitizers or wore masks were considered

paranoid by almost everyone else. However, in the early part of 2020 people were willing to pay any amount of money for a bottle of sanitizer and a mask. Similarly, talking about mental health issues or consulting a psychiatrist for personal problems was scrutinized negatively by many. It was only after many people started losing themselves to this disorder that the matter gained some substance. Finally the pandemic helped everyone to take a pause and reflect upon their own lives. It is quite easy to lose sight of who one actually is in this chaotic world. The Covid months thus enjoined people to enter into a mode of self introspection and eventually they became aware of their true selves.

These things having now been said, we may assume the world has gone through many major troubles and it will continue to do so. Covid 19 will surely not be the last obstacle that mankind has to face. Thus the mistakes that were committed this time should not be repeated. It should also be noted that although problems will continue to occur, if the world unites, anything can be tackled well. A prime example is the discovery, manufacture and inoculation drive for various vaccines all over the world.

However, such goals can only be achieved through the values of empathy and brotherhood. It is high time for people to let go of their selfish demands and start to think as a community, a global community. This tough period revealed that no one could lead an isolated life. Every person in

this world is connected. Therefore for the upcoming challenges, unity would be humanity's biggest weapon. Also, in this fast-paced world, absolutely nothing is constant. Hence one should try to be content in the simple sweet moments that life provides rather than waiting for a big change. We need to be focused on making the present fruitful so as to have a better future.

Lois Hanna Markose

BA Political Science (Hons)

Pandemic, A Review

In the blazing mid-day heat,
Everyone again shall meet.

The desire to live at its cost,
Yet many lives are uselessly lost.

Not knowing if things will come alright,
Still we're ready to fight and fight.

To ensure physical distance is maintained,
So much daily love is drained.

Hearts are still filled with greed,
One might miss out on their need.

Yet we've imprisoned ourselves in a cage,
And spend our days in solitary rage.

Every person has to try uniting,
To end up again a social being.

Kishika Chopra

BA(H) English 3rd Year

Our Enlightened Buds: An Inspiring Memory

"Sanjeevani-2018", the Annual function of Botany Department, Deshbandhu College, University of Delhi, was like every other annual functions of the College, full of multifarious programs like lectures, competitions, entertainments, prize distribution ceremony and many more. I had been invited to judge one of the event which was probably very common to all Botanist, but the reflections made by each one of the participants was not only unforgettable but also very inspiring for me as a teacher.

Date:- Sanjeevani-2018

Place:- Botany Department, Deshbandhu College

Event:- Leaf Painting Competition

Every student participants were given a Peepal (Ficus) leaf to paint on their own without any specific theme. At the end of the competition they were judged on the basis of the painting prepared by them as well as the supportive story narrated by each one of them to support their creation. The whole episode prompted me to bring a few of them in front of all of you. The depiction as well as the narration by a student less than twenty years of age definitely needs a special attention by all of us who claim to be the educators of the society. The revelations are not only praiseworthy but truly inspiring.

1.



Male and female both are integral part of the society and shares their valuable contribution to the growth of this universe as a whole. We all owe our existence to that divine power but directly we owe our existence to our parents. Every new life is a creation of divinity. During this process a mother gives birth to a child after carrying the fetus in her womb for long nine months, who is a part of their physical form. Physically the mother carries the fetus in her womb since conception and bears all pain, but mentally the father is always with the mother and fetus together till the birth of the child. After the birth of the baby both parents share, care and feel the presence of their own living form every moment and try to protect their own baby from all odds. Each moment is precious, challenging as well as pleasant for both the parents. It is a misconception that mother takes all pain about child's birth and father feels nothing in comparison to the mother. The above painting is a beautiful depiction of how the baby occupies the mind and brain of father in its entirety.

2.



Light and darkness are complimentary. But it has a great impact on the Universe system. Universe is comprised of all living and non-living beings of which man is considered to be the best. But in reality it is not the case. In waking state the person plays a negative role intentionally, i.e. by allowing/doing/creating negative acts like corruption, performing mostly self centered acts and exploitation and also by not contributing voluntarily for other's well being. Rather he promotes all kinds of destructive acts in the name of developments that yield in environmental pollution, health hazard and many such things as a barrier to the nature. On the other hand nature plays a major role to safeguard the interest of the Universe. It works day and night without any break, such that during night when the human beings fell asleep and their negative contributions take a pause, nature's contribution becomes powerful and contributes positively by generating oxygen and utilizing carbon dioxide that provides vital energy of life to all of us. The above painting paints beautifully how life sustains due to nature and conveys a strong message for human being to rectify themselves for the betterment of the environment. Our

young artist expresses that the nature should be considered as better than Man.

3.



Education is the main source of knowledge. It creates awareness and spreads positivity. Since childhood we get educated by different sources including our mythology, epics, and through the books of science, commerce and humanities. From books only we collect information regarding our environment, our society, and our national and international events. These are our real friend of life that shows us a right way to achieve the goal of life and provide mental strength to overcome the negative impacts. The artist communicates here through his painting as if our whole life is a book in which our past experiences contains some pages and rest of the pages are left for the future days till death. With a reflective mind through introspection we can analyze our past from the previous written pages to create a bright future for our own. The book will be available for all to judge the overall performance of the personality. Man is the maker of his own destiny. By analyzing the previous pages from the book of life we can eliminate our wrong doings and contribute more significantly for a better future. I sincerely

salute to the thoughts of our young mind to think and paint such an enriched thought of life.

4.



Day & night, brightness & darkness, positive & negative are complimentary to each other. Darkness normally portrays the negative aspects or the devastated states of nature like storm, snakes, drowning trees that highlight the disappointment and despair. Bright side provides the rays of hope, sustainability, cherished life with blooming flowers, flowing River with musical journey of life, flowering trees with singing birds, celebrating life with peace and tranquility. Both aspects are painted nicely in this leaf. Both contrasts have its existence in the journey of life. Hence getting disappointed in pain and feeling overwhelmed in joy should be avoided. With the experience of both pain and pleasure, one can lead a balanced life and have the feeling of brightness or positivity for one's own self.

5.



Human brain is the most complicated aspect of this universe. On the one hand this painting neatly depicts the imagination of the painter. How human brain works positively and negatively at one time. Every human being has three qualities (gunas) i.e. Satva, Rajas and Tamas. At the time of every act one quality overpowers the other. Even if one starts any activity with good intention ends up negatively or vice versa. The other aspect of this painting highlights how the soul gets influenced by the Satva (positive) guna and tries to diminish the darker side of life to lead a better life. It also highlights one's admiration towards the Creator, environment and crave for stress-free life. 'Service to all is the greatest Religion' is the message given by the participant to the Society.

6.



This painting is full of multiple aspects of life, yet neatly painted with many messages distinctively in three colors i.e. black, white and blue. 'Love yourself', 'Be happy', 'Be positive', 'Free to fly' and 'Art is my life' are various messages of the artist with innumerable painted illustrations from everyday life. Flora and fauna depicts life. Life without freedom is meaningless. But life with a positive attitude is not only worthy of one's own self but also cites a

remarkable example for all. Excellent attitude with full of bright ideas are the major highlights of this painting.

7.



Women are the centre of everything. Be it personal, professional, social, political or even economic life. The general mindset is portrayed by the painter. How social boundaries never allow her to be free. No family, no society or no nation can grow without her, yet she is controlled, mutilated and oppressed always by others. Being the root cause of all creation, she always keeps her positive attitude on even after getting exploited. At this phase of life, when girls have proved their power in almost all sectors of life, time has come to accept the reality that she is much beyond the conventional aspects. She is not only powerful to control the trade and commerce industry, but also proved her caliber in highly scientific zones as well as defense sector. Oppressing a woman shows the insecurity of male domain.

8.



The painting remarkably paints the

growth of spirituality amidst all positive and negative life. 'Crave for the union of the individual soul with the Universal soul finds its own path for liberation', is the theme of this painting. Whether one live in pleasant state or in state of despair, always the soul want to get liberated from this worldly life. Spirituality is an inbuilt urge in every individual. With sincere urge to reach the ultimate truth Almighty, every creation finds a path for itself and that path takes one towards the invisible power. A young artist with such a mature thought is rare but really proves the potency available in these tiny minds.

9.



This is a unique painting that depicts over all aspects of one individual. Hope, prosperity, steadiness & celebration all are connected to the happy state of an individual, whereas misery, suffering, pain, despair and helplessness are states of unhappiness. One's time portrays each moment's mental state. Desires are endless. Satisfied desires bring smile with a pleasant state of mind whereas unsatisfied desires bring all kind of unpleasant feelings. With all of them together one needs to lead his life. This is the ground reality. From this art form one can try to visualize one's own self and can think of his

or her own future. This painting provides a glimpse of human nature.

10.



Lord Krishna is the root of everything. The creator and the creation are one and the same. The entire universe lives, dances and also suffers due to their karmic bondages. Even Lord Krishna was born to lead human life and enjoyed the beautiful moment of worldly life as well, left for his and heavenly abode with a painful end. Equality for all is the message communicated through this painting, be it God, the creator or His creation, the space, greenery, darkness or hope. All are equal and all are one. We are nothing other than a part and parcel of the supreme Reality.

Such canvases with such exceedingly significant portrayal, drawn by our young energetic minds, mirror an extremely rich and edified outlook of our youngsters. When the society is witnessing negativity every now and then, such magnificent, enriched mindsets of our young generation really brings hope against hope. Their creations are so inspiring that I feel enlivened and elated as an educator and decided to bring their beautiful creation in front of all of you.

Dr. Subasini Barik
Department of Philosophy.
Deshbandhu College, DU

Virus too does have a 'heart'

Most of you perhaps won't believe
that the nefarious virus also does have a 'heart'
How come, you will question?
Viruses have been known to be ruthless
and sans any mercy
You will say, viruses are always hostile
and our formidable enemies at that
Well, to the extent you are right

that you can't (and should not) expect
any 'karuna' (mercy) from Coronavirus
(You will need an effective drug and an efficient
vaccine to combat it)
Very right you are scientifically
However, care to read
(during lockdown, I'm sure you have enough time)
Michael Crichton's 'The Andromeda Strain' (1968)
An extraterrestrial microbe
brought back by a military satellite runs amok

causing devastation as it mutates repeatedly
The alien bug is on the spree
killing humans by rapidly clotting the blood
Alas, on the brink of total extinction
comes the entire human race
The tale's ex machine ending however
saves the doomsday
Lo and behold, the alien microbe at the end of the day
mutates spontaneously-

into a benign form
The entire humanity is saved, thanks to the pro-human
stance
of the virus
The virus has been shown to be pro-human
in other sci-fi works too
I'm talking of H. G. Wells' seminal 'War of the Worlds'
(1898) and its various modern settings, including
'Independence Day' (1996)
As depicted in these works, you find the virus on our
side
It destroys alien invaders-
that naturally lack our acquired immunity
So, sometimes viruses, in fictional works at least,
have emerged not as our foes but as our friends
Don't you lose the hope ever

You hold it tight and pure
For, rest assured, the future holds the key for sure

Dr. P. K. Mukherjee

Musings

Some are struck with dread, others with fear
Some are filled with foreboding, none with cheer

Some battle existential crises
Other struggle with old vices

Experts on TV spout opinions galore
Conspiracy theories cause too much furore.

Countries after countries announce lockdown
The public desperately longing for a countdown

Desperate times call for desperate measures
Time to halt and forego usual pleasures

Scientists work tirelessly on vaccines
On drug trials, mutations and genes

Philosophers see it fit to ponder and reflect
Advising humanity to slow down and introspect

While priests and pundits are praying for a miracle
For the doctors it is a real debacle

Opportunists and trolls spread hate and islamophobia
While the sane are left with dim hopes of a utopia

Stand-up comics an apt chance to ridicule and mock
Finding things to cheer even in times of shock

Social media flooded with jokes and hilarious memes
Filling the grim air with funny spoofs and themes

The world flooded with ample claptrap and hogwash
Material for the gullible public to brainwash

Between gau mootra and Christ's blood
Of gobbledygook there is a veritable flood

Biggest threat is from a throat too sore
International agencies keep the death score

Corona creeps in and spreads with stealth
Millionaires donate huge sums of wealth

World forced to adopt new social norms
Economists suggest radical new reforms

Funny words enter the English lexicon
Even handshakes are forbidden, forget liasons.

Visible afar is only a deserted street
While everything takes a backseat

A pleasant calm and an unusual quiet
Lurking behind which is an eerie sense of disquiet

Can hear the chirping of birds and crickets
While spouses address each other with new sobriquets

Trisha feeds off a rich platter of chicken and Netflix
In intervals between her zoom classes and remixes

Trapped between ennui and lethargy
Lacking the will and the energy

Binge-watching rom-coms and thrillers
Hooked to strippers, rippers and serial killers

Bored by and yet glued to social media
Corona is enough to write an encyclopedia

Oh so trapped in their shackles of privilege
Their mundane inanities such a sacrilege

Jyoti and Shyam are filled with gloom
For a new future which seems beset with doom

Who will be sacked and who will remain
Are questions that haunt them like a refrain

While rabid anchors shape public opinions
Sukhiya and Ramoo and countless millions

Walk and walk and walk under hopeless skies
Dropping off on the tortuous way like flies

Stripped of supplies, surviving because of good
Samaritans

Open the economy, shout the stupid Americans

Well-fed aunties scour the net for three ingredient cakes
Easy recipes for tikkas and shakes
The labourers, vendors and daily wagers remain
sleepless

battling their worst nightmares in this bleakness

The detritus of a crass consumerist society

The flotsam and jetsam of this wreck

Death and disease are levellers I hear

None do they spare says the seer

Is it so?

Preeti Dewan

Associate Professor, Department of English

देश: (२०२०-२१ ई.)

संस्कृत-अनुभागः

संपादकः : डॉ. मुकेशकुमारमिश्रः

छात्र-सम्पादकः : प्रजापतिझा

विषयानुक्रमणिका

१. कोरोनाविषाणोः विभीषिका - डॉ. मुकेशकुमारमिश्रः 60-69
२. कोरोनाकाले मानवजीवनम् - शुभेन्दुशशांकः
३. कोरोनाकालः : एकं विचित्रं परिदृश्यम् - वरुणपँवारः
४. कोरोना : विश्वव्यापी-संक्रमणम् - भावेशठाकुरः
५. पद्यरचना - प्रजापतिझा
कोरोने गच्छ देशं निजम्
मयि स्वप्ने ह्य आगतवान् कोरोना
विश्वनाथ पाहि नः

कोरोनाविषाणोः विभीषिका

न केवलं भारतवर्षस्य कृते अपितु सम्पूर्णविश्वस्य कृते कालोऽयमत्यन्तप्रतिकूलः विषादपूर्णश्च वर्तते। क्रुद्धदैवस्य क्रूरदृष्टिः भृकुटिः वा अत्यन्ततिर्यक् किम्वा वक्रीभूत्वा समस्तमानवजातीनाम् कृते दैन्यकारिका सन्तापकारिका अवसादकारिका च सम्भूय अवसादं क्लेशञ्च जनयति। साक्षात् मृत्युदेवता कोरोनारूपं संगृह्य मनुष्यात् अन्ये मनुष्ये नगरात् अन्ये नगरे राष्ट्रात् अन्ये राष्ट्रे सर्वत्र प्रसारं कृत्वा जगतः कोणेषु-कोणेषु संक्रमणं जनयित्वा भयपूर्णस्थितिं उत्पादयति व्यापादयति च मानवतां। निखिलम् विश्वं कोरोनाविषाणोः विभीषिकायाः भयाक्रान्तं भूत्वा त्राहि मां त्राहि मां अथवा पाहि मां पाहि मां इति निनादं करोति। सम्पूर्णमानवजगत् संतप्तं विकलञ्च भूत्वा आर्तनादं करोति। मानवता चीत्कारं करोति। किन्तु महिषवाहनः भगवान् न कान् प्रति दयाभावं सौख्यभावञ्च प्रदर्शयति न करुणाभावं वात्सल्यञ्च वितरति। रोगशोकव्याधीनाञ्च साम्राज्यः सर्वत्र व्याप्तः दृश्यते। अत्यन्तदारुणदृश्यः सर्वत्र प्रसरितोऽस्ति। मानवता कोरोनाजनितदानवतां दृष्ट्वा करुणक्रन्दनं करोति। परस्परं अन्योन्यं प्रति भयमिश्रितसाशङ्कदृष्ट्या अवलोकयन्तः जनाः विह्वलाः सन्ति। अखिलसभ्यतासंस्कृतिमानवताश्च प्रभावयित्र्याः कोरोनायाः विभीषिकायाः कारणात् सर्वत्र गहनान्धकारः व्याप्तोऽस्ति। चेतनजगत् जडीभूत्वा क्रियाहीनञ्च भूत्वा अथवा जडत्वमाप्य निश्चलः निष्पन्दः निश्शब्दः स्तब्धः विस्मितः निस्तेजश्चावभासते। कोरोनाप्रकरणं कियत्कालपर्यन्तं चलिष्यतीति न कोऽपि जानाति। सर्वत्र केवलं कोरोना कोरोनेत्येतस्य शब्दस्य कटुस्वरो कठोररवो कर्कशध्वनिरेव वा श्रावयति अथवा जनैः श्रूयते। 'कोरोना' 'कोरोने'त्येतस्य शब्दस्य नाम श्रूत्वैव भयातुराः जनाः कम्पनं वेपनं वा कर्तुमारभन्ति। कोरोनायाः रुद्रताण्डवनृत्यम् दृष्ट्वा सर्वे हतप्रभाः सन्ति।

मार्गवीथीशृङ्गाटकाश्च जनशून्याः सन्ति। गमनागमनानि साधनानि निरुद्धानि भवन्ति। बसरेलविमानजलयानानि स्थगितानि सन्ति। विवधसेवाकार्याः दीर्घ-मध्यम-लघुवृत्तयः व्यवसायाश्च ध्वंसीभूताः भस्मीभूताश्च। दीर्घ-मध्यम-लघु-व्यापारिवर्गाः वणिजश्च व्यापाररहिताः भवन्ति। राजकीय-अर्धराजकीय-अराजकीय-कार्यालयाः निरुद्धाः सन्ति। प्राथमिक-माध्यमिक-उत्तरमाध्यमिकविद्यालयाः महाविद्यालयाश्च स्थगिताः अवरुद्धाश्च सन्ति, यद्यपि इदानीं गृहेषु स्थिताः सन्तः एव अध्ययनाध्यापनान्यसेवाकार्यादयः अन्तर्जालीयव्यवस्थामाध्यमेन संचालिताः सन्ति। श्रमिकजनाः कर्मकराश्च कर्माभावे किम्वा श्रमाभावे विह्वलाः व्याकुलाश्च संजाताः सन्ति। कार्यमान्विष्यन्तः कर्मार्थमेव वा ते श्रमिकाः स्व-स्वगृहं परित्यज्य ग्रामेभ्यः नगरेषु आगच्छन्ति स्म। किन्तु सम्प्रति कोरोनाभयकारणात् ते सर्वे स्व-स्व कर्मस्थलान् विहाय स्वकीयान् गृहान् प्रति पलायनं कुर्वन्ति। यातायातसाधनानामभावे ते श्रमिकाः स्वपरिवारैः सह, बन्धुबान्धवैश्च सह नग्नचरणैः गन्तुं पलायनं वा कर्तुं विवशाः सन्ति। भोजन-जलादि-अभावे अथवा मार्गं परिश्रान्ताः भूत्वा केचन् जनाः यथा शिशवः बालाः वृद्धाः स्त्रियश्च परलोकगामिनो भवन्ति कालकवलिताश्च भवन्ति। सत्यम् कृतान्तिव कोरोनाविषाणुः। अन्तर्किव कोरोनाविषाणुजनितसंक्रमणं भिन्नेषु-भिन्नेषु महानगरेषु नगरेषु ग्रामेषु च अटति प्रसरति भक्षणं च करोति विशेषरूपेण वृद्धजनान्। यद्यपि युवजनाः युवतिजनाश्चापि अस्य विषाणोः प्रभाविताः संक्रमिताश्च भवन्ति। संक्रामकजनानाम् संख्याः वैश्विकदृष्ट्या बहुकोट्यां वर्तन्ते। भारतसन्दर्भेऽपि संख्या कोट्याधिकाः वर्तन्ते। वैश्विकदृष्ट्या मृतकानाम् संख्याः बहुलक्षे, भारतदृष्ट्यापि संख्याः लक्षमतीत्य अग्रे सरन्ति। कोरोना-संक्रमणदृष्ट्या

विकसितविकासशीलयोः दूरत्वं अन्तरालं वा समाप्तम्। विश्वस्य सर्वे देशाः एकीभूय अथवा समो भूत्वा हाहाकृतानि कुर्वन्ति। जनाः गृहाभ्यन्तरे स्थितेऽपि निरुद्धेऽपि च भयाकुलाः सन्तः विस्मिताः शान्ताः उदासीनाश्च। सर्वे क्लान्ताः विषण्णवदनाः परिश्रान्ताश्च संभूय दुर्दिनानि सहन्ते। दारुणदृश्यानि सर्वत्र दृश्यन्ते। शोकस्य भयस्य च वातावरणं सर्वत्र विराजते। कोऽयं कोरोनाविषाणुः? कुतः अयं अत्र भूमौ आयातः? कथं अस्य निरोधः अवरोधश्च भविष्यति? कियत्कालपर्यन्तं अस्य विषाणोः वासः भविष्यति? कथं केन प्रकारेण वा अस्य प्रसारः रोत्स्यति? कथं कदा वा कोरोना गमिष्यति? - इति बहवः प्रश्नाः जनानां सम्मुखे उपस्थिताः। जनाः गेहेषु स्थिताः चिन्तामग्नाः। इत्थं प्रतीयते तथा च सर्वे अङ्गीकुर्वन्ति यत् सर्वकारस्य निर्देशं चिकित्सकानाञ्च परामर्शं दिशानिर्देशञ्च स्वीकुर्वन्तः सामाजिकसम्पर्कविच्छेदेन सह धृतिः उत्साहः उद्योगः दृढसंकल्पः आत्मशक्तिश्चैवास्मद्विषाणोः रक्षणोपायाः, रक्षणे सहायकाश्च। यतो हि कथ्यते यत् विपदि धैर्यम् युधि विक्रमश्च आवश्यकौ -

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।

यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

अतः आपत्काले विपरीतकाले संघर्षकाले वा धैर्यं धारणीयम् पराक्रमश्च प्रदर्शनीयः। कथ्यते यत् विपरीतकाले विस्मय एव कापुरुषस्य लक्षणम् न तु वीरपुरुषस्य। वीरपुरुषः धीरतामवधार्य संघर्षम् करोति। एवमेव अस्मिन्विषमकाले धैर्येण सह उत्साहोऽपि आवश्यकः, अतः उत्साहस्य परित्यागः न कर्तव्यः। कथितम् यत् -

**उत्साहो बलवानार्यं नास्त्युत्साहात्परं बलम्।
सोत्साहस्य च लोकेषु न किञ्चिदपि दुर्लभम्॥**

अर्थात् उत्साहबलेनैव अस्मिन् लोके जनाः दुर्लभं कार्यं कर्तुं समर्थाः भवन्ति। अतएव कोरोनासदृशरिपुविनाशाय संहाराय च उत्साहस्यापेक्षा स्वाभाविकी। एतैः मनोगतभावैः सह कोरोनाविषाणोः प्रसारं निरुद्धं कर्तुं तदनुकूलाः उद्योगाः चेष्टारपि अपेक्षिताः। उद्योगं विना फलप्राप्तिः न सम्भवति। यतो हि नीतिकारैः भणितं -

**न दैवमपि सञ्चिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः।
अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यः नाप्तुमर्हति॥**

अत्रैवोक्तं यत् -

**उद्योगिन पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्देवेन देयमिति
कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृता यदि
न सिद्ध्यति, कोऽत्र दोषः।**

अतः आत्मशक्त्यानुरूपेण पौरुषेण कर्मणा वा कोरोनासदृश निष्ठुरकरालदैवं जेतुं वयं समर्थाः भवितुम् शक्नुमः। अपि चास्मिन्सन्दर्भे अन्ये श्लोकाः, यथा -

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।

एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति॥

पूर्वजन्मकृतं कर्म तदैवमिति कथ्यते।

तस्मात्पुरुषकारेण दैवं न सिद्ध्यति॥

यथा मृत्पिण्डतः कर्त्ता कुरुते यद्यदिच्छति॥

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

‘रश्मिर्शीति’ नामके काव्ये महाकविदिनकररपि भणति यत् -

सच है विपत्ति जब आती है

.....

पत्थर पानी बन जाता है॥

अर्थात् सत्यमेव यदा विपत्तयः आयान्ति तदा कापुरुषारेव विस्मिताः भवन्ति, वेपन्ति कम्पन्ते च। अस्मिन्नवसरे शौर्यवन्तः जनाः न तु विचलिताः विकलाश्च भवन्ति, न हि क्षणमात्रमेव धैर्यं परित्यजन्ति अपितु सहर्षपूर्वकं विघ्नानाश्लेषयन्ति आलिङ्गयन्ति च। ते उत्साहयुक्तजनाः कण्टकेष्वपि मार्गं रचयन्ति। कदापि न स मुखात् 'अहह' 'हा' वेति शब्दोच्चारणं करोति। मनस्तापं नैराश्यञ्च च नैवाङ्गीकुर्वन्ति अपितु सम्मुखीनाः सर्वान् कष्टान् सहन्ते परं उद्योगेभ्यो विमुखाः न भवन्ति, निरन्तरं उद्योगं प्रति निरताः भवन्ति। अस्मिन् जगति न कोऽपि विघ्नः शौर्यवतः वीरपुरुषस्य मानवस्य वा मार्गं व्यवधानं जनयितुम् शक्नोति। यदा मानवः दृढनिश्चयं कृत्वा समरेषु आयाति अथवा मल्लयुद्धे करतलेन बाहुजंघयोरास्फालनं करोति तदा अचलोऽपि चलायमानो भवति अर्थात् रणक्षेत्रे भीषणशत्रोः समूलोच्छेदनं समूलोन्मूलनं वा करोति। मानवः यदा शक्तिं शौर्यं वा प्रकटयति आत्मबलञ्च प्रदर्शयति तदा पाषाणोऽपि जलरूपेषु परिणतं भवति। मानवेषु आत्मबलो असीमः। कोरोनाविषाणोरपसारयितुमुत्सादयितुम् अथवा तस्य संक्रमणस्य प्रसारमवरोद्धुम् दृढसंकल्पस्य आत्मेच्छाशक्तेश्च महदावश्यकतास्ति। यतो हि-सम्प्रति संत्रस्ता मानवता रोदनं करोति। अतः एकमेव संकल्पमवलम्ब्य संघर्षः सम्भवोऽस्ति। यतो हि उक्तं संकल्पविषये -

**संकल्पस्य न कोऽपि विकल्पः
हठयोगीव भवति संकल्पः
शिवसंकल्पं हृदि धारयत
कलुषः स्वयं नशिष्यति रे
तिमिरं स्वयं गमिष्यति रे॥**

अर्थात् संकल्पस्य कोऽपि विकल्पो नास्ति। संकल्पः हठयोगीव भवति। यदा वयं शिवसंकल्पं मनसि धारयामः तदा कलुषः स्वयं नश्यति एवञ्च

अन्धकारोऽपि स्वयं गमिष्यति। अतः अस्माभिः आत्मसंकल्पः हृदि धारणीयः। यदा जगति कोरोनाविषाणुजनितरोगसंक्रमणसदृशगहनान्धकारः व्याप्तोऽस्ति तदा 'आत्मदीपो भव' इति बौद्धमन्त्रमवधार्य अन्तर्दीपस्य प्रकाशं प्रकाशय अस्माभिः आत्मसंकल्पः प्रगुणितो करणीयः। यथोक्तम् -

**प्रसरति तमस्तोम एषोऽयं यदपिच्छन्नाकाशः।
कृन्तति किन्तु तवायमथैनमन्तर्दीपप्रकाशः॥**

तथा च -

**इमा लहयोर्यो नैव स्यु-
र्नावर्ता इमे भवेयुः
मनः प्रगुणयाम्यग्रे
संकल्पं धारं धारं
किं वाऽत्र करिष्यति धारं
गन्तास्मि कदाचित् पारं।**

वयं निश्चयमेव मनसः संकल्पं प्रगुणीकृत्वा कोरोनाजनितविभीषिकां तीर्त्वा पारं गमिष्यामः। सर्वे जानन्ति यत् विविधसंक्रामकरोगकारकः विषाणुः भीषणः भवति। किन्तु कोरोनाविषाणुः तु भीषणतमः वर्तते। इदानीम् प्रश्नोऽयं यत् विषाणुशब्दस्य कः अभिप्रायः एवञ्च कोरोनाविषाणोः स्वरूपं कथमस्ति? विषाणुः शब्दः शब्दद्वयोः सन्धानात् एव भवति। अत्र द्वौ शब्दौ स्तः- विष+अणुः। अत्र दीर्घसन्धित्वात् विषाणुशब्दः सम्पद्यते। 'विष्' इत्यस्मात् शब्दात् 'क' प्रत्ययो संयुज्य विष शब्दः सम्पन्नो भवति अस्य शब्दस्यार्थः प्राणहरं, गरलं, हलाहलं, कालकूटमादयः। तथैव अणति सूक्ष्मत्वं गच्छति इति अणुः इत्यर्थे 'अणु' शब्दात् ऊन् प्रत्ययो संश्लिष्य 'अणु' शब्दः निष्पन्नो भवति। अणुशब्दस्यार्थः सूक्ष्मं, लवः, लेशः, अतिसूक्ष्मं, कणरादयः। अनया दृष्ट्या विषाणुशब्दस्याशयो अस्ति - प्राणहरं अतिसूक्ष्मकणः विषाणुः। अतः विषाणुः तु

प्राणहारको अतिसूक्ष्मलवो अस्ति यः वाय्वादिमाध्यमेन शरीरं प्रविश्य प्रसारं करोति संक्रमितं करोति रोगञ्च जनयति। विषाणुः अकोशकीयातिसूक्ष्मजीवोऽस्ति यः केवलं जीवितकोशिकायामेव वंशवृद्धिं कर्तुं शक्नोति। नाभिकीयाम्लप्रोभूजिनाभ्याञ्च मिलित्वैव आत्मनिर्माणं संगठनं वा करोति विषाणुः। शरीरतः बहिः अयं मृतप्रायो प्रतीयते किन्तु शरीरान्तःप्रदेशे प्रविश्यायं जीवनं धारयति। एकदा यदा विषाणुः जीवितोशिकायां प्रविशति तदा स कोशिकायाः मूलभागस्य जेनेटिकसंरचनां जेनेटिकसूचनायां परिवर्तते परिणतं करोति वा। अनन्तरं संक्रमितकोशिकात्मसदृशकोशिकानां पुनरुत्पादनमारभते। आंग्लभाषायामपि विषाणुशब्दः 'विष' इत्यर्थस्य वाचको अस्ति। चीनदेशस्य वुहानप्रान्ततः आविर्भूतः प्रसृतश्च विषाणुः 'कोरोनाविषाणु' इत्याख्यायाः जगति प्रसिद्धोऽस्ति। विषाणुरयं अतीव भीषणः। सर्वदिशः कोरोनाविषाणोः विभीषिकायाः संत्रस्ताः। वि उपसर्गपूर्वकात् 'भी' धातोः णिच् + ण्वुल् + टाप् प्रत्ययाः संयुज्य अथवा 'विभीषा' इति शब्दात् कन् प्रत्ययः तथा स्त्रीत्वविवक्षायां टाप् प्रत्ययः संयुज्य विभीषिका शब्दः निष्पन्नो भवति। यस्यार्थरस्ति - भीषणत्वं, भयप्रदर्शनम्, त्रासः, भयावहतादयः। अतः कोरोनाविषाणोः विभीषिका इत्यस्याशयः अस्ति। कोरोनाविषाणुजनितरोगस्य संक्रमणस्य च त्रासः भीषणत्वञ्च।

कोरोनायाः संक्रमणं चीनदेशे वुहानप्रान्ते विशेषतः पिशितविपणितरेव आविर्भवति स्म। मन्यते यत् तत्र नवपशुहन्तारः मांसविक्रेतारश्च प्रथममेव संक्रमिताः बभूवुः। कथ्यते यत् -

**वुहाननगरे चीने व्याधिर्वभूव ह।
विपण्यां यत्र मांसानां जन्तूनां विविधात्मनाम्॥
जलजानां विशेषेण विक्रयं प्रसरत्यपि।**

एवमेव इदं मन्यते यत् विशेषकोटिकजतुकापिशितापणतः एव अस्य संक्रमणः

प्रसारश्चाभवत्। चीनदेशस्थवुहानप्रदेशः अस्य विषाणोः प्रारम्भिकीस्थल्यासीत्। अस्मात् कारणात् कोरोनाकुलजातस्य विषाणुः 'वुहानकोरोनाविषाणुः' इत्यभिधानात् अपि प्रसिद्धो बभूव। चीनप्रभवकोरोनाविषाणुः 'चीनीकोरोना' इत्यपराख्यानादपि विश्रुतो जातः। अनन्तरं विश्वस्वास्थ्यसंगठनेन अस्याभिधानः 'कोविड-19' इत्यपि दत्तः। वुहानप्रान्तात् किम्वा चीनदेशात् निर्गत्य अस्य विषाणोः संक्रमणं भिन्नेषु-भिन्नेषु राष्ट्रेषु प्रसृतम्।

लातीनीभाषायाम् कोरोनाशब्दस्यार्थः मुकुटमित्यस्ति अस्य विषाणोः कणानामितस्ततः उन्नतकण्टकाकारस्वरूपतः इलेक्ट्रानसूक्ष्मदर्शिणा मुकुटमिवाकृतिः परिदृश्यते। विषाणोर्नाम कोरोना इत्यर्थे निहितास्ति। अन्यत्रापि सूर्यग्रहणकाले यदा चन्द्रमाः सूर्यं आच्छादयति तदा चन्द्रमसं परितः रश्मयः निःसृतारिव प्रतीयन्ते। तत्रेदृशः चन्द्रमसः रश्मयरपि 'कोरोना' इति कथ्यन्ते।

अयं कोरोनाविषाणुः विविधजातीनाम् विषाणूणाम् पुञ्जः संघः संकुलो वा यः स्तनधारिषु जीव-जन्तूषु रोगजननकारकः भवति। अयं तु आर.एन.ए. विषाणुः/वायरसः अस्ति। अस्य विषाणोः जगदस्ति 'राइबोविरिया' इति संघोत्वनिश्चितः, गणोस्ति नीडोविरालीसरिति, कुलोऽस्ति कोरोनाविरिडाए' इति उपकुलश्च वर्तते 'आर्थोकोरोनाविरिनाए' इति। अयं विषाणुः विशेषरूपेण मानवश्वसनतन्त्रान् संक्रमते संक्रमितं करोति वा अथवा मानवश्वसनतन्त्रेषु कोरोनाविषाणुकारणात् संक्रमणं प्रभवति। संक्रमणस्य प्रसारं रोद्धुं वा न किमपि भेषजम् औषधिः वा इदानीम् यावत् निर्णायको, फलवानो सार्थको सिद्धो वास्ति। कोरोनाजनितसंक्रमणकारणात् जनाः तीव्रदाहज्वरैः, खरकासैः प्रतिश्यायैः, हडडमैः शीतश्लेष्मस्त्रावैः अंगमर्दैः अतिसारैः शीतज्वरैश्च प्रभाविताः भवन्ति। शरीरस्य

रोगाप्रतिरोधकक्षमतायाः ह्रासं भवति। रोगरोधकक्षमता न्यूनीतरी दृश्यते। बहुशः जनाः संक्रमणकारणात् अस्वस्थाः भूत्वा मृत्युं प्राप्नुवन्ति कालकवलितञ्च भवन्ति। यद्यपि अनेकशः जनाः संक्रमणकारणात् आरम्भे अस्वस्थाः अभूवन् किन्तु बलवत्/उन्नत/उच्चरोगप्रतिरोधकक्षमताकारणात् ते शीघ्रं स्वस्थाः बभूवुः अथवा अल्पमात्रेण प्रभाविता अभवन्। स्पष्टम् यत् अस्य विषाणुजनितसंक्रमणस्य प्रभावः शरीरस्य रोगप्रतिरोधकक्षमतानुसारेणैव कार्यम् करोति। निर्बलजनान्, वृद्धजनान्, श्वसनरोगप्रभावितजनान् फुस्फुसरोगसंक्रमितजनान् प्रति विषाणुरयं महाघातकः मर्माघातकश्च।

अतः अस्य विषाणोः लक्षणादिविषये केनापि कथितानि कतिपयकथनानि, यथा -

ज्वरश्च खरकासश्च लिङ्गौ द्वौ च प्रधानतः।
कदाचित्तु प्रतिश्यायः हल्लासश्च शिरोरुजा॥
अंगमर्दोऽतिसारश्च दृश्यन्तेऽपि तदुद्भवे॥
बलवत्स्वल्परूपस्सन् स्वयमेव प्रशाम्यति।
यूनि बाले यदा नास्ति चान्याः रोगाश्च दारुणाः।
अबलेषु च वृद्धेषु कृच्छ्रता जायते ततः।
श्वासस्य च यतोऽत्यर्थं पाकं यातौ च फुस्फुसौ॥
मर्माघाताच्च दोषैस्तु पञ्चत्वं मुक्तिकारणम्।
प्रायेण च जनाः सर्वे क्लामाक्रान्ताः भवन्ति च॥
जीवतामपि तद्मोक्षे श्रमश्वासोऽनुवर्तते
केषुचिच्चोपघातेन फुस्फुसस्य ज्वरोष्मणा॥

अस्य विषाणोः प्रसारः तीव्रतमोऽस्ति। नेत्रनासिकामुखशरीरगतशारीरिकस्पर्शादिमाध्यमे अज्ञानवशात् विषाणुरयं कस्यापि जनस्य शरीरं प्रविशति। कोरोनाविषाणुसंक्रान्तः यदा श्वसिति वदति कासते क्षौति वा तदा बहवः विषाणुस्यूताः सूक्ष्मकणाश्च वायौ प्रसार्य समीपे सर्वत्र प्रसरन्ति एवञ्च मुखनासिकादि माध्यमेन अज्ञानतरेव विषाणुरयं शरीरे प्रविशन्ति। शरीरं

प्रविश्य स तम् संक्रमितं करोति अनन्तरं ये केऽपि जनाः तस्य संक्रमितजनस्य सम्पर्के आयान्ति ते सर्वेऽपि संक्रान्ताः भवन्ति। पुनश्च केचिद्कालपश्चात् अथवा केषुचित्त्वारेषु तान् संक्रमितजनान् परितः अथवा संक्रमितजनानाम् सम्पर्के ये केऽपि वसन्ति आगच्छन्ति वा ते सर्वेऽपि संक्रमिताः भवन्ति। अतः कोरोनाविषाणुजनितरोगसंक्रमणस्य प्रसारं निरुद्धं कर्तुं प्रथमतः जनजागरूकता अथवा जनचेतना जनजागृतिः वा परमावश्यकी। अत्र सर्वकारस्यापि दायित्वं यत् स जनेषु जागरूकतायाः जागृतेः वा विशेषरूपेण प्रचारं-प्रसारं करोतु। यतो हि आत्मरक्षणे एव अस्माद्विषाणोः रक्षणम् निहितमस्ति। वस्तुतः कोरोनाशमनोपायाः अधोलिखिताः सन्ति -

1. सामाजिकसम्पर्कविच्छेदः करणीयः।
2. गृहे एव वासः कर्तव्यः, गृहात् बहिः मा गमनीयम्।
3. जनसमूहानाम् स्थले न गमनीयम्, समवायरूपे कुत्रापि न गन्तव्यम् समष्टिरूपोपस्थितिः वर्जनीया।
4. सर्वदा मुखावरणस्य मुखच्छादनस्य वा प्रयोगः कर्तव्यः।
5. बहिरागते सति जलेन मार्जकेन च हस्तौ प्रक्षालणीयौ; मुखं, नेत्रे च प्रक्षालणीयानि।
6. 'द्विगजपरिमितान्तरालं' अथवा 'गजद्वयपरिमितान्तरं' इति नियमस्य पालनं कर्तव्यम्।
7. मिलनस्थले मिलनक्रमे मेलने वा करस्पर्शः न कर्तव्यः, अस्य स्थाने दूरादेव हस्तौ बद्ध्वा अभिवादनं करणीयम् स्वीकरणीयञ्च।
8. बहिःप्रदेशात् गृहे आगते सति स्नानमपि अपेक्षणीयम्।

9. शरीरस्पर्शानन्तरं जीवाणु-रोगाणुनाशकेन हस्तादयः प्रक्षालणीयाः।
10. बहिः गते सति मुखावरणस्य मुखच्छादनस्य विषाणु-रोगाणुनाशकद्रव्यस्य च पुनः पुनः प्रयोगः कर्तव्यः।
11. बहिर्गते सति गजद्वयपरिमितान्तरालनियमस्य पालनः करणीयः।
12. बहिर्गते सति कोरोनारक्षककवचस्य अथवा कोरोनारक्षकोपकरणसमूहानां प्रयोजनीयम् प्रयोगः कर्तव्यो वा।
13. बहिर्गते सति हस्तत्राणस्य पादत्राणस्य च प्रयोगः करणीयः।
14. कासने आगमने सति मुखं तिर्यक् कृत्वा अथवा किञ्चित् तिर्यक् भूत्वा कासनीयम्।
15. कासनकाले करवस्त्रस्य प्रयोगः कर्तव्यः।
16. कासने कूर्परस्य प्रयोगः करणीयः अथवा कूर्परेण मुखमच्छादनीयम्।
17. संक्रमितस्य सम्पर्के आगते सति अथवा सम्भावनामात्रस्थितौ चतुर्दशदिवसीयक्वारंटाईने गन्तव्यम् अर्थात् गृहे स्थितापि पारिवारिकसम्पर्कविच्छेदनियमस्यावधानपूर्वकं पालनीयम्। यदि गृहे क्वारंटाईनस्य सम्यक् व्यवस्था न भवति तर्हि सर्वकारेण स्थापिते क्वारंटाईनकेन्द्रे गन्तव्यम्। सर्वकारेण समुचितव्यवस्था तत्र क्रियते।

अस्मिन् वैश्विकमहामारीकाले अथवा सर्वव्यापकसंक्रमणकाले चिकित्सकाः स्वास्थ्यकर्मिणः आरक्षकाः निःस्वार्थसेवाभाविनो जनाः सेवक-सेविकाः उपचारकोपचारिकाः परिचारक-परिचारिकादयः देवरूपं

संगृह्यावतरितारभूवन्। ते स्वकीयजीवनानि आपत्सु संकटेषु वा निपत्य पातितं कृत्वा अथवा निक्षीप्यानवरतरूपेणाहर्निशं सेवाकार्येषु संलग्नाः सन्ति। संक्रमणोद्धारकार्येषु अथवा त्राणकार्येषु रताः संलिप्ताश्च सन्तः केचन् स्वास्थ्यकर्मिणः आरक्षकजनाः परिचारक-परिचारिकादयः स्वयमपि संक्रमितारभवन् केचन् कोरोनाजनितसंक्रमेणास्वस्थाः भूताः यद्यपि केचन् अस्वस्थाः स्वस्थाः अपि अभवन्, केचन दिवंगताः, किन्तु ते जनाः स्वसेवाधर्मस्य सेवाकार्यस्य च परित्यागाः नैवाकुर्वन्। ते स्वीकुर्वन्ति यत् 'सेवा अस्माकं धर्मः'। अहर्निशं सेवामहे-इत्येवास्माकं ध्येयमन्त्रः। परसेवाकार्येषु निरताः तत्पराश्च एतादृशः जनाः धन्याः सन्ति। सत्यमेव उक्तं -

‘सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः’

अथवा

‘सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः’

अथवा

**‘एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य
ये’**

अथवा

‘न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः’

अथवा

‘न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः’

अथवा

‘परोपकाराय सतां विभूतयः।’

अतः स्पष्टमेव तेषां मते सेवाधर्मः एव महाधर्मः।

कोरोनाजनितसंक्रमणस्य तीव्र प्रसारं दृष्ट्वा अस्माकं देशवासिनः प्रारम्भतः एव जागरूकाः चेतनशीलाः सतर्काश्चासन्। प्रारम्भे ये देशाः कोरोनाजनितसंक्रमणं प्रति-उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति स्म तत्र एतद्रोगजन्यमरणसंख्यानां वृद्धिः दृश्यते। यद्यपि विद्यालयमहाविद्यालयान्यव्यापारादिसेवा कार्याणाम् सभासम्मेलनाद्यायोजनानाम् निर्बन्धनात् निरसनात् विरामतः अथवा स्थगितविमानसहितान्ययानसाधनानां कारणात् अथवा राष्ट्रव्यापिपिधानकारणात् अवश्यमेव जनजीवनं बाधाग्रस्तं जातम्। कोरोनाजनितसंक्रमणस्य प्रसारं नियन्त्रितं कर्तुं प्रारम्भे तु सम्पूर्णं देशे राष्ट्रव्यापिपूर्णतालाबन्धत्वं अथवा पूर्णरूपेण तालकेन निरोधनम् इति नियमः योजितवान् अथवा सम्पादितवान्। कालान्तरे तु विशेषपरिस्थितौ एव नियमोऽयं सम्पादितः युक्तो वा। रोगप्रसाररोद्धुं नागरिकजनान् च संरक्षितुं सर्वकारेण संपादितस्य पिधानदेशस्य निर्णयो समयानुरूपः समुचितश्चैव आसीत्। किन्तु एते सर्वे निर्णयाः पूर्वजागरूकताकारणात् तेष्वेवावलम्बिताः सन्ति। सर्वकाराः अन्ये राष्ट्रनायकाश्च पौनःपुन्येनोद्घोषं कुर्वन्ति स्मारयन्ति च यत् जनाः न भेतव्यं। येषु देशेषु भारतीयाः आपद्ग्रस्ताः आसन् तान् आनेतुं भारतसर्वकारस्य योजना श्लाघनीयासीत्। बहुषु देशेषु यत्र भारतवासीनाम् कृते परीक्षणचिकित्सादिसहाय्यकार्यम् समुचितं नास्ति तत्र विषाणुपरीक्षणचिकित्साव्यवस्थापरिकल्पनाय दक्षचिकित्सकाणां समूहः अपि प्रेषितः। भारतीयजनानां कृतेऽन्यसहाय्यकार्यातिरिक्तं भारतसर्वकारेण धैर्यं प्रदर्श्य अधोलिखितानि कार्याणि अपि कृतानि, यथा -

1. कोरोनाविषाणुपरीक्षणकेन्द्रानां व्यवस्था। परीक्षणसंख्यासु वृद्ध्यर्थम् विशेषव्यवस्था।
2. मुखावरणानां, पादहस्तत्राणानां, कोरोनारक्षककवचाणां किम्वा कोरोनारक्षकोपकरणानां निर्माणकार्याणि तथा

तेषां समुचितवितरणस्य व्यवस्था।

3. जीवाणुनाशकानां द्रव्याणां व्यवस्था, रोगप्रतिरोधकौषधीणाम् व्यवस्था।
4. नवकोरंटाईनकेन्द्रस्य स्थापना, कोरंटाईनकेन्द्रेषु समुचित-व्यवस्था।
5. चिकित्सालये औषधालये च कोरोनाजनितरुग्णानां कृते शय्याप्राणवायवादीनाम् विशेषव्यवस्था।
6. कोरोनाजनितरुग्णाणां कृते विशेषचिकित्सालयाणां औषधालयाणां च व्यवस्था।
7. अत्यधिकसंक्रमितजनानां कृते प्लाज्मारोपणस्य विशेषव्यवस्था तथा प्लाज्माभण्डारणकृते प्लाज्माकेन्द्रस्य व्यवस्था।
8. चिकित्सालये गहनचिकित्साकेन्द्रानां संख्यासु वृद्ध्यर्थमुपकार्यम्।
9. दीनार्तवृषकश्रमिकादीनाम् वृत्ते भोजनाद्यन्यजीवनरक्षकसुविधासामग्रीणाम् व्यवस्थादयः।

अस्मिन्नवसरे महामारीकाले वा बहुसंख्याकाः सेवाभाविनो जनाः बहूनि संघटनान्यपि च निःस्वार्थभावेन समाजसेवाकार्यार्थं सम्मुखे आगताः आगच्छन्ति च। सम्प्रति न केवलं भारतीयस्तरे अपितु वैश्वस्तरेऽपि कोरोनाविषाणुनिग्रहार्थं किम्वा कोरोनायाः संक्रमणमवरोद्धुं अथवा कोरोनाविषाणुशमनाय टीकाकरणस्य कार्यम् सुष्ठुरूपेण प्रचलति। मन्यते यत् पर्यावरणसंरक्षणदृष्ट्या कोरोनाकालः लाभकरः मंगलकरश्चास्ति कथनमिदं सत्यं प्रतिभाति। किन्तु पर्यावरणातिरिक्तव्यापारसेवाद्यन्यस्थलेषु कोरोनाकारणात् विपन्ना मरणासन्ना च स्थितिः सर्वतः विराजते। इदानीमपि कोरोनाविषाणोः विभीषिका सर्वत्र व्याप्तास्ति।

अन्ततः जनकल्याणाय विश्वशान्तये अथवा समग्रं विश्वं त्रातुं त्राणार्थं वाहं स्वाराध्यदेवं वन्दे कामये च यत् सम्पूर्णजगद्भिः सह समग्रभारतोऽपि कोरोनाविषाणुजनितरोगसंक्रमणादिभयाद् शीघ्रं मुक्तं भविष्यतीति। इयं न केवलं मे कामना अपितु मे पूर्णविश्वासोऽस्ति।

को रो नाविषाणु विभीषिका मवलम्ब्य संस्कृतरचनाकारैः निबद्धाः कतिपयश्लोकाः अत्र प्रस्तूयन्ते, यथा -

1. कालो धैर्येण सोढव्यो यावदेषा विभीषिका।
सुगोप्यः स्वजनो यत्नादात्मानमपि गोपायेत्॥
2. भारतं पिहितं कृत्स्नं सर्वं तन्त्रं जडीकृतम्।
कोरोनेति विषाणूनां प्रसारो मा भवेद् यतः॥
3. नगराणि तथा ग्रामा वीथयो ह्यापणानि वै।
कोरोनाभीतिसन्त्रस्ता मीलिताक्षा इव स्थिताः॥
4. स्थगितो जनसञ्चारो निरस्तं यानचालनम्।
जीवनसंकटापन्नमग्रे का भविता गतिः॥
5. ये यत्रावस्थिता देशे सहसा तन्न संस्थिताः।
सप्ताहत्रयपर्यन्तमवरुद्धा यथा तथा॥
6. बान्धवेभ्यो वियुक्तास्तेऽवशा दीनाः कदर्थिताः।
कोरोनाभयतो मौना आर्ताः कुटुम्बचिन्तया॥
7. ये तु साधनसम्पन्ना वरिष्ठा राजसेवकाः।
नेतारो मन्त्रिणो वापि सुखं जीवन्ति ते नराः॥

अत्र को रो नाविभीषिकायाः अत्यन्तस्वाभाविकववेचनमस्ति। ('कोरोनाशतकम्' इत्यभिधानात् ग्रन्थात्)

अनन्तरं 'कोरोनारक्षाकवचम्' इति द्वादशपद्यात्मकरचनायाम् निबद्धा श्लोकाः, यथा -

त्वं करुणावतारोऽसि कोरोनाख्यविषाणुधृक्।
रुद्ररूपश्च संहर्ता भक्तानामभयङ्करः॥
मृत्युञ्जय महादेव कारोनाख्याविषाणुतः।
मृत्योरपि महामृत्यो पाहि मां शरणागतम्॥
मांहारात्समुत्पन्नाज् जगत्संहारकारकात्।
करुणाख्याद्विषाणोर्मा रक्ष रक्ष महेश्वरः॥
चीनदेशे जनिं लब्ध्वा भूमौ विषवक्प्रसर्पतः।
जनातङ्काद्विषाणोर्मा सर्वतः पाहि शंकरः॥
बालकृष्णः स्मरंस्त्वां वै कालकूटं न्यपादहो।
न ममारार्भकः शम्भो ततस्त्वां शरणं गतः॥
समुद्रमथनोद्भूतात् कालकूटाच्च बिभ्यतः।
त्वयैव रक्षिता देवा देवदेव जगत्पते॥
परक्षेत्रे चिकित्स्योऽयं महामारो भयंकरः।
भीषयति जनान्सर्वान् भव त्राता महेश्वर॥
वैद्या वैज्ञानिका विश्वे परास्ताश्च चिकित्सकाः।
आतंकिता निरीक्षन्ते त्रातारं त्वामुमेश्वरः॥
रक्ष रक्ष महादेव त्रायस्व जगदीश्वर।
पाहि पाहि प्रपन्नं मां कोरोनाख्याद् विषाणुतः॥
नान्यं त्वदभयं जाने भीतानां भीतिनाशकृता।
अतस्त्वां शरणं यातं भीतं पाहि महेश्वर॥
महायोगिन् महदेव कोरानाख्यं विषाणुकम्।
संविनाश्य जनान् रक्ष तव भक्तान् विशेषतः।
मांसाहारान् सुरापानान् कामं संहरतादयम्।
कोरोनाख्यो विषाणुस्तु मा हिंस्याच्छिवसेवकान्॥

को रो नाविषाणु भयकारणादे वास्य कोरोनारक्षाकवचस्य रचना कविना क्रियते। यद्यपि अस्ति इदं कोरोनारक्षाकवचं तथापि इदं रक्षाकवचमपि कोरोनाविषाणोः विभीषिकामेव प्रदर्शयति।

डॉ. मुकेशकुमारमिश्रः

कोरोना काले मानवजीवनं

कोरोनाजनितमहाव्याधिः सम्प्रति एका महती दुर्भाग्यपूर्णा घटना अस्ति। इदं महाप्रकोपं अस्ति यत् अस्माकं समक्षं घटितं अस्ति। विश्वस्वास्थ्य संगठनं संसारस्य स्वास्थ्य विशेषज्ञानां च विचारं अस्ति यत् अयं महारोगं शीघ्रं समाप्तं न भविष्यति। वयं अतीतकाले श्रेष्ठजीवनं यापितवन्तः, अनेकानेक उन्नतयः प्राप्तवन्तः किन्तु इदम् महत् सत्यम् अस्ति यत् कोरोना विषाणु समक्षे वयं निरूपायाः स्मः। तकनीकं वैज्ञानिकं च उपलब्धयः प्रतिदृष्टया जीवनं श्रेष्ठं कर्तुं न शक्नोति। अस्माभिः प्रकृतेः नियमानां सम्मानं करणीयं एव, प्रकृतेः शोषणं अपि अवरोधनीयः एव। मानवतायाः उपरि यदा यदा संकटं आगतवान्, तेषां समाधानाय विश्वं भारतस्य श्रेष्ठज्ञानपरम्परा समृद्धा संस्कृति च प्रकाशं दृष्टवती।

आत्मशोधनं विना आत्मनियन्त्रणं भवितुं न शक्नोति। आचरणं परिवर्तनाय कर्तव्यस्य पूर्वरूपं परिवर्तनाय च आत्मयोनिः आवश्यकम् अस्ति। निरामिषकर्तारं सात्विक जीवनपद्धति उपयोगकर्तारं प्रति कोरोनासंकटात् बहिःआगमनम् अन्येषां तुलनायां अधिकाधिक सुलभम् अस्ति। इदृशी जीवनपद्धति मानवतायां केनापि प्रकारेण विभेदं न करोति। ये जनाः इच्छन्ति ते अस्य अद्भुत् शक्तेः प्रयोगं कर्तुं शक्नुवन्ति। सम्पूर्ण स्वास्थ्याय सन्तुलितं जीवनं आहारं व्यवहारं सुष्ठु आचरणं सकारात्मकं चिन्तनं प्रकृतौ विद्यमानं मूलप्राणैः च स्वस्य योजनम् आवश्यकम् अस्ति।

जनानां जीवनं स्वस्थं भवेत् अस्मात् कोरोनाव्याधिं बाधितुं शक्नोति। एतदर्थं भारतीय जीवन पद्धति कोरोना पश्चात् युगे एकं मूल्ययुक्तं पाठं भवितुं शक्नोति निरामय जीवनशैल्याः आधारं भवितुं च शक्नोति। अस्माभिः स्वान्तरिक बाह्यं पर्यावरणस्य मध्ये सन्तुलनं

करणीयं यत् शतं कालात् अनेकेषु समाजेषु भग्नं एव अस्ति। अस्यां धरायां मानवः सर्वश्रेष्ठ प्राणी अस्ति। तम् यत् जीवनं प्राप्तं तत् दुर्लभम्। सर्वे जनाः कोरोना यथा अनेकसंकटात् पारयितुं सक्षमः सन्ति। वर्तमानकाले संपूर्ण विश्वं अस्माकं मानवतां भारतीय-मूल्ययुक्तं सभ्यता संस्कृतेः च आवश्यकता अस्ति। योगः आयुर्वेदः च भारतीय जीवनपद्धतिं निजतायाः सार्वभौमिकतायाः सार्वदेशिकतायाः समग्रतायाः वा प्रति गमनं आवश्यकं अस्ति।

शुभेन्दुशशांकः

कोरोनाकालः एकं विचित्रं परिदृश्यम्

काचन महामारी विश्वस्य संपूर्णं परिदृश्यं परिवर्तयितुं शक्नोतीति नैतदस्माभिः कदाचित् कल्पितम्। प्रायश एकवर्षपूर्वतः कोरोना-नाम्ना यया महामार्या निखिलेऽपि विश्वे त्राहि त्राहीति यः समुद्घोषः समुत्पादितः, तथास्माकं पठनपाठनस्य, आहारव्यवहारस्य किंच जीवनस्यापि सर्वा शैली परिवर्तिता।

चीनदेशादागता इयं महामारी संपूर्णविश्वव्यवस्था ध्वंसितवति। मित्रैः सह वार्तालापसङ्घो भवतु, अध्ययनाध्यापनं भवतु, भोजननिवासादिकं भवतु, आहारविहारो वा भवतु, सर्वमनया महामार्या अतिक्रान्तम्। प्रारम्भिके काले तु मित्रादिभिः सह मेलनमपि निषिद्धं जातम्। तदनु गृहाद् बहिर्गमने मुखोच्छादनवस्त्रधारणं हस्ते च सेनिटाइजर इत्याख्यः पदार्थः आवश्यको जातः। कीदृशीयं दशास्माकं जाता यद्वयं परस्परमस्पृश्या इव जाता, मेलन-प्रसङ्गेषु च गजद्वयपरिमितमन्तरं स्वीकुर्मः। यत्र वयमध्ययनार्थं गुरुणां सम्मुखे उपविश्य अध्ययनं कृतवन्तः, तत्र अद्यत्वे देशस्य विविधेभ्यो भागेभ्यः दूरभाषमाध्यमेन संगणकमाध्यमेन वा भुञ्जानाः शयानाः वा कथं कथमपि गुरुवाक्यानि शृणुमः। विना परीक्षामपि उत्तीर्णाः जाताः। इत्यैवास्माकमध्ययनकथा। अस्यायमपि महान् परिणामो जातः, यज्जनाः फास्टफूड इति बहिर्निर्मितं भोज्यं त्यक्त्वा गृहनिर्मितमेव भोजनं सेवन्ते। मैट्रो-यानेषु, मन्दिरैषु, विपणिषु चान्येषु सार्वजनिक-स्थलेषु जनसम्मर्दो न दृश्यते।

एकतो विश्वस्वास्थ्यसंघटनेन इयं महामारीत्वेन घोषिता, अपरतश्च सङ्घटनप्रकरणे अमेरिकाचीनयोर्मध्ये विवादोऽपि जातः। अनया महामार्या अद्ययावत् विश्वे विंशतिलक्षादप्यधिकाः, अस्माकं देशे च एकलक्षतोऽप्यधिकाः जनाः कालकवलिताः। रोगप्रसारं निरोद्धुं, नागरिकान् च संरक्षितुं प्रारंभे भारतसर्वकारेण यः पिधानादेशः संपादितः स च खलु समुचित एव

निर्णय आसीत्, अन्यथा इतोऽपि महत्तरो विनाशः संभव्येत। यद्यि अनेन राष्ट्रव्यापिना पिधानेन अनेकाः समस्या अपि समुत्पन्नाः, केषांचिद् जीविकोपार्जनं निरुद्धं, केषांचिद् भोजनविषयिणी समस्या जाता, तथापि तदा अयमेव एक उपाय आसीत्। अस्मिन् समयेऽपि केचन सेवाभाविनो जनाः संघटनानि निःस्वार्थभावेन समाजसेवार्थमगताः। यथा राष्ट्रीयस्वयंसेवकसङ्घः, तस्य चानुषङ्गकानि सेवाभारती, सक्षमश्चेत्यादीनि संघटनानि गृहं गृहं गत्वा अन्नौषधिवितरणमकुर्वन्। इतोऽप्यधिकं एभिः विविधैः संघटनैः स्थाने स्थाने रक्तदानशिविराण्यपि आयोजितानि। युवा सोसाइटी इत्याख्यैः समवायैः विश्वविद्यालयीयानां छात्राणां कृते भोजनादीनामावश्यकवस्तुनां व्यवस्था कृता। एभिः घटनाभिः प्रेरिताः समाजस्य नैके जनाः विविधोपायैः जनसेवायां संलग्नाः। तस्मादेव कारणात् समाजे एतादृशे संकटकालेऽपि सकारात्मकं वातावरणं निर्मितम्।

महतः प्रमोदस्य विषयो वर्तते यदेकवर्षाभ्यन्तर एव अस्माकं चिकित्सा-वैज्ञानिकैः भारतवर्षे रोगप्रतिरोधकौषधेः निर्माणं कृतम्। इयमास्माकं महती वर्तते उपलब्धिः। विश्व-स्वास्थ्य-संघटनेनापि अस्यानुमोदनं कृतम्। अपि च नेपाल-भूटान-मालदीवादीनि विविधानि राष्ट्राण्यपि भारतवर्षम् औषधार्थं निवेदयन्ति।

इयं महामारी वस्तुतो विश्वस्यमहत् शिक्षणं कृतवती। तादृशो विकासः मानवतायाः कृते उपादेयो न वर्तते, यस्मिन् प्रकृतेः उपेक्षा क्रियते। वैज्ञानिकी प्रगतिः मानवस्य कल्याणाय भवति, न तु स्वार्थ-साधनाय। पर्यावरणसंरक्षणमस्माकं परमं वर्तते कर्तव्यम्। विज्ञानस्य दुरुपयोगेन मानवता सुरक्षिता न भवितुमर्हति।

वरुणपँवारः

कोरोना : विश्वव्यापी-संक्रमणम्

कोरोना-विषाणुः विश्वव्यापी संक्रमणं प्रसारयति।
कोरोना विषाणुः अनेकप्रकाराणां विषाणूनाम् समूहः
भवति। कोरोना विषाणुः प्रकोपस्य आरंभः चीनदेशस्य
वुहान-नगरतः 2019 वर्षे आगच्छन्ति स्म।

कोरोना विषाणोः कारणात् मानवेषु श्वासनलिकासु
फुस्फुसेसु आदिषु संक्रमणं भवति।

विश्वस्वास्थ्यसङ्घटनेन अस्य विषाणु-समूहस्य
नाम कोविड-19 दत्तम्।

विश्वस्वास्थ्यसङ्घटनम् उद्धोषयति यत् कोरोना
एका महामारी अस्ति।

कोरोनामहामारी-काले गृहे वासकरणम्
अत्युत्तमम् अस्ति। कोरोना-काले रुग्णप्रतिरोधकक्षमतायाः
कृते पौष्टिकाहारम् आवश्यकमस्ति।

द्विगजस्य सामाजिक अन्तरम् मुखसंरक्षकम्
आवरणम् च प्रयोगम् आवश्यकमस्ति।

अस्माभिः अनेकवारम् हस्तशुद्धः करणीयः।

सार्वजनिक-स्थले आपणे उद्याने च न गन्तव्यम्।

एतत्काले शारीरिकाभ्यासप्राणायामादयः शरीरार्थम्
उत्तमाः भवन्ति।

एतत्काले शुचिपूर्णं वातावरणं आवश्यकम्
अस्ति।

भारते कोरोना संक्रमणस्य टीका इति आगता।

तथाऽपि सर्वकारेण मुखावरणं
द्विगजपरिमितान्तरालनियमः इति एतयोः पुनः पुनः
उद्धोषणा क्रियते।

धन्यवाद!

भावेशठाकुरः

कोरोने गच्छ देशं निजम्

हे विषाणो विहायास्मदीयां भुवं
गच्छ देशं निजं नात्र ते संस्थितिः।
गेहनष्टा विनष्टा जनाः स्युर्नहि
त्वं हि मा भूर्निमित्तं विनाशे नृणाम्॥1॥

देहसंस्पर्शजे हे महामारिके
चीनदेशात् किमर्थं गतान्यस्थले।
सृष्टिभूते प्रकृत्याः प्रकृत्यामिह
शान्तिमायाहि रोषं विहायाधिकम्॥2॥

क्रन्दनं कृत्स्नलोकस्य नैवं शुभं
स्पन्दनं जायतेऽङ्गेषु नैवं वरं।
नन्दनं नैव हार्दं कुतो मानसे
वन्दनं तेऽधिकं गच्छ देशं निजम्॥3॥

भारतीया हि या संस्कृतिस्तोषिणी
तां हि सम्पाल्य लोको भवेद्रक्षितः।
दूरतो वै नमस्कारकारी भव
हस्तपादादिशुद्धिप्रयासे रतः॥4॥

शाकभोज्यं वरं निन्द्यभोज्यादथ
गेहवासो वरो भिन्नदेशादयम्।
लोकसम्मर्दरोधः स्वयं पालयेद्
यः पराजेतुमिच्छेद् विषाणुं बलम्॥5॥


मयि स्वप्ने

मयि स्वप्ने ह्य आगतवान् कोरोना
मयि स्वप्ने ह्य आगतवान् कोरोना
वदितः मा मत्बिभेतु!
तं दृष्ट्वा यदाहम् बिभेमि विहस्यावदत्
मा बिभेतु!!
तदा तेन वदते
कियतस्सुष्ठुः ते सुसंस्कृतिः
न चुम्बन्ति न चालिङ्गयन्ति
सततं स्नानेन निमज्जयन्ति
वपुं च गृहञ्च सुशासयति॥
श्रृण्वन्तु! मा बिभेतु!
पुनः पुनस्सः वदति
कुत एवं अवबोधनमभवत्
जनसंख्यायाः दूर एव वसन्
सः मुखावरणेन च वारयति
कोरोनया भयहेतुगृहे वसति॥
श्रृणु मा बिभेतु!
तदेवं करोतु।
घनसारं दीपशिखाश्च प्रज्ज्वल्यात्
चीनीदेशीयवस्तूनि च तिरस्कारयतु
स्वदेशविशिष्टविविकासक हे
भट जागृहि रे स्वभिमानक हे॥
तदेव करोतु!
आद्यैव सुकार्यं तव शिक्षयितः
पदहस्तप्रक्षाल्य गेहे प्रवेश कुरु!
स्वसंस्कृतिरू रक्षय न च विस्मर्तु
सुंदरवनभारत सदा कल्पयतु॥
तदेवं करोतु!

विश्वनाथ पाहि नः

भक्षितं यत् त्वया व्यापिहालाहलं
रक्षिताः सर्वदेवाश्च लोकास्समे।
रक्षयसि व्याप्तकोरोनया पीडितान्
त्वं कदा, विश्वनाथ प्रभो पाहि नः॥1॥
नास्ति कस्याश्रयस्त्वां विना जीवने
जीवनं रक्षितुं नो समर्थास्तथा।
आगतोऽद्यैव कालः स रक्षाकृते
पाहि नः पाहि नो हे कृपासागर॥2॥
मृत्युमाप्ते फलं किं सुधाभक्षणाद्
दग्धकायाय शान्तिर्जलेनापि किम्।
नागते तेऽद्य दुःसङ्कटे जीवने
अन्यकाले प्रभो ह्यागते किं फलम्॥3॥

प्रजापतिङ्गा



ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਸੰਪਾਦਕ:
ਡਾ. ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋ.
ਦੇਸ਼ਬੰਧੂ ਕਾਲਜ
ਦਿੱਲੀ: 110019

ਸਹਿ-ਸੰਪਾਦਕ:
ਸਾਜੀਆ ਤੌਫੀਕ
ਵਿਦਿਆਰਥਣ
ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋ) 3
ਸਮੈਸਟਰ: 4



ਇਕ ਵੈਸ਼ਵਿਕ ਮਹਾਮਾਰੀ

- ਕਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ

ਇਹ ਵਾਇਰਸ ਬਿਨਾ ਕੋਸ਼ਿਕਾ ਦਾ ਛੋਟਾ ਜਿਹਾ ਜੀਵ ਹੈ। ਜਿਹੜਾ ਜਿੰਦਾ ਕੋਸ਼ਿਕਾ ਵਿਚ ਅੰਸ਼ ਨੂੰ ਵਧਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਇਹ 'ਨਾਭਿਕਈ ਅਮਲ' ਤੇ 'ਪ੍ਰੋਟਿਨ' ਨਾਲ ਮਿਲ ਕੇ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਸਰੀਰ ਦੇ ਬਾਹਰ ਦਾ ਬਿਨਾ ਜਾਨ ਤੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਵਾਇਰਸ ਇਹਨਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਨੰਗੀ ਅੱਖ ਨਾਲ ਵੇਖਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ।

- ਵਿਕਸਿਤ ਹੋਣਾ

ਇਸ ਦਾ ਆਰੰਭ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 1930 ਵਿਚ ਇਕ ਮੁਰਗੀ ਤੋਂ ਹੋਈ ਸੀ, ਤੇ ਇਸ ਨੇ ਮੁਰਗੀ ਦੀ ਸਵਾਸ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਅੱਗੇ ਚੱਲ ਕੇ 1940 ਵਿਚ ਕਈ ਜਾਨਵਰਾਂ ਵਿਚ ਮਿਲਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ 1960 ਵਿਚ ਇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਇਸ ਸੰਕ੍ਰਮਣ ਹੋਇਆ ਸੀ, ਉਸ ਨੂੰ ਵੀ ਠੰਡ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਸੀ। ਇਹਨਾਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੁਣ 2019 ਵਿਚ ਦਿਸਿਆ ਦੁਬਾਰਾ ਇਕ ਭਿਆਨਕ ਰੂਪ ਚੀਨ ਵਿਚ ਦੇਖਿਆ ਗਿਆ ਤੇ ਹੁਣ ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਫੈਲ ਚੁਕਿਆ ਹੈ।

- ਕਰੋਨਾ ਦੇ ਲੱਛਣ

ਬੁਖਾਰ ਜੁਕਾਮ ਤੇ ਖੰਘ
ਗਲੇ ਵਿਚ ਖਰਾਸ਼
ਸਰੀਰ ਦਾ ਸੁਸਤ ਹੋਣਾ
ਸਾਹ ਵਿਚ ਕਠਿਨਾਈ

ਇਸ ਦੇ ਲੱਛਣ ਫਲੂ ਨਾਲ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਕੋਵਿਡ-19 ਪਹਿਲਾ ਬੁਖਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਖੰਘ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਫਿਰ ਇਕ ਹਫਤੇ ਬਾਅਦ ਸਾਹ ਲੈਣ ਵਿਚ ਦਿੱਕਤ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਵੀ ਸਾਨੂੰ ਇਹ ਲੱਛਣ ਆਪਣੇ ਵਿਚ ਮਿਲਣ ਤਾਂ ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਕੋਰਨਾ ਹੈ। ਕਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ ਵਿਚ ਨਿਮੋਨੀਆ, ਕਿਡਨੀ ਫੇਲ ਹੋਣ ਤੇ ਇੱਥੋਂ ਤੱਕ ਕੇ ਮੌਤ ਵੀ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਇਹ ਵਾਇਰਸ ਚੀਨ ਵਿਚ ਆਇਆ ਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਇਹ 70 ਤੋਂ ਵੱਧ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਫੈਲਿਆ। ਇਸ ਦੇ ਖੇਤਰ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਸਾਵਧਾਨੀਆਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ।

- ਸੰਕ੍ਰਮਣ ਦੀ ਅਧਿਕਤਾ

ਇਹ ਵਾਇਰਸ ਬੱਚਿਆਂ ਤੇ ਬੁੱਢਿਆਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਪ੍ਰਭਾਵਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਕੋਸਰ, ਸਾਹ ਦੀ ਬਿਮਾਰੀ, ਲੀਵਰ ਵਿਚ ਦਿੱਕਤ, ਜਿਹਨਾਂ ਵਿਆਕਤੀਆਂ ਵਿਚ ਸਹਿਣ-ਸਮਰੱਥਾ ਘੱਟ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਜਲਦੀ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਉਮਰ	ਮੌਤ
0-19 ਸਾਲ	0-2%
20-29 ਸਾਲ	0.09%
30-39 ਸਾਲ	0.16%
60-70 ਸਾਲ	5.0%

80 ਤੋਂ ਵੱਧ

18%

- ਬਚਾਅ

ਕਰੋਨਾ ਇਕ ਤੋਂ ਦੂਜੇ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਹੀ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਚਲਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਹਾਲੇ ਤੱਕ ਸਹੀ ਇਲਾਜ ਨਹੀਂ ਲੱਭਿਆ ਗਿਆ। WHO ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਘੋਸ਼ਣਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ।

ਕੁਝ ਇਹੋ ਅਜਿਹੇ ਤਰੀਕੇ ਹਨ ਜਿਹਨਾਂ ਨਾਲ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਦਾ ਬਚਾ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ :

- ਹਰ ਹੋਜ਼ ਵਾਰ ਵਾਰ ਹੱਥ ਸਾਫ਼ ਕਰਨਾ
- ਹੱਥ ਧੋ ਕੇ ਮੂੰਹ ਨੂੰ ਢੁਕਣਾ
- 5 ਤੋਂ 6 ਫੁਟ ਦੀ ਦੂਰੀ ਰੱਖਣੀ
- ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਹੱਥ ਨਾ ਮਿਲਾਉਣਾ
- ਮਾਸਕ ਲਗਾ ਕੇ ਰੱਖਣਾ

ਨਾਮ: ਪੂਜਾ

ਕਲਾਸ: ਬੀ.ਏ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ

ਮੇਰੀ ਲਾਕਡਾਊਨ ਦੀ ਕਹਾਣੀ

2020 ਵਿਚ ਇਕ ਬਿਮਾਰੀ ਜਿਸ ਦਾ ਨਾਂ ਕੋਵਿਡ-19 ਹੈ। ਉਹ ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਪੈਰ ਪਸਾਰ ਚੁਕੀ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਪਹਿਲਾ ਕੋਵਿਡ-19 ਦਾ ਕੇਸ 27 ਜਨਵਰੀ 2020 ਵਿਚ ਸਹਾਮਣੇ ਆਇਆ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰਿੰਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ 25 ਮਾਰਚ ਨੂੰ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਕਰ ਦਿੱਤੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਦੌਰਾਨ ਸਾਡੇ ਕਈ ਨੁਕਸਾਨ ਅਤੇ ਫਾਇਦੇ ਹੋਏ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ 22 ਮਾਰਚ ਸ਼ਾਮ 5 ਵਜੇ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿਚ 5 ਮਿੰਟ ਥਾਲੀਆਂ ਖੜਕਾਉਣ ਦੀ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ। ਇਹ ਕਰਨ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਡਾਕਟਰ ਤੇ ਪੁਲੀਸ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਹੌਸਲਾ ਮਿਲਿਆ। ਮੈਂ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿਚ ਇਸ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਤੋਂ ਖੁਸ਼ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਰੇ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਲਾਕਡਾਊਨ ਲੱਗਿਆ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਕਾਲਜ ਸਕੂਲ ਬੰਦ ਸਨ। ਸ਼ੁਰੂ ਵਿਚ ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਖੇਡਾਂ ਖੇਡੀਆਂ, ਸਵੇਰੇ ਤੋਂ ਸ਼ਾਮ ਤੱਕ ਫਿਲਮਾਂ ਦੇਖ ਆਨੰਦ ਲਿਆ। ਅਸੀਂ ਨੋਟਫਲਿਕਸ ਵੇਖ ਕੇ ਅਪਣੀ ਵਿਚ ਕੁਝ ਮਨੋਰੰਜਨ ਦੇ ਤੱਤ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ। ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਘਰੇਲੂ ਕੰਮ-ਕਾਜਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਅਨੰਦਮਈ ਬਣਾਇਆ। ਮੈਂ ਇਸ ਖਾਲੀ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਨਵੇਂ-ਨਵੇਂ ਪਕਵਾਨ ਸਿੱਖਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ। ਮੇਰੇ ਵਰਗੇ ਕੋਈ ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ ਰਸੋਈ ਵਿਚ ਦਾਖਲ ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ। ਮੈਂ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਮਿਠਾਈਆਂ ਬਣਾਈਆਂ ਜਿਵੇਂ- ਜਲੇਬੀ, ਗੁਲਾਬ ਜ਼ਾਮਨ, ਰਸਗੁਲੇ ਅਤੇ ਖੀਰ ਆਦਿ। ਲਾਕਡਾਊਨ ਵਿਚ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਨਾਲ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਸਮਾਂ ਬਿਤਾਇਆ। ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨਾਲ ਮੈਂ ਘਰ ਵਿਚ ਲੱਭੂ ਤੇ ਕਰੀਮ ਬਣਾਈ।

ਬੋਰਡ ਜਿਹੇ ਖੇਡ ਖੇਡੇ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਹਰ ਕੋਈ ਘਰੋਂ ਕੰਮ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਕਾਲਜ ਦੀਆਂ ਛੁਟੀਆਂ ਕੁਆਲਟੀ ਦਾ ਸਮਾਂ ਰਿਹਾ। ਸਾਡਾ ਆਵਾਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ, ਖੇਡਾਂ, ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲਬਾਤ ਕਰਨ ਦਾ ਸਮਾਂ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਵਿਚ ਬੱਝ ਗਿਆ। ਸਾਡੀਆਂ ਕਲਾਸਾਂ ਲਈ ਕੁਆਲਟੀ ਦੇ ਚਾਰ ਘੰਟੇ ਬਿਤਾਉਣ ਅਤੇ ਸਵੈ-ਅਧਿਐਨ ਲਈ ਵਧੇਰਾ ਸਮਾਂ ਬੱਚ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਆਨਲਾਈਨ ਕਲਾਸਾਂ ਵਿਚ 50-60% ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਜੁੜਦੇ ਸਨ, ਜਦਕਿ ਕਲਾਸ ਰੂਮ ਵਿਚ 80-90% ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸ਼ਾਮਲ ਹੁੰਦੇ ਸਨ।

ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਹੱਥਾਂ ਨੂੰ ਸੈਨਿਟਾਇਜ਼ਰ ਕਰਦੇ ਰਹੇ। ਅਸੀਂ ਘਰ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਗਏ। ਅਸੀਂ ਲਾਕਡਾਊਨ ਵਿਚ ਕਰੋਨਾ ਤੋਂ ਬੱਚਣ ਦੀ ਪੂਰੀ-ਪੂਰੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਪਰ ਅਸਫਲ ਰਹੇ।

Tanya Maggu

B.A Prog.

ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰੋਂਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ ਇਕ ਵੀਡੀਓ ਸੰਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਨੂੰ 5 ਅਪ੍ਰੈਲ ਨੂੰ ਰਾਤ 9 ਵਜੇ 9 ਮਿੰਟ ਲਈ ਆਪਣੀਆਂ ਲਾਈਟਾਂ ਬੰਦ ਕਰਨ ਅਤੇ ਇਕ ਮੋਮਬੱਤੀ ਜਾਂ ਇਕ ਦੀਵਾ ਜਗਾਉਣ ਜਾਂ ਮੋਬਾਈਲ ਤੇ ਫਲੈਸ਼ ਲਾਈਟ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਦੀ ਮੰਗ ਕੀਤੀ ਜੋ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਕੋਵਿਡ-19 ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਵਿਰੁਧ ਲੜਾਈ ਨੂੰ ਦਰਸਾ ਸਕੇ। ਕਰੋਨਾ ਕਰਕੇ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਡਰੇ ਹੋਏ ਸੀ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਲੋਕ ਘਰ ਵਿਚ ਸੈਨਿਟਾਇਜ਼ਰ ਰੱਖਦੇ ਸੀ ਅਤੇ ਕੋਈ ਵੀ ਵਸਤੂ ਸੈਨਿਟਾਇਜ਼ਰ ਕਰੇ ਬਿਨਾ ਘਰ ਨਹੀਂ ਲੈ ਕੇ ਜਾਂਦੇ ਸੀ। ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਸਕੂਲ, ਕਾਲਜ, ਦਫਤਰ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਬੰਦ ਸੀ ਨਾ ਕੋਈ ਕਿਸੇ ਦੇ ਘਰ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਨਾ ਕਿਸੇ ਦੇ ਨਾਲ ਮਿਲਦਾ ਸੀ। ਕਰੋਨਾ ਕਰਕੇ, ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਇੱਕੱਲੇ ਇੱਕੱਲੇ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨਾਲ ਰਹਿੰਦੇ ਸੀ। ਕੋਰਨਾ ਵਾਇਰਸ ਨੇ ਬਹੁਤ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਜਾਨ ਲਈ ਹੈ। ਇਸ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਤੋਂ ਸਾਨੂੰ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਸਿੱਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਰਿਹਾ। ਜਿਵੇਂ ਜੀਉਣ ਲਈ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਅਸੀਂ ਵੇਖੋ-ਵੇਖਾਈ ਦਿਖਾਵਾ ਕਰਨ ਲੱਗ ਜਾਂਦੇ ਹਾਂ। ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਸੀ, ਪਰ ਜੇ ਇਨਸਾਨ ਪਰਿਵਾਰ ਨਾਲ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਮੁਸ਼ਕਲ ਵਕਤ ਵੀ ਕੱਟ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਕਾਰਨ ਹਵਾ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਬਿਲਕੁਲ ਘੱਟ ਗਿਆ ਸੀ। ਕਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ ਫੈਲਣ ਕਾਰਨ ਵਾਤਾਵਰਨ ਤੇ ਇਕ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਨੇ ਸਾਰੀਆਂ ਆਰਥਿਕ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਧੀਮਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਰਾ ਸੰਸਾਰ ਗੰਭੀਰ ਸੰਕਟ ਤੋਂ ਲੰਘ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਰੋਜ਼ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਦੀਆਂ ਰਿਪੋਰਟਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਇਸ ਵਾਇਰਸ ਤੋਂ ਕਾਫੀ ਲੋਕ ਮਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਨਾਲ ਵਾਇਰਸ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ ਕਾਫੀ ਹਦ ਤੱਕ ਫਾਇਦੇਮੰਦ ਰਿਹਾ। ਜੇ ਅਸੀਂ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ ਤਾਂ ਭਵਿੱਖ ਵਿਚ ਸਾਨੂੰ ਇਸ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਖਤਰੇ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈ ਸਕਦਾ ਸੀ।

ਨਾਮ: ਭਾਵਿਕਾ ਮਹਿਰਾ
ਕਾਲਸ: ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋ)

ਕਰੋਨਾ

ਚੀਨ ਵਿਚੋਂ ਨਿਕਲਿਆ ਇਕ ਅਜੂਬਾ
ਨਾਂ ਰੱਖਿਆ ਉਸਦਾ ਕਰੋਨਾ
ਘਰ ਬਿਠਾ ਕੇ ਸਾਰੀ ਲੋਕਾਈ ਨੂੰ
ਕੀਤਾ ਇਸ ਨੇ ਰਾਜ
ਇਕ ਤੋਂ ਨਾ ਰੱਜਿਆ ਉਹ
ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣੇ ਹਜ਼ਾਰ
ਦਿਨ ਗਿਣ ਗਿਣ ਕੇ ਹਾਰੇ ਅਸੀਂ
ਤੇ ਹੁਣ ਲੰਘ ਗਿਆ ਸਾਲ
ਹਾਏ! ਰੱਬਾ
ਅੰਤ ਕਰ ਇਸ ਦਾ ਹੁਣ
ਕਿ ਬਚੀ ਰਹੇ ਤੇਰੀ ਲੋਕਾਈ
ਤੇ ਖੁਦਾਈ
ਅਣਗਿਣਤ ਹੋਈਆਂ ਮੌਤਾਂ
ਤੇ ਮੋਏ ਕਈ ਜਜ਼ਬਾਤ
ਅਜ ਘਰ ਵਿਚ ਬੈਠੇ
ਹਰ ਇਕ ਨੂੰ ਸ਼ੱਕੀ ਨਿਗਾਹ
ਨਾਲ ਵੇਖਦਾ ਅਜ ਇਹ ਕੀ ਹੋ ਗਿਆ
ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦਾ ਹਾਲ
ਪਰ ਕਰੋਨਾ ਜੀ
ਜਰ ਕੇ ਇਹ ਮਾੜੇ ਦਿਨ
ਦਿਲ ਨੇ ਫਿਰ ਵੀ ਨਾ
ਮੰਨੀ ਹਾਰ

ਵਜਾ ਕੇ ਥਾਲੀ
ਜਗਾ ਕੇ ਮੋਮਬੱਤੀਆਂ
ਸੈਨਿਟਾਇਜ਼ਰ ਤੇ ਸੋਸ਼ਲ ਡਿਸਟੈਂਸਿੰਗ ਦੀ ਰਣਨੀਤੀ ਨਾਲ
ਜਿੱਤਾਂਗੇ ਇਹ ਜੰਗ
ਇਕ ਨਹੀਂ
ਸੋ ਸੋ ਵਾਰ...

ਨਾਮ: ਅਨਿਲ ਸਰੂ
ਕਲਾਸ: ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋ)

ਜ਼ਿੰਦਗੀ 'ਚ ਬਦਲਾਅ ਕਰੋਨਾ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਦੇ ਕਾਰਨ

ਕਰੋਨਾ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਨੇ ਸਾਡਾ ਰਹਿਣ-ਸਹਿਣ, ਖਾਣ-ਪੀਣ ਬਹੁਤ ਹੱਦ ਤੱਕ ਬਦਲ ਦਿੱਤਾ। ਇਸ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਨੇ ਕੁਝ ਇਹੋ ਅਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਜੋ ਮਨੁੱਖ ਨੇ ਕਦੇ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਸੋਚੀ। ਕੋਵਿਡ-19 ਨੇ ਮਨੁੱਖਾਂ ਦਾ ਜੀਵਨ ਕੁਝ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਕਿ ਮਾਸਿਕ ਦਾ ਉਪਯੋਗ, ਸਮਾਜਿਕ ਦੂਰੀ ਅਤੇ ਸਾਫ-ਸਫਾਈ ਸੈਨਿਟਾਇਜ਼ਰ ਸਾਡੇ ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰਤ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਨੇ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬਦਲਾਵ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਹਨ- ਹੱਥ ਮਿਲਾਉਣ ਦੀ ਥਾਂ ਦੂਰੋਂ ਹੱਥ ਜੋੜ ਕੇ ਨਮਸਕਾਰ ਕਰਨਾ, ਮੂੰਹ ਤੇ ਮਾਸਿਕ ਲਾ ਕੇ ਰੱਖਣਾ ਅਤੇ ਦਿਨ ਵਿਚ ਕਈ ਵਾਰ ਹੱਥ ਧੋਣੇ ਆਦਿ।

ਇਸ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਨੇ ਵਪਾਰ, ਪੜ੍ਹਾਈ ਅਤੇ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅਨੇਕਾਂ ਕੰਮਾਂ ਨੂੰ ਕਰਨ ਦਾ ਤੌਰ-ਤਰੀਕਾ ਬਦਲ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ ਬੱਚੇ ਘਰਾਂ ਵਿਚ ਹੀ ਨੈੱਟ ਰਾਹੀਂ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਤਿਉਹਾਰ ਲੋਕ ਇੱਕਠੇ ਹੋਣ ਦੇ ਦਿਨ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਇਸ ਭਿਆਨਕ ਬਿਮਾਰੀ ਨੇ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨਾਲ ਤਿਉਹਾਰ ਮਨਾਉਣ ਦਾ ਇਕ ਵੱਖਰਾ ਢੰਗ ਸਿਖਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਮਨੁੱਖ ਇਹ ਆਸ ਕਰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪੁਰਾਣਾ ਸਮਾਂ ਵਾਪਸ ਆਵੇ ਅਤੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਪਹਿਲਾਂ ਵਾਂਗ ਪੁਰਾਣੇ ਤਰਿਕਿਆਂ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਨਾਲ ਜੀ ਸਕੀਏ।

ਨਾਮ: ਆਕਰਸ਼
ਕਲਾਸ: ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋ)

ਕਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ ਇਕ ਸੰਸਾਰਿਕ ਮਹਾਂਮਾਰੀ

ਇਹ ਤਾਜ਼ ਜੋ ਤੂੰ ਪਾਇਆ ਹੈ,
ਜਿੱਥੋਂ ਤੈਨੂੰ ਨਾਮ ਮਿਲਿਆ,
ਕਰਕੇ ਬਿਮਾਰ, ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਜਾਨ,
ਕੀ ਇਹੋ ਹੈ ਤੈਨੂੰ ਮਿਲਿਆ,
ਆਫਤ ਵਿਚ ਪਾ ਦਿੱਤਾ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ,
ਲੋਕੀ ਨਾਮ ਤੇਰੇ ਤੋਂ ਡਰਦੇ,
ਤੇਰੇ ਤੋਂ ਸੰਕਰਮਿਤ ਹੋਣ ਵਾਲੇ,
ਬਹੁਤੇ ਲੋਕ ਮਰ ਰਹੇ,
ਸੋਖਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ਇਲਾਜ ਤੇਰਾ,
ਤੇ ਮਨੁੱਖ ਹਾਰ ਜਾਏਗਾ,
ਨਹੀਂ ਤੈਨੂੰ ਜੜ੍ਹ ਤੋਂ ਉਖਾੜ ਦੇਵੇਗਾ,
ਸਮੇਂ ਦੀ ਹੈ ਦਰਕਾਰ
ਜਿੱਤਾਂਗੇ ਅਸੀਂ ਸਾਥੀ
ਪਾਵਾਂਗੇ ਤੈਨੂੰ ਮਾਤ
ਹੁਣ ਘਰਾਂ ਦੇ ਬੂਹੇ
ਬੰਦ ਨਹੀਂ ਹੋਣਗੇ

ਨਾ ਹੋਣਗੇ ਕਾਰੋਬਾਰ
ਪਰ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਲੜਣ ਲਈ
ਕਰੋਨਾ
ਹੁਣ ਰੱਖਾਂਗੇ ਕੁਝ
ਖਾਸ ਗੱਲਾਂ ਦਾ ਖਿਆਲ
ਕੁਝ ਅਹਿਮ ਗੱਲਾਂ ਦਾ
ਖਿਆਲ...

ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ

1

ਕੁਦਰਤ ਮਨੁੱਖ ਤੇ ਕਰੋਨਾ
ਰੋਟੀ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਖਾ ਲੈਂਦੇ ਸੀ
ਮਾਪੇ ਦਿਨ ਰਾਤ ਆਪਣੇ ਮੁੜ੍ਹਕੇ ਦੀ
ਕਮਾਈ ਨਾਲ ਟੱਬਰ ਪਾਲਦੇ
ਤੇਰੇ ਆਉਣ ਨਾਲ ਕਰੋਨਾ
ਹੁਣ ਮਾਪਿਆਂ ਦੇ ਮੱਥੇ ਮੁੜ੍ਹਕਾ ਨਹੀਂ
ਆਉਂਦਾ...
ਘਰਾਂ ਦੇ ਚੁੱਲ੍ਹੇ
ਜੁਗਨੁਆਂ ਵਾਂਗ ਟਿਮਟਿਮਾਉਂਦੇ
ਤੇਰੇ ਆਉਣ ਨਾਲ
ਕਿੰਨੇ ਹੀ ਲੋਕ
ਬੇਬਸੀ ਦੀ ਮੌਤ
ਮਰੇ
ਕੌਣ ਚੱਕਦਾ ਇਹਨਾਂ ਲਾਸ਼ਾਂ ਦੀ
ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ
ਨਾ ਕੰਮ ਆਈ ਥਾਲੀ ਵਜਾਉਣੀ
ਇਹ ਕੈਸਾ ਕਹਿਰ ਸੀ ਕੁਦਰਤ ਦਾ
ਜਿਸ ਵੱਲ ਸਾਡੀ ਪਿੱਠ ਸੀ
ਮਾੜੇ ਹਾਂ ਹੁਣ ਅਸੀਂ ਉਸ ਵਲ
ਜਿੱਥੋਂ ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਬੋਲਦਾ ਹੈ
ਜਿੱਥੋਂ 'ਵੈਰੀ ਨਾਗ' ਤੇਰਾ ਪਹਿਲਾ ਝਲਕਾਰਾ ਦਿਸਦਾ ਹੈ।

ਨਾਮ: ਸਾਜੀਆ ਤੋਫੀਕ
ਕਲਾਸ: ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੋ)

2

ਹੈ ਕਰੋਨਾ...
ਹੈ ਕਰੋਨਾ ਤੁਸੀਂ ਕਿੱਥੇ ਆਏ ?

ਸਭ ਕੁਝ ਅਲੱਗ ਹੋ ਗਿਆ
 ਜਿੰਦਗੀ ਦਾ ਹਾਸਾ ਹੋ ਗਿਆ
 ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਸੀ ਸੋਚਿਆ
 ਇੰਜ ਵਾਪਰ ਜਾਏਗਾ
 ਮਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ
 ਹੱਥ ਧੋਵੋ
 ਘਰ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਕਿਤੇ ਵੀ ਨਾ ਜਾਓ
 ਦੋਸਤਾਂ ਨੂੰ ਭੁਲ ਜਾਓ
 ਘਰ 'ਚੋਂ ਹੀ ਬੈਠੋ
 ਆਨਲਾਈਨ ਕਲਾਸਾਂ ਲਗਾਓ
 ਇੰਜ ਲਗਦਾ ਜਿਵੇਂ
 ਕਰੋਨਾ ਨੇ ਸਾਡੇ
 ਬਚਪਨ ਨੇ ਡੰਗ ਮਾਰਿਆ ਹੈ
 ਨਹੀਂ ਸੀ ਪਤਾ ਕਦੇ
 ਇੰਜ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ
 ਅਜ ਮਿਲਦੇ ਹਾਂ
 ਪਰ ਗਲੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੇ
 ਦੂਰੋਂ ਹੀ ਹੱਥ ਜੋੜ ਕੇ
 ਜੀ ਆਇਆਂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ
 ਇਹ ਇਹੋ ਜਿਹੀ ਨੈਤਿਕਤਾ

3

ਸਾਨੂੰ ਸਿੱਧਾ ਰਿਹਾ ਕਰੋਨਾ
 ਹੈ ਕਰੋਨਾ
 ਤੂੰ ਮੌਤ ਦਾ ਵਪਾਰੀ ਏਂ
 ਵਿਪਾਰੀ ਵੀ ਇਹੋ ਅਜਿਹਾ
 ਜਦੋਂ ਅਜ ਸਾਡੇ
 ਸਕੂਲ, ਕਾਲਜ ਤੇ ਦੁਕਾਨਾਂ
 ਅਤੇ ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਕਾਰਖਾਨਿਆਂ
 ਦੀਆਂ ਚਿਮਨੀਆਂ ਦਾ ਧੂੰਆਂ
 ਤੂੰ ਸਭ ਕੁਝ ਨਿਹਾਲ ਗਿਆ
 ਫਿਰ ਵੀ ਆਸ ਬਾਕੀ ਹੈ
 ਅਸੀਂ ਜਿੱਤਾਂਗੇ
 ਹਾਰਾਂਗੇ ਨਹੀਂ
 ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ
 ਪਰ ਤੇਰਾ ਧੰਨਵਾਦ ਵੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਅਸੀਂ
 ਕੀ ਤੂੰ ਸਾਨੂੰ ਕੁਦਰਤ ਨਾਲ
 ਜੋੜਿਆ ਹੈ
 ਕਰੋਨਾ...

ਨਾਮ: ਜਤਿਨ
 ਕਲਾਸ: ਬੀ.ਏ (ਪ੍ਰੈ)

ਤਾਲਾਬੰਦੀ 2020

2019-20 ਕਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ ਮਹਾਂਮਾਰੀ ਦਾ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਪਹਿਲਾ ਮਾਮਲਾ 30 ਜਨਵਰੀ 2020 ਨੂੰ ਦਰਜ ਹੋਇਆ ਜੋ ਚੀਨ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਕਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ ਇਕ ਵਿਆਕਤੀ ਤੋਂ ਦੂਜੇ ਵਿਆਕਤੀ ਵਿਚ ਫੈਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ ਵਿਸ਼ਾਣੂ ਦੇ ਸੰਪਰਕ ਦੇ 14 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ-ਅੰਦਰ ਵਿਚ ਲੱਛਣ ਦਿਸਣ ਲੱਗ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰੇਂਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ 24-25 ਮਾਰਚ ਦੀ ਅੱਧੀ ਰਾਤ ਤੋਂ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਦਾ ਐਲਾਨ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਇਹ 21 ਦਿਨ ਬਿਮਾਰੀ ਦੇ ਫੈਲਣ ਨੂੰ ਘਟਾਉਣ ਵਾਸਤੇ ਫਾਇਦੇਮੰਦ ਸੀ। ਇਹ ਫੈਸਲਾ WHO ਦੇ ਸਲਾਹ ਮਸ਼ਵਰੇ ਨਾਲ ਲਿਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਤਾਲਾਬੰਦੀ ਵੱਧਦੀ ਹੀ ਗਈ। ਦੁਕਾਨਾਂ ਵੀ ਖੁਲਣੇ ਬੰਦ ਹੋ ਗਈਆਂ ਸਨ। ਫਿਰ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਇਕ ਦਿਨ ਛੱਡ ਕੇ ਦੁਕਾਨਾਂ ਖੁਲਣੀਆਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈਆਂ। ਕੰਮ-ਕਾਜ ਠੱਪ ਹੋ ਕਾਰਣ ਲੋਕ ਬਹੁਤ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਹੋ ਗਏ ਸਨ। ਜਿਹੜੇ ਲੋਕ ਦੂਜੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਸਨ ਉਹ ਮੁੜ ਵਾਪਸ ਜਾਣ ਜੋਗੇ ਨਾ ਰਹੇ। ਕਈ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਚੱਲਿਆ ਰੋਟੀ ਲਈ ਵੀ ਲੋਕ ਤਰਸ ਰਹਿ ਸਨ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਵਿਚਰੇ ਭੁਖ ਕਾਰਨ ਹੀ ਮਰ ਗਏ।

ਕਰੋਨਾ ਕਾਰਨ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਡਰ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਸੀ। ਲੋਕ ਆਪਣਿਆਂ ਤੋਂ ਹੀ ਡਰ ਰਹੇ ਸਨ। ਜੋ ਕਰਮਚਾਰੀ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਦੇਖ-ਭਾਲ ਕਰ ਰਹੇ ਸਨ, ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਹੌਸਲਾ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨੇ 22 ਮਾਰਚ ਸ਼ਾਮ 5 ਵਜੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਘਰਾਂ ਵਿਚ ਤਾੜੀਆਂ ਤੇ ਥਾਲੀਆਂ ਖੜਖਾਉਣ ਲਈ ਕਿਹਾ।

‘দেশ’ পত্রিকা

॥ বাংলা বিভাগ ॥

শিক্ষক-সম্পাদক

ড. অন্তরা চৌধুরী

ছাত্র-সম্পাদক

শ্রী অনিকেত সাহা

সূচীপত্র

১. সম্পাদকীয়	-	অনিকেত সাহা
২. একদিন বাড় থেমে যাবে	-	ফারিহা আমন
৩. অন্তরাগে	-	মানব রায়
৪. পূজোর খুশি	-	সোনালী মণ্ডল
৫. শূন্য	-	প্রিয়াঙ্কা শর্মা
৬. করোনার কারিকুরি	-	সুমিত্রা করণ
৭. জলঙ্গীর তীরে	-	অনিকেত সাহা
৮. স্বাগত বৈশাখ	-	অভিজিৎ দাস
৯. বৃন্তের বাইরে	-	প্রিয়াঙ্কা সাহ
১০. প্রত্যয়	-	অর্পিতা দাস

সম্পাদকীয়

করোনা আতঙ্কে দীর্ঘদিন লকডাউনের বদ্ধতায় স্বাভাবিক জীবন যাপন ছিল বিধ্বস্ত ও বিপর্যস্ত। বহু মানুষ কর্মহীন ও ভবিষ্যৎহীন হয়ে পড়লেন এই সময়। মানুষের সুকুমার বৃত্তির প্রকাশ হয়ে পড়েছিল সম্পূর্ণভাবে বাধাগ্রস্ত। এই বদ্ধতা কাটিয়ে ধীরে ধীরে আবার সব কিছু তার স্বাভাবিকত্বে ফিরতে চেষ্টা করছে। কোভিড-সতর্কীকরণ, বিধিনিষেধ ইত্যাদি একইরকম বহাল থাকলেও, মানুষ তার নিত্যজীবনের চাহিদা অনুযায়ী দিনযাপনে ক্রমশঃ নিয়ে আসছেন স্বাভাবিক ছন্দ। যা অত্যন্ত সঙ্গত। এইভাবেই আমরা ফিরে পেতে চাইছি আগেকার মতন সব কিছু।

বেশ কিছুকাল যাবৎ ‘দেশ’ পত্রিকার প্রকাশ বন্ধ থাকার পর অবশেষে এটি আবার আত্মপ্রকাশ করলো। যা নিঃসন্দেহেই পাঠকদের কাছে স্বস্তির বাতাস নিয়ে এলো। কিন্তু এরকম বিপর্যস্ত সময়ে, খুব অল্পদিনের প্রস্তুতিতে আমরা এইবারের সংখ্যাটিকে সাজিয়েছি নানা প্রবন্ধ, গল্প আর কবিতার সমাহারে। যদি পাঠকদের ভালো লাগে, তবেই লেখকের সার্থকতা।

এই অসুস্থ, অশান্ত সময়ে দাঁড়িয়ে ‘দেশ’ পত্রিকার বর্তমান সম্পাদককে পত্রিকা প্রকাশের গূঢ় দায়িত্ব সুষ্ঠুতার সঙ্গে সম্পন্ন করার জন্য অকুণ্ঠ সাধুবাদ জানাই। সর্বোপরি, পাঠকবৃন্দসহ সকল সাধারণ মানুষের প্রতি আমাদের বিনম্র আবেদন - প্রত্যেকে যথাসাধ্য প্রতিনিয়ত কোভিড-বিধি মান্য করে চলুন, কারণ করোনা আজও যাপনের অংশ! ধন্যবাদান্তে —

অনিকেত সাহা
(ছাত্র-সম্পাদক)

একদিন ঝড় থেমে যাবে

ফারিহা আমন

বি.এ. প্রোগ্রাম, দ্বিতীয় বর্ষ

করোনা ভাইরাসের প্রভাবে আমাদের প্রাত্যহিক বা রোজকার জীবনে অনেক অসুবিধার সম্মুখীন হতে হচ্ছে।

তার মধ্যে গুরুত্বপূর্ণগুলি হল—

প্রাত্যহিক জীবনে ব্যবহৃত দ্রব্য ও খাদ্যদ্রব্যের দাম বৃদ্ধি :-

— করোনা ভাইরাসের প্রভাবে বিশ্বজুড়ে Lockdown অথবা বিশ্ববন্ধ চলছে। এর ফলে বহুলোক ভবিষ্যতের কথা চিন্তা করে বাড়িতে আনাজ, খাদ্যদ্রব্য ও প্রাত্যহিক জীবনে ব্যবহৃত দ্রব্য বেশি করে কিনে মজুত করে রাখছে এর ফলে দোকানদারের কাছে প্রয়োজনের তুলনায় কম দ্রব্য থাকলে, সেই দ্রব্যগুলির দাম উচ্চহারে বাড়িয়ে দিয়ে বিক্রি করা হচ্ছে। এর ফলে চারিদিকে কালো বাজারি ছড়িয়ে পড়ছে।

আজ দরকারি জিনিষ পাওয়া যাচ্ছে না বাজারে।

যেমন : করোনা ভাইরাস প্রতিরোধে হ্যান্ড স্যানিটাইজার ও হ্যান্ড ওয়াশ অতিরিক্ত মজুত করে রাখায় আজ বাজারে তা অদৃশ্য হয়ে গেছে বললেই চলে।

কাঁচা সবজির দাম বৃদ্ধি : খাদ্যদ্রব্যের মধ্যে কাঁচা সবজির কালো বাজারি চলছে দেশজুড়ে। অতিরিক্ত লাভের আশায় চড়া দামে বিক্রি হচ্ছে কাঁচা সবজি।

জরুরী ঔষধের যোগান হ্রাস ও দাম বৃদ্ধি :-

বিশ্বজুড়ে করোনা ভাইরাসের প্রভাবে চলছে লকডাউন এবং এই লকডাউনে বাদ যায়নি ঔষধ তৈরীর কারখানাও। তার ফলে জরুরী ঔষধ মজুত না থাকায়, ঔষধের যোগান হ্রাস পেয়েছে কিন্তু চাহিদার প্রতি যোগান কম হওয়ায় ঔষধের দাম বিপুল পরিমাণে বেড়েই চলেছে। প্রয়োজনীয় ঔষধ না পাওয়ায় অসুস্থ হয়ে পড়েছে লোকজন।

সঞ্চিত পুঁজি ক্ষয় এবং আর্থিক সংকট :

লক ডাউনের ফলে উপার্জন প্রায় বন্ধ বললেই বলে। কিন্তু খরচা একই। উপার্জন না হওয়ায় সঞ্চিত পুঁজি ক্ষয় হচ্ছে। দেখা দিচ্ছে বিপুল পরিমাণে আর্থিক সংকট। সরকারের তরফ থেকে রেশন ও জরুরী সামগ্রী দেওয়া হচ্ছে, কিন্তু তা বহু সাধারণ জগণের কাছে পৌঁছোচ্ছে না, এর ফলে খাদ্য সংকট ও দেখা দিতে পারে।

মানসিক পীড়া :-

করোনা ভাইরাসের প্রভাবে “লকডাউন; এই লকডাউনের ফলে চিড়িয়াখানার জন্তুদের মত অবস্থা মানবসমাজের। দেশের বিভিন্ন প্রান্তে আটকে থাকা পরিবারের সদস্য ও আত্মীয়স্বজনদের চিন্তায় কাতর আজ মানব সমাজ। এর ফলে বিভিন্ন মানুষ ভুগছে মানসিক পীড়ায়।

‘Quarentine’-এর প্রভাবে শারীরিক পরিবর্তন :-

দৈনন্দিন কাজের থেকে বঞ্চিত হয়ে মানব সমাজে আজ ঘরবন্দী। দৈনন্দিন কার্যের থেকে বঞ্চিত হওয়ায় বিভিন্ন মানুষের মধ্যে নানা শারীরিক ও মানসিক পরিবর্তন হচ্ছে যেমন — ওজন বাড়া, ওবেসিটি, আলসেমি ইত্যাদি। শারীরিক পরিবর্তনের উদাহরণে বলা যেতে পারে, ঘরবন্দী হয়ে মোবাইল ও কম্পিউটারে সারাক্ষণ Online Class-এর ফলে চোখের এবং মানসিক ক্ষতি হচ্ছে বহু মানুষের। করোনার ভয়ে আতঙ্কিত হয়ে জীবন কাটাচ্ছেন বহু মানুষ।

উপসংহার :-

প্রাত্যহিক জীবনে নানা সমস্যার সম্মুখীন হচ্ছেন মানুষ। আর্থিক ও মানসিক চাপে আজ মানবসমাজ দিশেহারা। হঠাৎ এক অজানা ‘কালবৈশাখী’ ঝড় যেন আছড়ে পড়েছে বিশ্ববুকে। তবুও প্রত্যেকটি মানুষ একটি আশায় বেঁচে আছে যে ‘ঝড় একদিন থেমে যাবে।’

অস্তুরাগে

মানব রায়

বি.এ. প্রোগ্রাম, তৃতীয় বর্ষ

অস্তুরাগী সূর্যের রক্তিম

সোনালী আভার দ্যুতি

ছড়িয়ে পড়েছে খণ্ড খণ্ড মেঘে।

আকাশ সেজে ওঠে

লাল চেলির রং-এ।

দূর সমুদ্রের দিকচক্রবলে

নিভস্ত আগুনের মতো

লাল হয়ে ওঠে।

চিন্ত মোর মুগ্ধ হয়

প্রকৃতির এই অব্যক্ত নিসর্গ শোভায়।

এক বিশাল স্তিমিত অগ্নিগোলক

হারিয়ে যায় প্রশান্ত মহাসাগর কূলে।

আমি অবাক হয়ে তাকিয়ে থাকি—

ধীরে ধীরে গোধূলি

হারিয়ে যায় ঘন তমিষ্রায়।

পুজোর খুশি

সোনালী মণ্ডল

বি.এ. প্রোগ্রাম, তৃতীয় বর্ষ

শরৎকালে নীল আকাশে
সাদা মেঘের ভেলা ভাসে
শিউলি ফুলের গন্ধে ভরে প্রাণ,
কাশফুলেরা হাওয়ায় মাতে
মন ভরে যায় আনন্দেতে
বাউল বাজায় একতারাতে
আগমনীর গান।
একটি বছর পরে দুর্গা
আসেন বাপের বাড়ি,
খোকাখুকুর সঙ্গে তখন
পড়াশুনার আড়ি।
বিভেদ ভুলে সবাই মিলে
খুশীর নেশায় মাতি
দনুজ দলনী মায়ের পায়ে
জানাই সবে নতি।

শূন্য

প্রিয়াঙ্কা শর্মা

বি.এ. প্রোগ্রাম, তৃতীয় বর্ষ

বছর আসে, বছর যায়।
 বিগত বছরের প্রতিবারই পোস্টমর্টেম হয়
 মিডিয়ায় বাজার গনগনে হয়ে ওঠে—
 চুলচেরা বিশ্লেষণ হয়।
 সমালোচকদের তীক্ষ্ণ বাদ প্রতিবাদ।
 বিষয়বস্তুগুলি কিন্তু সেই একই।
 গতানুগতিক ধারায় যা হয়ে আসছে প্রতিবছর।
 করোনা আর ডেঙ্গুতে কত লোক মারা গেল।
 কেন মারা গেল?
 পর্যাপ্ত ব্যবস্থা কি ছিল না?
 না নিষ্পৃহতা?
 নিষ্পৃহতাই কি কারণ রোগের উৎপত্তির!
 হতে পারে, নাও হতে পারে।
 সঠিক উত্তর দেওয়ার কেউ নেই!
 প্রতি বছর বর্ষায় রাস্তার বেহাল অবস্থা
 গন্তব্যস্থানে পৌঁছানো বা বাড়ি ফেরার
 এক কষ্টদায়ক অভিজ্ঞতা
 কে দায়ী?
 উত্তর দেওয়ার কেউ নেই!
 আড়তে চাল গম পচছে
 খেতে না পেয়ে লোক মরছে
 আইনের ব্যবস্থায় হচ্ছে কি?
 কে জানে হতেও পারে, নাও হতে পারে।
 কেন গ্রামের বেশিরভাগ লোক
 আর শহরে অর্ধশতাংশ লোক নূন্যতম খাবারটুকুও পায় না?
 কেন দেশের বেশিরভাগ শিশুই অপুষ্টিতায় ভোগে?
 যারা মরে কেন মরে?
 আর যারা বেঁচে আছে কি করে বেঁচে আছে?

কি অবস্থায় বেঁচে আছে?
 মাথার ওপর ছাদ নেই —
 অসুখ হলে চিকিৎসা নেই —
 কাপড় আছে, কিন্তু লজ্জা ঢাকার আগল নেই!
 পানীয় জল নেই।
 কি নিদারুণ দেশের চেহারা?
 চামড়ায় ঢাকা হাড়ের খাঁচা
 এবছর চলে যাবে — আবার নতুন বছর আসবে
 স্নেহ অন্ধকার, সেই হাহাকার
 আবার বিশ্লেষণ হবে — সমীক্ষা হবে
 দুর্গন্ধময় পচা লাশটার আবার পোস্টমর্টেম হবে!

করোনার কারিকুরি

সোনালী মণ্ডল

বি.এ. প্রোগ্রাম, তৃতীয় বর্ষ

বিশ্বস্বাস্থ্য সংস্থা (WHO) করোনা ভাইরাসকে মহামারী ঘোষণা করে দিয়েছেন। করোনা ভাইরাস অনেক অনেক ছোটো কিন্তু খুবই শক্তিশালী। এই ভাইরাসের আকার মানুষের চুলের থেকেও ছোটো হয়। কিন্তু করোনা সংক্রমণ পুরো পৃথিবীতে দ্রুত ভাবে ছড়াচ্ছে।

করোনা ভাইরাসের সম্পর্ক ভাইরাসের এমন পরিবার থেকে হচ্ছে যে যার সংক্রমণে জ্বর থেকে নিয়ে শ্বাস নেওয়ার সমস্যা হতে পারে। এই ভাইরাস এর আগে কখনো দেখা যায় নি। এই ভাইরাসের সংক্রমণ চীনের যুহান শহরে শুরু হয়েছিল। বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থার অনুসারে জ্বর, কাশি ও শ্বাসের কষ্ট হল ভাইরাসের লক্ষণ। এখন ভাইরাসটি থামানোর জন্য ভ্যাকসিন এসে গেছে। এই সংক্রমণের কারণে জ্বর, শ্বাস নেওয়ার কষ্ট, নাক থেকে জল পড়া এবং গলা ব্যাথা বিভিন্ন সমস্যা উৎপন্ন হয়। এই ভাইরাস এক ব্যক্তি থেকে দ্বিতীয় ব্যক্তির মধ্যে ছড়িয়ে পড়ে। যে কারণে এটি খুব গুরুত্ব সহকারে নেওয়া হচ্ছে। করোনার সাথে সাদৃশ্যযুক্ত ভাইরাসটি কাশি এবং হাঁচি থেকে পড়া ফোঁটাগুলির মাধ্যমে ছড়িয়ে পড়ে। পৃথিবীর অন্যান্য দেশের মতো চীনে এখন আর করোনা ভাইরাস ছড়িয়ে পড়ছে না। কোভিড 19 নামের ভাইরাসটি এ পর্যন্ত ৭০টিরও বেশি দেশে ছড়িয়ে পড়েছে। করোনা সংক্রমণের ঝুঁকি বাড়ার কারণে সতর্কতা অবলম্বন করা দরকার যাতে এটি আগেই বন্ধ করা যায়।

এই রোগের লক্ষণগুলি কী কী ? - কোভিড 19 করোনা ভাইরাসের কারণে প্রথমে জ্বর হয়, এরপরে শুকনো কাশি হয় এবং এক সপ্তাহ পরে শ্বাস নিতে সমস্যা হয়। এই লক্ষণগুলি বলার অর্থ এই নয় যে আপনার করোনা হয়েছে। এই ভাইরাসে নিমোনিয়া, অতিরিক্ত শ্বাসকষ্ট, কিডনিতে ব্যর্থতার ফলে মৃত্যুও হতে পারে। বয়স্ক বা যাদের হাঁপানি, ডায়বেটিস বা হৃদরোগের সমস্যা রয়েছে তাদের ক্ষেত্রে এটা মারাত্মক হতে পারে। সর্দি এবং ফ্লু ভাইরাসের এইরকম লক্ষণ পাওয়া যায়।

করোনা সংক্রমণ হয়ে গেলে কী করবেন ?

১. প্রথমে যখন করোনার সংক্রমণ শুরু হয় তখন এই সংক্রমণের কোনো চিকিৎসা ছিল না। কিন্তু এই সময় করোনার চিকিৎসা শুরু হয়ে গেছে।
২. করোনা ভাইরাসের চিকিৎসার জন্য ভ্যাকসিন তৈরী করা হয়েছে।
৩. কোনো ব্যক্তির করোনা হলে দ্রুতভাবে হাসপাতালে নিয়ে ভ্যাকসিন লাগাতে হবে। তবে কিছুদিন পরে ওই মানুষটি সুস্থ হয়ে যেতে পারে।

প্রতিরোধমূলক ব্যবস্থা কী কী ?

১. স্বাস্থ্য মন্ত্রক করোনা ভাইরাস প্রতিরোধ নির্দেশিকা জারি করেছে।
২. এগুলির অনুসারে হাত সাবান দিয়ে ধুয়ে নেওয়া উচিত।
৩. অ্যালকোহল ভিত্তিক সলিউশন দ্বারা হাত ঘষা ও ব্যবহার করা যেতে পারে।
৪. রুমাল বা টিসু পেপার দিয়ে নাক এবং মুখটি ঢেকে রাখবেন বিশেষতঃ হাঁচির সময়।

৫. যাদের ঠান্ডা এবং ফ্লুর লক্ষণ রয়েছে তাদের থেকে দূরে থাকুন।
৬. ডিম এবং মাংস খাওয়া এড়িয়ে চলুন।
৭. বন্য প্রাণীর সংস্পর্শ এড়ান।

প্রত্যেককে মাস্ক পরতে হবে —

১. আপনি যদি সুস্থ থাকেন, তবে আপনাকেও মাস্ক পরতে হবে যাতে আপনি করোনা থেকে সুরক্ষিত থাকতে পারেন।
২. আপনি যদি করোনা ভাইরাসে আক্রান্ত কাউকে যত্ন নিচ্ছেন তবে আপনাকেও মাস্ক পরতে হবে।
৩. যে সব লোকের জ্বর, কফ এবং শ্বাস নিতে সমস্যা হয় তাদেরও মাস্ক পরা উচিত।
৪. যেসব লোকের জ্বর, কফ এবং শ্বাস নিতে সমস্যা হয় তাদেরকে মাস্ক পরা উচিত এবং অবিলম্বে ডাক্তারের কাছে যেতে হবে।

মাস্ক পরার পদ্ধতি —

১. মাস্কের সামনে হাত লাগানো উচিত নয়, যদি আপনার হাত লেগে যায় তখনই আপনার হাত ধুয়ে নেওয়া উচিত।
২. মাস্ক খোলার সময় মাস্কের ফিতা এবং প্লাস্টিক ধরে বার করা উচিত।
৩. মাস্ককে স্পর্শ করা উচিত নয়।
৪. মাস্ক প্রতিদিন পরিবর্তন করা উচিত।

করোনার ঝঁকি কমাবেন কীভাবে

১. করোনার সাথে সাদৃশ্যযুক্ত ভাইরাসগুলি কাশি এবং হাঁচি থেকে ফোঁটাগুলির মাধ্যমে ছড়িয়ে পড়ে।
২. নিজের হাত ভালভাবে পরিষ্কার করে নেওয়া উচিত।
৩. আপনি যখন কাশবেন এবং হাঁচি দেবেন তখন নিজের মুখটা ঢেকে নেবেন।
৪. করোনার সংক্রমণের বিস্তারকে প্রতিরোধ করুন।

কীভাবে করোনার সংক্রমণ ছড়াতে রোধ করবেন?

১. পাবলিক ট্রান্সপোর্টে যাতায়াত করবেন না যেমন বাস, ট্রেন, অটো বা ট্যাক্সিতে।
২. বাড়িতে অতিথিদের ডাকবেন না।
৩. ঘরের জিনিসপত্র অন্য কারোর কাছ থেকে অর্ডার করুন।
৪. অফিস স্কুল বা পাবলিক জায়গায় যাবেন না।
৫. আপনি যদি আরও বেশি লোকের সাথে থাকেন তবে সচেতন হন।
৬. নিয়মিত রান্নাঘর এবং বাথরুম পরিষ্কার করবেন।
৭. আপনি যদি কোনও সংক্রামিত ব্যক্তির সংস্পর্শে থাকেন তবে আপনাকে একা থাকার পরামর্শ দেওয়া যেতে পারে।

প্রায় ১৮ বছর আগে সার্স ভাইরাস দ্বারা একই ধরনের বিপজ্জনক ঘটনা ঘটেছিল। ২০০২-৩ সালে সারা পৃথিবীতে বহু লোক মারা গিয়েছিলেন। বিশ্বজুড়ে হাজার হাজার মানুষ এটির দ্বারা আক্রান্ত হয়েছিলেন। অর্থনৈতিক কর্মকাণ্ডেও এর প্রভাব পড়েছিল। করোনা ভাইরাস সম্পর্কে এখনও কোনো প্রমাণ পাওয়া যায়নি কি এই ভাইরাস পার্সেল, চিঠি বা খাবারের মাধ্যমে ছড়িয়ে পড়ে।

করোনা ভাইরাস খুব বেশি দিন শরীরের বাইরে বেঁচে থাকতে পারে না। করোনা ভাইরাসকে নিয়ে বিভিন্ন লোকের মধ্যে অস্বস্তি দেখা গেছিল। মেডিকেল মাস্ক এবং সেনিটাইজারের কম হয়ে গিয়েছিল কারণ লোক অতি দ্রুত গতিতে এগুলি সংগ্রহ করছিলেন।

ওয়ার্ল্ড হেলথ অর্গানাইজেশন, জনস্বাস্থ্য ইংল্যান্ড এবং জাতীয় স্বাস্থ্য পরিষেবা থেকে প্রাপ্ত তথ্যের ভিত্তিতে, আমরা আপনাকে করোনার ভাইরাসের প্রতিরোধের উপায় দিচ্ছি। বিমান-বন্দরে যাত্রীদের স্ক্রিনিং ব্যা ল্যাবটিতে লোকেদের পরীক্ষা করা হচ্ছে। করোনা ভাইরাস মোকাবিলায় সরকার বেশ কয়েকটি প্রস্তুতি নিয়েছে। এটি ছাড়াও কোনও কারণের গুজব থেকে নিজেকে রক্ষা করার জন্য বেশ কয়েকটি নির্দেশও জারি করা হয়েছে।

জলঙ্গীর তীরে

অনিকেত সাহা

বি.এ. প্রোগ্রাম, তৃতীয় বর্ষ

নদীর নাম জলঙ্গী। একটি মিষ্টি নাম। এই নদীকে ঘিরে আমার ছোটবেলার সোনালী দিনের অনেক স্মৃতি যা বহুকালের অতীত, মনের জানলায় মাঝে মাঝেই উঁকি দিয়ে যায়। জলঙ্গী নামটি সার্থকনাম। মুদু হাওয়ার তালে তালে ছোট ছোট ঢেউয়ের ছন্দের সঙ্গে এই নামটির যেন অনেক তালমিল আছে। কবি জীবনানন্দ দাশ তাঁর বিখ্যাত কবিতা ‘আবার আসিব ফিরে’-তে এই নদীর সৌন্দর্য কবিতার ছন্দে বেঁধে ফেলেছেনঃ—

‘আবার আসিব আমি বাংলার নদী মাঠ ক্ষেত ভালবেসে

জলঙ্গীর ঢেউয়ে ভেজা বাংলার সবুজ করণ ডাঙ্গায়।’

পারিবারিক সূত্রে আমি কৃষ্ণনগরের বাসিন্দা। আমাদের পৈতৃক বাড়ি প্রায় ১৫০ বছরের পুরনো — এই নদীর তীরে তার অবস্থান। নদীটি বাড়ি থেকে এতই কাছে যে বড় রকমের হপ-স্টেপ জাম্প মারলে নদীর জল ছোঁওয়া যায়। বাড়ির সামনেই বট, অশ্বখ এবং কদমগাছের এক বিরাট জোট। গাছের নীচে খুব পুরনো শিব মন্দির এবং চৈতন্যদেবের মন্দির। এককালে নিয়ম করে এই কদম তলার মন্দিরে বাংলার নানারকম পালাপার্বণ ও উৎসব জাঁকজমক করে পালিত হয়েছে। এই প্রসঙ্গে জানাই যে ‘পথের পাঁচালী’-তে হরিহরের এই মন্দিরে এসে হরিসংকীর্তন করার উল্লেখ আছে।

আমার সাঁতার শেখার হাতেখড়ি স্বাভাবিকভাবেই পাঁচবছর বয়সে শুরু হয় এই জলঙ্গী নদীতে। পাকা পোক্ত সাঁতার হওয়ার পরে স্কুল জীবনের মেয়াদ পর্যন্ত শরীর খারাপ ছাড়া এমন কোনও দিন মনে নেই যেদিন নদীতে সাঁতার কেটে স্নান করিনি। বাড়ির কড়া শাসনকে মাঝে মধ্যে বৃদ্ধাঙ্গুষ্ঠ দেখিয়ে এই নদীতে কিছু দূরপাল্লার সাঁতার প্রতিযোগিতাতে অংশগ্রহণ এবং পরে বাড়িতে লোকমারফৎ খবর পৌঁছে যাওয়ায়, শাসনের ভাবি পাল্লার চাপ সহ্য করার স্মৃতি এখন ধীরে ধীরে ক্ষীণ হয়ে যাচ্ছে। এই সঙ্গে চলত ছুটির দিনে সাঁতরে নদী পার করা এবং চাষীদের ক্ষেত থেকে চুরি করে মটরশুঁটি, সবুজ ছোলা, কুল খাওয়া। এই সময়ে শেখা সাঁতারের গ্রামীণ কলাকৌশল ভবিষ্যতে বৃহত্তর জীবনে নানাভাবে অনেক কাজে লেগেছে এবং উত্তরসূরীরা উপকৃত হয়েছে।

ছুটির দিনে খেয়ার নৌকো ছিল আমার এক বিরাট আকর্ষণ। পায়ে চলা সেতু না থাকায় নদী পারাপারের জন্য খেয়ার নৌকোই ছিল দুই পাড়ের লোকেদের একমাত্র ব্যবস্থা। মোটরের ব্যবহার তখনও শুরু হয়নি, খেয়ার নৌকো চলত যথাযথ হালের ব্যবহারে এবং সঙ্গে সঙ্গে বাঁশের লগি (লম্বা বড়সড় বাঁশ)কে হাতের সাহায্যে নদীর তলের মাটিতে চাপ দিয়ে গম্বুয়ের পথে চালনা করা। মনে আছে বিহার থেকে আসা ‘রামদেও’ নাম; মাঝি হিসাবে নৌকো চালানোর কাজ করত। আমার নৌকো চালানোর হাতেখড়ি এই রামদেও মাঝির কাছে। খেয়ার নৌকো সারাদিনে প্রায় সময়ই ভরে থাকত নানা প্রকার গ্রামের লোকেদের নিয়ে, যারা চলেছে শহরের দিকে বেচাকেনার পসরা নিয়ে। আবার বেচাকেনা সেরে সওদা করে শহর থেকে গ্রামের দিকে ফেরার ভীড় লাগতো দিনের শেষ ভাগে।

রামদেও’র কাছে প্রাথমিকভাবে কিছুদিন নৌকাচালানোর তালিম নেওয়ার পরে যখন হাল ধরার কলাকৌশল কিছুটা আয়ত্তে এসেছিল, তখন গরমের ছুটির দিনগুলোতে আমাকে দেখলেই ‘এই যে খোকাবাবু আসুন, হালটা ধরুন’ বলে রামদেও

এর সঙ্গে একটা সখ্য গড়ে উঠেছিল। আরও মনে পড়ে, বর্ষাকালে যখন নদী উঠত ফুলে ফেঁপে এবং স্রোত প্রখর হয়ে তখন কিন্তু সাহস করে কোনও দিন খেয়ার নৌকো চালানোর হিম্মত হয়নি। রামদেও মাঝি ছিল সুঠাম চেহারার এবং সুস্বাস্থ্যের অধিকারী। সারাদিনের পরিশ্রমের পরেও ওর চেহারায় ক্লান্তির ছাপ খুব কমই দেখা যেত। খেয়াঘাটের পাশে নোনাধরা দেওয়ালের ইঁট বার করা একটা ছোট ঘরে রামদেও থাকত তার দেশোয়ালী ভাইদের নিয়ে একসঙ্গে।

দিন অবসানে রাত্রির অন্ধকারের সঙ্গে সঙ্গে যখন নিস্তব্ধতা নেমে আসত নদীর পারে, তখন রামদেও এর ঘর থেকে ভেসে আসত খোলকরতাল বাজিয়ে বিহারী সুরের গান। রামদেও-এর রোজকার এই কীর্তন শুরুরাতের ক্ষণটি আমাদের বাড়িতে সাম্রাজ্যকালীন সময়সূচি মাপের একটা প্রাত্যহিক অঙ্গ হয়ে গিয়েছিল। এক সময়ে খবর পেয়েছিলাম রামদেও মাঝিকে আর খেয়াঘাটের চত্বরে দেখা যায় না। নদীর সঙ্গে সঙ্গে বিহারের রামদেও মাঝির কথাও স্মৃতিতে উজ্জ্বল হয়ে আছে।

এইসব দিনগুলিতে পশ্চিমবঙ্গে জলপথে ব্যবসা বাণিজ্য চলার রীতি অনেকটাই প্রচলিত ছিল। জলঙ্গী নদীতেও তার প্রতিফলন দেখতে পাই। পাটের মরশুমের ঠিক পরেই পাটের গাঁটারিভরা বড় বড় বজরা নৌকার আনাগোনা আমাদের এই নদীতে লেগেই থাকত। বেশ কয়েকটা এইরকম বজরা নৌকো জলপথে এসে আমাদের খেয়াঘাটের পাশে বিশেষ জায়গা করা ঘাটে নোঙ্গর ফেলত। সব নৌকোগুলোই থাকত পাটের গাঁটারীতে ঠাসা এবং সঙ্গে থাকত মালিক পাটচাষী এবং মাঝিমাল্লার দল। তাদের সকলের উদ্দেশ্য ছিল বেচা কেনা সেরে উপার্জিত অর্থ নিয়ে ঘরে ফেরা।

ব্যবসার খাতিরে চলত মহাজনদের আনাগোনা ও মাঝিমাল্লাদের সোরগোল। প্রত্যেক বছরই আমরা অধীর আগ্রহে, বজরাগুলির আগমনের অপেক্ষায় দিন গুনতাম। নদীতীরে যখন পাট চাষীদের সঙ্গে মহাজনদের ব্যবসার লেনদেনের কথাবার্তা চলত, তখন আমাদের ভীড় জমত বজরার উপরের ডেক ছাতে। নৌকাগুলির ডেক ছাত ছিল খুব খোলামেলা, বড়সড়। বাঁশের রেলিং দিয়ে ঘেরা এবং নদীর জল থেকে প্রায় ১২/১৪ ফুট উঁচুতে। নৌকার এই ছাতটিকে আমরা উঁচু ডাইভিং প্ল্যাটফর্ম হিসাবে ডাইভিং ও সমারসল্টের তালিম নেওয়ার জন্য ব্যবহার করতাম। প্রথমদিকে অনভিজ্ঞ ভাবে লাফলাফি করে জলে ঝাঁপ দেওয়া শুরু করেছিলাম। তবে কিছুদিন পর থেকে ভয়ের রেশটা কেটে গেলে নিজস্ব পন্থায় এবং অল্পবিস্তর অন্যের পরামর্শ নিয়ে ডাইভিং ও সমারসল্টের প্রক্রিয়াকে সংশোধন করতে করতে বেশ কিছুটা অভিজ্ঞ হয়ে উঠেছিলাম। প্রত্যেক বছর নিয়মিতভাবে এই কদিন চলত জলক্রীড়ার খেলা। মাঝিমাল্লারা আমাদের উৎপাতে প্রথমদিকে বিরক্তি প্রকাশ করলেও ধীরে ধীরে মানিয়ে নিয়েছিল এই সমস্ত ব্যাপারটাকেই। উত্তরজীবনে ছোটবেলার এই অভিজ্ঞতাকে আধুনিক সাজসরঞ্জামসহ সাঁতারের পুলে নিজস্বভাবে এবং অন্যদের মধ্যে বিতরণ করে অনেক আনন্দ লাভ করেছি।

বেচাকেনার শেষে বজরা নৌকাগুলিকে ফিরতে হত নদীর উজান ঠেলে। স্রোতের প্রতিকূলে নৌকা চালিয়ে নিয়ে যাওয়ার জন্য যে অতিরিক্ত শক্তির দরকার হত সেটা যোগান দিত মাঝিমাল্লাদের কয়েকজন দড়ি বাঁধা নৌকাকে গুণ টেনে পার ধরে এগিয়ে নিয়ে যাওয়ার মধ্য দিয়ে। আমি এইসব গুণটানা লোকেদের কষ্টটা অনুভব করেছি এবং দূর থেকেই দেখেছি, কিন্তু ইচ্ছা থাকলেও এদের সঙ্গে কথা বলার সুযোগ হয়নি। শুনেছি এরা এই সব জলকাদা ভেঙ্গে বন জঙ্গলের মধ্য দিয়ে যাওয়ার কষ্টটা কিছুটা হাসিমুখেই সহ্য করেছে শুধু উপার্জিত অর্থ বাড়ি ফিরে অপেক্ষারত প্রিয়জনদের হাতে তুলে দেওয়ার আশায়।

মৌসুমী পাখীর কথা আমাদের সকলেরই জানা, কিন্তু মৌসুমী মাছের কথা আমাদের অনেকের কাছেই অজানা। এই প্রসঙ্গে আমার একটি বিশেষ রকমের অভিজ্ঞতার কথা ও কাহিনী না বললে আমার জলঙ্গীর স্মৃতিচারণ অসম্পূর্ণই থেকে যাবে। আমাদের প্রত্যেকটি স্নানের ঘাটের একটি নাম মুখে মুখে প্রচলিত ছিল — এমনই একটি ঘাটের নাম কুয়োর ঘাট। শোনা কথা (সত্যতা সম্বন্ধে সন্দিহান), কৃষ্ণগরের মহারাজা মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্র নদীতে একটি সেতু তৈরি করার কাজ শুরু করেছিলেন এবং তিনটি খুবই মজবুত ইঁটের তৈরি বড় আকারের সেতুর ভীত (পিলার) জলের মধ্যে বানিয়েছিলেন। সেতুর কাজটি অসম্পূর্ণ থেকে যাওয়ায় এই বিশাল তিনটি পিলার, নদীর জলের মধ্যেই থেকে যায় এবং কুয়ো নামে আখ্যা পায়। সেই সময়ে গরমকালে নদীর জল কমে গেলে এই কুয়োগুলির উপরিভাগ জলের উপরে কিছুটা বেরিয়ে থাকত। কিন্তু বর্ষাকালে নদী ফুলে

ফেঁপে উঠলে এই কুয়োগুলি নদীর জলের তলায় তলিয়ে যেত প্রকৃতির অদ্ভুত নিয়মে। প্রতি বছর বর্ষাকালে জল যখন ঘোলা হয়ে যেত বিশাল আকারের চিতল মাছের পরিবার এই কুয়োর গভীরে বাসা বাঁধত এবং স্বভাব সুলভভাবে ডিম ছাড়ত। ঘাটের জলে এই সময়ে বহুদূর পর্যন্ত তীব্র মাছের ডিমের গন্ধ ছড়িয়ে পড়ত। মাঝে মাঝে মাছের উপস্থিতির প্রত্যক্ষ প্রমাণ পাওয়া যেত যখন হঠাৎ করে চকচকে রূপোলী শরীরের এক বালক দেখতে পাওয়া অনেকটা ধৈর্য্য এবং কিছুটা ভাগ্যের ব্যাপার ছিল তীরের উপরে দাঁড়িয়ে থাকা লোকেদের কাছে। অনুমানে মাছেদের দৈর্ঘ্য ছিল এক থেকে দেড় মিটার।

আমাদের এক শ্রদ্ধেয় প্রতিবেশী মাস্টারমশাই (নাম অনুদ্ধৃত) তাঁর শিক্ষকতার পাশাপাশি এক বিরাট শখ ও অনুরাগ পোষণ করতেন এই বিরাট চিতলমাছের মৎস্য শিকারে।

মাস্টারমশাই তাঁর সহযোগীসহ তাঁর ছোট ডিঙ্গি নৌকাটিকে এই কুয়োর কাছে নোঙর করতেন এবং তাঁর নিজস্ব প্রক্রিয়াতে তৈরি করা বিশেষ বঁড়শি মাছ ধরার ছিপটিতে টোপ লাগিয়ে মাছের এই বাসাতে টোপ ফেলতেন। এরপরে চলত ঘন্টার পর ঘন্টা ধরে ধৈর্যের পরীক্ষা।

মনে পড়ে একদিন শুভক্ষণে পাড়ায় খবর রটে গেল মাস্টারমশাই এর ছিপের বঁড়শিতে মাছ ফেঁসেছে। নদীর পারে লোকেদের ভীড় লেগে গেল এবং পরের এক ঘন্টা ধরে মানুষের এবং মাছের মধ্যে চলল যুদ্ধ। মাস্টারমশাই এই বিশাল মাছের শক্তির সঙ্গে পাল্লা দিয়ে ডিঙ্গি নৌকা খুলে মাছের টানের সঙ্গে তাল রেখে মাছটিকে খেলাতে থাকলেন এক ঘন্টা ধরে। নৌকা চালানোর কৌশলটি এমনই সূক্ষ্ম ছিল যে মাছটি কখনই পুরোপরিভাবে ছিপের সুতোতে টান দিতে পারেনি। এই লড়াইয়ে মাস্টারমশাই অবশেষে জয়ী হলেন এবং এক বিশেষ রকমের লম্বা লাঠির সঙ্গে লাগানো আঁরশি দেওয়া জালে নিস্তেজ ঝিমিয়ে পড়া মাছটিকে আবদ্ধ করে টানতে চানতে নিয়ে আসলেন নদীর তীরে। রূপালী মাছটি দৈর্ঘ্যে এক মিটারের একটু বেশি ছিল। নদীতীরে নৌকা থেকে নেমে মাস্টারমশাই মাছটাকে ডাঙ্গাতে টেনে তুলে সকলকে একটা কুর্নিশ করলেন। সেদিনের নদীতীরের এই এক অভাবনীয় দৃশ্য ও ঘটনা এখনও স্মৃতিতে উজ্জ্বল হয়ে আছে - হয়তো কোনদিনই স্মরণ হবে না। সেইসব দিনগুলির পরে অনেক বছর কেটে গেছে। এখনও যখন মাঝে মাঝে এই নদীর ধারে যাই, দেখি পরিবর্তনের ঢেউয়ে নদীর দুই পাড় নতুনভাবে সেজেছে। ভালমন্দের বিচার না করে অনেকক্ষণ ধরে নদীর ওপারের দিকে নির্বাক হয়ে তাকিয়ে থাকি আর মনে মনে আউড়িয়ে যাই 'স্মৃতিটুকু থাক'।

স্বাগত বৈশাখ

অভিজিৎ দাস

বি.এ. প্রোগ্রাম, দ্বিতীয় বর্ষ

পুরনো বছর চলে গেল ঐ
নিয়ে স্মৃতি কত কত।
কিছু আনন্দ কিছু সুখ তার
কিছু দুখভাবে নত।।
আশা নিয়ে এসো নূতন বছর
যেন সুন্দর ফুলে বাঁধা তোড়া
যেন এক বাঁক ডানা মেলা পাখী
মুক্তির নিঃশ্বাস ওড়া।।
আসে বৈশাখ প্রচণ্ড তাপে
মানুষেরা হাঁসফাঁস
তবুও আনন্দ যদি ভাবি মনে
এ যে কবির জন্ম মাস।
রাশি রাশি বেলফুল
রজনীগন্ধার ঝাড় —
রবীন্দ্র সংগীত আর বৈশাখ
মিলে মিশে একাকার।
নতুন বছরে থাক না বেড়ানো
দেশ দেখা আর তীর্থ
সবাই মিলে নিই এ শপথ
জয় করি আজ চিন্ত।
নববর্ষের পুণ্য লগ্নে
আহ্বান করি সবারে
ভালবাসায় ভরিয়ে দিই
বাঁধি প্রীতি বাহুডোরে।

বৃত্তের বাইরে

প্রিয়াঙ্কা সাহু

বি.এ. প্রোগ্রাম, তৃতীয় বর্ষ

আলো আঁধারীতে শুয়ে আছে নারী এক লাশকাটা ঘরে
একটা বিশ্রী হিমেল হাওয়া যেন বলছে
সেখানে দয়া মায়া স্নেহ প্রেম বিশ্বাস ভালবাসা নেই
কারণ জীবনের সব স্পন্দনই যেন সেখানে রুদ্ধ হয়ে গেছে

তবে অতিরিক্ত মদ গিলে সমস্ত ঘেন্নাপিত্তির উর্দ্ধে গিয়ে
যে মুর্দাফরাসটা দেহটাকে কাটা ছেঁড়া করে
নিছক একটা লাশ ভেবে, সে কিন্তু নিজের ডিউটি ঠিকঠাক দেয়।
কিন্তু অধিক রাতে স্ত্রীর সঙ্গে যখন নোংরা বিছানায়
উন্মত্তে আদরে সোহাগে মিলিত হয় সে
তখন সেখানে আশা থাকে, আশ্বাস থাকে, আর থাকে জীবনের উত্তাপ।
যে উত্তাপে রেঙে ওঠে এক অনাগত ভবিষ্যৎ
এগিয়ে চলে আরও ভবিষ্যতের দিকে
মৃত্যু থেকে অনেক অনেক দূরে,
অন্য এক জীবনের সন্ধানে।

প্রত্যয়

অর্পিতা দাস

বি.এ. প্রোগ্রাম, তৃতীয় বর্ষ

আমি অমাবস্যার মধ্যে কালোকে খুঁজতে বেরিয়ে,
হারিয়ে গেছি তোমার কালো এলো কেশে।
আমি সবুজকে খুঁজতে গিয়েছিলাম গাছের পাতায়,
অবশেষে ফিরে এসেছি তোমার নিটোল সবুজ যৌবনে।
আমি ভেবেছি লালকে নিশ্চয়ই পেয়ে যাব —
রক্তের অনেক, অনেক গভীরে।
অবশেষে লালের দেখা মিলেছে তোমার রক্তিম অধরে।
নীল কোথায় নীল! এযে সুদূর অসীম!
নীল স্তব্ধ হয়ে আছে তোমার নীল চোখের তারায়
সাদাকে অনেক খোঁজাখুঁজি করেও পাইনি
জানি তাকে অবশ্যই পেয়ে যাব জীবনের অন্তিম লগ্নে।

देश 2020–21

सिंधी विभाग

संपादक : डॉ. नीलम बोरवांकर

छात्रा-संपादिका : रिया खुशलानी

विषय सूची

- | | | |
|----|-----------------------------------|---|
| 1. | “राष्ट्र-गीतु” जो सिंधी तर्जुमो | 1 |
| 2. | “सिंधी” में राष्ट्र गीत जी समझाणी | 1 |
| 3. | बहसु | 1 |

डॉ. नीलम बोरवण्कर
टसोसीएट प्रोफेसर
डिपार्टमेंट ऑफ पोलिटिकल साइंस

“राष्ट्र-गीतु” जो सिंधी तर्जुमो

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता ।
पंजाब -सिंध- गुजरात मराठा-
द्राविड़ -उत्कल -बंगा,
विंध- हिमाचल- यमुना- गंगा,
उच्छल, जलधि तरंग ।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष मांगे
गाये तव जय गाथा ।
जन गण-मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय हे, जय हे, जय जय हे ।

“सिंधी” में राष्ट्र गीत जी समझाणी

तूं सभिनी माण्हुनि जे मनु ते राजु कंदडु आहीं, हे भारत जा भाग्य विधाता, तुंहिंजी जय आहे। तुंहिंजो नालो पंजाब, सिंधु, गुजरात, महाराष्ट्र, द्राविड भूमी उत्कल ऐं बंग देशनि में गूंजे थो; उनजो नालो विंध्य ऐं हिमाचल जे पहाड़न में गूंजे थो; जमुना, गंगा ऐं महासागर जूं ऊंचियूं लहरूं तुंहिंजी जयकार जा गीत गाइनि थियूं। इहे सभु तुंहिंजो आशीर्वाद हासिलु करणु लाइ प्रार्थना कनि था ऐं तुंहिंजी प्रशंसा जा गीतु गाइनि था।

तूं सभिनी माण्हुनि खे सुख कल्याणु डींदड़ आहीं, हे भारत जे भाग्य विधाता, तुंहिंजी सदाई जय थिए, जय थिए, जय थिए।

बहसु

आखाणी – डॉ. विक्रम सिंह

तर्जुमो – डॉ. नीलम बोरवण्कर

सजे गोठ में साधूरामु हिकिड़ी अहिड़ी शखिसयत वारो विरलो शख्सु मजियो वेंदो हुआ, जेको नईऊं नईऊं गाल्हियूं सोचणु में माहिरु हुआ। हिन दफे हुन पंहिंजे मगजु में हिक नई योजिना जो खाको तैयार कयो जंहिं जे हिसाब सां गोठ जे बागीचे में डह माण्हुनि जी मजिलस लगी रहे ऐं चिलम बि न विसामें। हिन वीचारु खे साधूअ गोठ जे अलगि अलगि जाति जे माण्हुनि जी विचु रखियो। बाग जे विचो विचु हिकिड़ो तलाउ खोटियो वजे, गड इहो बि चयो वियो त जेकडहिं को बि शख्सु हिन कम लाइ मदद डियणु लाइ तैयार नथो थिए त बि चंदो घुरी बि हिन कम खे पूरो कयो वेंदो।

हीअ गालिह बुधंदे ई गोठ में सुसपुस शुरु थी वेई। नफे नुकसानु जो जाइजो वरितो वियो। पंडितनि राइ डिनी हीउ हिक डाडो सुठो ख्यालु आहे। हिन काज सां गोठ जे

रहाकुन जी भलाई थींदी। सभिनी खां वधीक वडी गालिह हीअ आहे त हिन कम सां सभनिन खे पुज मिलंदो।

पर 'दुसाधनन' ताकीद कई त हिन मनसूबे सां किसाननि ऐं चरवाहन खे को बि फ़ाइदो हासिलु नाहे, ही हिकिडो बेकारु जो मनसूबो आहे छो जो खेतनि खे जोतण वारा हिन तलाउ जे पाणीअ खे पंहिंजे फ़ाइदे लाइ इस्तेमाल कंदा ऐं खेतनि में पाणी डींदा रहंदो। असांखे त हुन तलाउ जे पाणीअ सां स्नानु करणु जी बि इजाजत न मिलंदी, न ई असीं हुन में मछी पकड़ी सघंदासीं। गोठ जो बाबु हिन तलाउ मां मछियूं पकड़ी विकिणंदो ऐं सजो मुनाफ़ो फ़बाए वेंदो।

सलाह कई वई त हर गोठाई जे घर जे बाहिर हिकु –हिक नंदो खूअ खोटियो वजे। वापारियुनि राइ डिनी त तलाउ खोटियो वजे त बि ठीकु न ठही तडहिं बि कोई फ़र्कु नथो पए।

उन्हीअ वीचारु खे गोठ जे वैजु नकारे छडियो। वैजु जे वीचारु सां तलाउ जो पाणी गंदो थींदो रहंदो। इन में मछरु पैदा थींदा रहंदो, जंहिं सां घणियूं बीमारियूं थियणु जो डपु

आहे। हुन बीमारियुनि जी त मूं वटि दवा बि कोन्हे। हुन पाणीअ सां गोठ जा रहवासी बीमारु पई सघनि था।

हीअ राइ बुधी सभनिन जी अखियूं खुलजी वयूं त हिन सौदे में फ़ाइदो घटि ऐं नुक़सानु वधीक आहे। हीअ गाल्हि बुधंदे ई कुञ्जु वक्त लाइ साधूरामु जे खूअ खोटणु जी ताकीद मुंतकिल थी वेई।

छात्र संपादक



मधुवन प्रताप (हिंदी)



शान कुमार (अंग्रेजी)



प्रजापतिद्रा (संस्कृत)



शाजिया तौफीक (पंजाबी)



अनिकेत साहा (बंगाली)



रिया खुशलानी (सिंधी)



DESHBANDHU COLLEGE (UNIVERSITY OF DELHI)

Kalkaji Main Rd, Block H, Kalkaji,
New Delhi, Delhi 110019

A NACC Grade B++ Accredited Institution
NIRF 2021 Rank 16 in Colleges Category



CONTACT INFO:

Phone : 011- 26439565,011-26235542

Anti-Ragging : +91-9818385270

E-mail : dbcollege.du@gmail.com

WEBSITE

Website: www.deshbandhucollege.ac.in

Facebook : www.facebook.com/deshbandhucollege

Twitter : www.twitter.com/deshbandhucollege